क़ब्र की पहली रात

सूफी मुहम्मद इस्माईल

क़ब्र की पहली रात

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

क़ब्र की पहली रात

लेखक :

सूफ़ी मोहम्मद इस्माईल साहब

ISBN 81-7231-064-1

प्रथम संस्करण : 1989

पुनः प्रकाशन : 2012

प्रकाशक :

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

2872-74, कूचा चेलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

फोन : 011-23253514, 23269050, 23286551

फैक्स : 011-23277913 | **Email:** islamic@eth.net

Website: www.islamicbookservice.co

Our Associates

- Al-Munna Book Shop Ltd. **(U.A.E.)**
  (Sharjah) ***Tel.:*** 06-561-5483, 06-561-4650
  (Dubai) ***Tel.:*** 04-352-9294
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
  Tel.: 020-8911-9797
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarta (Indonesia)**
  Tel.: 0062-21-35-23456
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**
  Tel.: 040-6680-6285

Printed in India

विषय सूची

अर्ज़ें नाशिर

क़ब्र की पहली रात

"क़ब्र की पहली रात" दर्दे दिल रखने वाले सूफ़ी-ए-बासफ़ा, आलिमे बाअमल, सालिके सिखासिलााए आलिया मुजददया सूफ़ी मोहम्मद इस्माईल साबिक़ इमाम, मस्जिदे शाही मालियर कोटला (इण्डिया) की तालीफ़ है। आप ने निहायत ही खुलूस और नेक जज़्जबात के साथ फ़िक्रे आख़िरत की तरफ तमाम मुसलमानों की तवज्जह दिलाई है। किताब क्या है नसीहतों का एक दफ़तर है। हिकायातो वाक़ियात का एक मोअस्सर ज़ख़ीरा है जिस में आपने क़ुरानी आयात, अहदीसे रसूल, अहवाले सहाबा-ए-कराम और अक़वाले बुजुर्गानि दीन के ज़रिये फिक्रे अक़बा का सबक़ दिया है। अक़वाले ज़र्रीन का यह मजमुआ कई बार इदारा-ए-शाने इस्लाम की तरफ़ से तबा हो कर क़बूलियते आम हासिल कर चुका है। अल्लाह करीम हुज़ूर नबी करीम सल अल्लाह अलैह व सल्लम के

सदके में मो आल्लिफ़ को अजर-ए-जजील और सब मुसल्मानों को अमले समीम की तौफ़ीक़ बख़्शे आमीन ।

अर्ज़ और गर्ज़

भाइयों यह किताब क़ब्र की पहली रात जो अथक मेहनत के बाद आपकी ख़िदमत में पेश की गई है अब आपके हाथों में है । इसका अर्ज़े हाल लिखने की चन्दा जरूरत नहीं बल्कि यह पूरी किताब ही अर्ज़े हाल पर मुश्तमल है जिसके लिखने और छापने की गर्ज़ सिर्फ़ आपकी ख़िदमत खैररबाही और हमदर्दी है । जिसका शाहिद और गवाह खुदा काफ़ी है । न कि दुनिया कमाने और खाने के लिए इसे लिखा और छापा गया । अल्लाहपाक ऐसे पासिद ख्याल और बुरी नियत से महफूज रखे । आमिन इसे सिर्फ़ अपने निजाद और इसाले सवाब और आपकी भलाई और खैरख्वाही समझकर लिखा है । लिहाज़ा मेरे दोस्तों दुनिया की नेमतों के नशे में पड़कर धोखे में न पड़ो । उम्र खत्म होती जा रही है और यह सब

नेमतें ख़त्म हो जाऐंगी । जब तुम को जनाज़ा लेकर क़ब्रिस्तान जाओ तो यह सोचते रहा करो कि हमारा भी एक दिन इसी तरह जनाज़ा उठाया जाएगा बस आपसे यही अर्ज़ है गर्ज़ है कि इसमें जो कुछ भी दर्ज़ है उसको गौर से पढ़िए और फिर अमल कीजिए और इस आजिज । को भी अपनी दुआओं में याद रखना ।

ख़ादिम मोहम्मद इस्माईल,
इमाम मस्जिदे शाही, मालियर कोटला ।

जी उलहिज, १३९० हिजरी।

अपनी मौत की याद में दुनियाए फ़ानी से सफ़रे आख़िरत की पहली मंज़िल

क़ब्र की पहली रात या आख़िरत का दरवाज़ा

शेरः—कहाँ सुलेमां, कहाँ सिकन्दर, कहाँ है जम और कहाँ है दारा ।
यह सबके सब थे ख़ाक के पुतले बिगाड़ डाले बना-बना कर ॥
मुसाफ़िराने राहे अदम को यह कैसी नींद आ गई इलाही ।
कि जबकि सोए न फिर से चौंके, थके हम उनको जगा-जगाकर ॥

क़ब्र की रात की पुकारः—

मुझे ज़रूर पढ़ते जाना ।

आप तन्हाई में बैठकर कम से कम एक मरतबा अव्वल से आख़िर तक जरूर पढ़िए । मेरे पेश आने

से पहले ज़रूर वाक़िफ़ हो जाइये ।

मैं वह रात हूँ जो हर एक को पेश आती हूँ और अनक़रीब तुम सबको पेश आकर रहूंगी.....और मैंने तुमको अपने आने की इतला से बाख़बर कर दिया है । मैं ख़ाक़ के नीचे सख़्त अंधेरी रात हूं । फिर मेरे अन्दर आकर यूं न कहना कि मुझे मालूम न था हाय मैं भूल गया हाय मेरी तौबा ।

याद रखो फिर इस चीख़ने, चिल्लाने और रोने धोने से कुछ काम न चलेगा । बल्कि तुझे सख़्त अज़ाब और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा अगर रोशनी चाहता है तो चिराग लेकर आना और याद रखना वह चिराग जलता है । पांच वक्ता नमाज़ तहुज्जुद की नमाज़, क़ुराने मजीद की तलावत, आमाले सालेहा, अल्लाह ताला और उसके रसूल की पूरी-पूरी फ़रमांबरदारी और अपने नफ़स की मुख़ालिफ़त करने से ।

शेर–कि ज़मीं के नीचे जाने की फ़िक्र ।
ऊंचे-ऊंचे जो तू बनाए महल ॥
रोशनीए क़ब्र का सामान कर ।
काम जो करने हैं कर ले आज कल ॥

साहिबे क़ब्र की पुकार:–

शेर–आए थे चमन में तेरे सैरे गुलशन कर चले ।
संभाल माली बाग़ अपना हम तो अपने घर चले ॥
ओह राह जाने वाले कुछ पढ़ के बख़्स जाना ।
अगर हो ख़्याल तुमको इस मेरी बेकसी का ॥
हो कभी जिसका गुज़र इस बस्तीए खामोश से ।
मेरी क़ब्र पर भी आके पढ़ जाए फ़ातिहा ॥
फ़ीसबील अल्लाह करम इतना तो करते जाइये
फातेहो नाचीज की तुरबत पे पढ़ते जाइये ॥
फातेहा मरकदे वीरां पे भी पढ़ते जाइये ।
कह दो कि जो हैं इस राह से गुज़रने वाले ।
फ़ातेहा तुरबत में मेरी पढ़ते जाये ॥
मेरे मोहसिन जो हैं इस राह से गुज़रने वाले ।

क़ब्र की पुकार:–

हुज़ूर नबी अकरम सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र पर कोई ऐसा दिन नहीं गुज़रता जिस दिन वह यह एलान नहीं करती कि ऐ आदम के बेटे ! तू मुझे भूल गया ।

मैं तनहाई का घर हूं । मैं वहशत का घर हूं । मैं तंगी का घर हूं । कीड़ो का घर हूं ।

आपने ने इरशाद फ़रमाया :–

जब मुर्दे को क़ब्र में दफ़न करते हैं तो क़ब्र से यह आवाज आती है कि ऐ शख़्स ! तू कितना ग़ाफ़िल और बे फ़िक्र था कि तू मेरे सीने को सारी उम्र बड़ी बेदर्दी से रौंदता रहा हालांकि तू जानता था कि तेरी आखिरी मंज़िल मैं हूं। मेरे अन्दर कीड़ों ही पनाह गाहे हैं। मैं रंजो तकलीफ़ की जगह हूं। मैं वह हैबतनाक जगह और मुक़ाम हूं कि जहां सिर्फ़ अन्धेरा ही अन्धेरा है लेकिन अफ़सोस कि तूने कभी न सोचा । और याद रखो ।

क़ब्र कहती है कि मैं इन मरने वालों के कफ़न फाड देती हूं। बदन के टुकड़े-२ कर देती हूं और आदमी के जोड़-जोड़ जुदा कर देती हूं।

हम भूल गये:–

अपनी बदआमालियों की वजह से हम अपनी असल को, आख़िरी मंज़िल को भूल गये। हम अपने खालिको मालिक को भूल गये। हम अपने दुनिया में आने का मक़सद भूल गये ।

हम अपनी मौतो कब्र को भूल गये ।

हम अपने ऊपर निज़ा व जोकनी के आने वाले

वाकियात को भूल गये।

हम क़ब्र में मुनाकिरों नकीर के सवालात और वहाँ की बेबसी और कब्र की तंगी व तारीफी को भूल गये। हम पुले सिरात पर से गुज़रने को भूल गये। हम दोज़ख के अज़ाब का खौफ़ो ख़तर भूल गये।

हम अपने खुदा ताला की हजूरी में खड़ा होने और अपनी पेशी को भूल गए।

हम आख़िरत और वहाँ के हिसाबो-किताब को भूल गए। हद यह है कि हम अपनी दुनिया और दुनिया के मालो-ख्याल और कारोबार के इलावा सभी कुछ भूल गए।

हम दुनिया की और माल जमा करने की दलदल में फँस गए और दुनिया हमारी तबियत और रगरग में रच-बस गई है। यही बजह है कि दुनिया हमारी आबाद और हमारी आख़िरत बरबाद इसलिए हमको अब आबादी से वीराने और उजड़े हुए में जाना पसन्द नहीं और मौत से हमको नफ़रत है। इसलिए कि वहाँ जाने के लिए हमने कोई तैयारी नहीं की।

याद रखिए !

मौत और क़ब्र से डरता है। अल्लाह-ताला को

हरनाफ़मानी करने वाला क्योंकि अल्लाह से मिलना उसे पसन्द नहीं होता ।

नसीहते अंजाम:-

ऐ वो शख़्स जो रंग-रंगीनियों और ऐशो-इशरत में पड़ा हुआ खुदा की याद और अपने आख़िरी अंजाम से ग़ाफ़िल है ।

कभी अपने अज़ीज़ों आकारिब, रिश्तेदार और दोस्त यार की मौत का नक्शा याद करके सोच कि वह किस तरह मरे और फ़िर किस तरह उनके जनाज़े को चारपाई पर ले जाकर मिट्टी के नीचे दबा दिया गया । जो कल बड़ी शानो-शौकत और बन संवरकर कोठियो और महल चोबारों में रहा करते थे हाय तुमने उन पर कुछ भी तरस न खाया और तुमको ज़रा रहम न आया । जो कल तुम्हारे ऊपर जान देते और जी-जान खोते थे तुमने उन पर अपने हाथों मिट्टी डाल दी । अब मिट्टी ने उनकी शक्लो-सूरत का क्या हाल कर दिया होगा । उनके बदन को टुकडे-२ और अलग कर दिया होगा । किस तरह से वह अपने बीवी बच्चों को यतीम, अपने बहन-भाइयों और रिश्तेदारों को रोता हुआ छोड़कर चले गए । उनका माल उनके तरह-२ के कपड़े और उनका सब सामान यहीं पड़ा और

धरा रह गया। हाय उनके साथ कुछ न गया। और उनके वारिसों ने उनका साथ छोड़ा। मरते ही उनके सब कपड़े उतार लिए गए। उनकी घड़ी और उनकी अंगूठी तक उतार ली गई। उनके सब ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा कर लिया गया। उनको बिलकुल बरहना और नंगा करके क़फ़न में लपेटकर दूर वीरान जंगल में ले जाकर सैकड़ों मन मिट्टी के नीचे दबा दिया और आज़ तक फिर उनकी किसी ने ख़बर तक न ली कि कौन था और क्या हुआ या हमारा उसके साथ क्या वास्ता था।

याद रख भूले हुए और ग़फ़लत भरे ! यही हश्र एक दिन अनक़रीब या देर से तेरा भी होने वाला है। यह नख़वतो तकुब्बुर और तेरा करेफ़िर सब खाक़ में मिल जाएगा। तेरी क़ब्र पर फ़िर कोई न आएगा। जमीन में दबा पड़ा होगा फ़िर न उठ सकेगा। तेरी क़ब्र पर घास और झाड़ होंगे और तुझ पर जानवर चरते फिरेंगे। कैसे-२ ख़बीस लोग तेरी कब्र पर से होकर गुज़रेंगे। बाज़ पैदल होंगे और बाज़ बदबख़्त साइकिल पर से ही न उतरेंगे और बाज़ बदतरीन पेशाब तक करने से गुरेज न करेंगे। ओ बड़ी ठाठ वाले तसावीर और फोटो के आशिक़ और यूरोपियन और कर्ज़न फैशन पसंद करने वाले और

बदबख़्त और बदकिस्मत दीने इस्लाम से नफ़रत करने और उस पर नुक्तचीनी करने वाले कहता है कि दीने इस्लाम पुराना हो चुका । ओ नज़ाकत के पुलते । जो नरम-नरम बिस्तरों पर पड़ा सारी-सारी रात मजे ले-२ कर सोता है । और खुदा की याद से उसकी पुक़ार से गा़फ़िल होता है ओ खाक़ के बिस्तर को भुला देने वाले अपनी गिरेबान में मुंह डाल के सोच कि जिनको तू आज जंगल में तन्हा छोड़कर मिट्टी के नीचे दबाकर आया है वो किस तरह से मंजलिसो में बैठकर कहकहे लगाते और हंसा करते थे । और दूसरों का मजाक़ उड़ाया करते थे । आज वो क़ब्रों में खामोश पड़े हैं । किस तरह दुनिया के लज्जतों आराम में मशगूल थे । आज मिट्टी में पड़े हैं । क्या उन्होंने मौत को भूला रखा था, आज उसका शिकार व लुकमा बन गए । किस तरह से शबाबो-जवानी के नशे में चूर और मग़रूर थे । हाय आज उनका कोई पूछने वाला नहीं है । कैसे दुनिया के धुंधों में हर वक्त मशगूल रहते थे । आह वह लो कि दिन-रात और सुबहो-शाम उनको चैनो-सुकुन और सब्र न था । आह आज हाथ अलग पड़ा है । पांव अलग पड़ा है । कान जिनको रेडियों और गाना सुनने से फुर्सत नहीं थी और खुदा की बात सुनने को तैयार

न थे, अलग-२ पड़े हैं आंखें जिनको टेलिविज़न और अपने माशूकों महबूब की तरफ़ देखने से फ़र्सत ही न मिलती थी आज बाहर निकली पड़ी है। जबान को कीड़े चिमट रहे हैं। जिसको पान खाने सिगरेट पीने, चुगली गिबत करने और गाने-बजाने के अलावा कोई काम ही न था आज कीड़ों ने खा-चाटकर क्या हाल कर दिया है। बदन में कीड़े पड़ गए जिसको बनाव-सिंगार और नहाने-धोने चमकाने और खुश्बुओं में बसाने और अपने आपको मोटा-ताजा साफ़ सुथरा करने के अलावा कुछ और अच्छा ही न लगता था। कैसा खिलखिलाकर हंसते थे आज दांत गिरे पड़े हैं। कैसी-२ तदबीरें सोचा करते थे, बरसों के इंतजाम सोचते थे, हालांकि मौत सिर पर सवार थी। मरने का दिन करीब था मगर उन्हें मालूम ही न था कि मेरे साथ क्या होने वाला है। आज रात गरम विस्तर पर नहीं बल्कि क़ब्र में ख़ाक के बिस्तर पर हूंगा। क्या तूने कहीं ऐसा देखा और सुना नहीं है ? पर याद रख दुनिया के ग़ाफ़िल कि यही तेरा हाल भी होने वाला है। आज इतने इंतजामात कर रहा है लम्बी-२ स्कीमें और तदबीरें सोचता है कल की ख़बर नहीं कि क्या होगा। कहां तेरी तदबीर होंगी और कहां तू होगा। ना मालूम कल कहां किस झाड़

के नीचे दबा पड़ा होगा ?

शेर– आगाह अपनी मौत से कोई वशर नहीं ।
सामान सौ वर्ष का पल की ख़बर नहीं ॥

बस याद रख ऐ ग़ाफ़िल । मेरी नसीहत को पल्ले बांध ले । इस आने वाले, मन्ज़र और नक़शे को हर वक़्त अपनी आंखों के सामने रख कि यह कोई नाविल, अफ़साना, या कहानी या किस्सा गोई या कोई अख़वार रिशाला नहीं है बल्कि यह तेरी हस्ती का एक्सरे और फोटो है और तुझे रोना हो तो इसे देखकर और याद करके रो ले । अगर तू अब भी न समझे तो यह तेरा बड़ा भारी क़सूर है ।

नज़्म

(दुनिया से जाने वाले. दिन की याद में)

अज़ीज़ों आलमें फ़ानी से जब अपना गुज़र होगा ।
निकल इस मुल्क से जंगल में जेरे ज़मीं घर होगा ॥
अन्धेरा तंग वोह घर है तकिया है न बिस्तर है ।
मकान पुरख़तर होगा, न आंगन न दर होगा ॥
मुझे है खौफ़ है उस दिन का, न जानूं कौन सा दिन है ।
कि जिस दिन यह आस्मां ज़ेरो ज़बर होगा ।
न जाने हम किसी को, न कोई हम को जाने ।
न कुछ पहचान हाकिम से, क्यों कर गुज़र होगा ॥

तंबीह:-

ऐ ग़फ़लत भरे इन्सान ! जो रात दिन सुबह शाम और हर माहो साल हत्ता कि तमाम उम्र से इस दुनियाऐ फ़ानी व बेवफा की दल-दल में फँसा है। और कभी भूले बिसरे भी अपने मालिक ख़लिक आक़ा और मौला को और अपनी मौत को याद नहीं करता इस बात को याद रख कि तू रात दिन मौत के करीब हो रहा है। और अपने कदमों को बड़ी तेजी के साथ अपनी गोर की तरफ ले जा रहा है। तेरा फल पक चुका है। तेरे फूलों की कली मुरझाने वाली है। तेरी सुबह व शाम गुजरनें वाली है। तेरी उम्मीदें खत्म होने वाली है। तेरी अजल बिल्कुल करीब आ चुकी है। जिनको तू अपना साथी समझ रहा है जिनके साथ तू अपना दिल बहला रहा है। यह तेरे कुछ काम न आयेंगे और तुझे कुछ नफ़ा न देंगे। यह कल तुझे अपने कन्धों पर उठा ले जायेंगे और तुझ अकेले को अंधेरी क़ब्र में छोड़ आयेंगे जहां तेरा न कोई साथी और न कोई मेहरवान होगा। इसलिए आज उस दिन के लिए तन्हाई में बैठ कर रो। दुनिया की हिर्सो तमा की नहीं बल्कि अपनी क़ब्र और हश्र में निजात की सोंच। लिहाज़ा वक्त है कुछ सोचने और करने का, न कि कल।

अपनी ज़िन्दगी का जायज़ाः–

ऐ दुनियां के अस्बाद और ज़ीनत पर मर। मीटने वाले। सुन गौर से सुन अपनी-आने वाली कहानी। आह ! ऐ ग़ाफ़िल !

१. तू ने ग़फलत में उम्र बरबाद कर दी। उठ जाग जल्दी होश कर। अपने गुनाहों की लाफीकर कि आज भी तुझे मोहलत नसीब है।

२. जो वक्त हाथ से निकल गया उस पर आंसू बहा। और अपनी पिछली जिन्दगी पर शरमिन्दगी और निदामत के साथ तौबा कर।

३. अब भी कमर बांध कर आमाले सालिहा करने की कोशिश कर क्योंकि मेहनत करने में कामयाबी है और ग़फ़लतो सुस्ती का अन्जाम बदबख़्ती और महरूमी है।

४. तेरी कामयाबी महल मकान बनाने, दुनिया का साज़ो समान इकट्ठा करने, अय्यारी व मक्कारी व चालाकी से बहुत सा मालो दौलत जमा करने में नहीं है। बल्कि तेरी असल कामयाबी अल्लाह व रसूल के अहकाम की

पूरी फरमाबरदारी करने, अपनी मौत को याद रखने, क़ब्रो आख़िरत की ज़िन्दगी बनाने में है....लिहाज़ा तू दुनिया में इस तरह से रह जैसे एक मुसाफ़िर रहता है। कि वह रस्ता चलते हुए ज़्यादा बखेड़ा नहीं करता।

५. हमेशा रहने की जगह तो सिर्फ़ आख़िरत है। और दुनिया का क़दम बहुत थोड़ा और वक्ते मुकर्रा तक है। और असल कामयाबी तो आख़िरत की कामयाबी है। जिस को आख़िरत की कामयाबी नसीब होगी तो वह अपनी मुराद को पहुंच गया।

६. दुनियां में आज तक जितने भी लोग आये वह सब एक के बाद एक अपनी मंज़िल की तरफ़ कूच कर गये। याद रख तू भी इसी तरह एक दिन कूच कर जाएगा।

७. यहां कितने आये और कितने चले गये मगर अफ़सोस कि तुझ को कुछ इबरतो नसीहत हासिल न हुई। इस दुनिया में जो भी आया कुछ करने को आया !

शेर– दफ़न खुद सदा किये ज़ेरे जमीं।
फिर भी मरने का नहीं हककुल यगीं॥

तुझ से बढ़ कर भी कोई ग़ाफ़िल नहीं ।
कुछ तो इबरत चाहिये ऐ नफ़्से लयीं ॥

८. जब तुझ को वह हादिसा-ए-मौत पेश आएगा जिस को कोई टाल नहीं सकता तो मालो दौलत और कौकरो ख़ादिम तेरे कोई भी काम न आएंगे ।

९. उस वक़्त डाक्टर, हकीम, दोस्त, रिश्तेदार और सब घर वाले तुझे बचाने की तदबीरें ख़त्म कर के मायूस हो जायेंगे और तेरे पास से उठ खड़े होंगे ।

१०. तुझ पर निज़ा (जो कन्दन) का आलम होगा । कोई तेरे मुंह में चमचे से पानी पिलायेगा । कोई सूरा-ए-यासीन सुनायेगा ।

११. तेरा दम निकल जाने को बाद तेरे जिस्म से लिबासे फ़ाख़िरा उतार कर तुझे कफ़न की चादर में लपेट देंगे ।

१२. तुझे ज़मीन की तह में अकेले छोड़ देंगे और नज़रों से ओझल कर देंगे ।

१३. कोई कहेगा बड़ा अच्छा बाप था । कोई कहेगा बड़ा अच्छा दोस्त था । कोई कहेगा बड़ा नेक था ।

१४. कोई कहेगा अल्लाह तआला मग़फ़िरत फ़रमाये । कोई कहेगा दुनिया में अच्छी गुज़री । अच्छा वक्त पूरा कर गया ।

१५. मगर याद रख कि इस ज़बानी जमा ख़र्च के बाद उन्हें यह भी ख़बर न होगी कि कौन चला गया । कौन हम से रूख़सत हो गया इस का कुछ ख्याल न होगा । उनकी सारी तवज्जह मालो जायदाद के तक़सीम करने और आपस में बांटने और लड़ने मरने पर लगी होगी ।

१६. तेरे माल के तक़सीम की कमी बेशी की वजह से वह एक दूसरे से अपना ज़्यादा हक जतलाने पर मुक़दमे बाज़ी करेंगे इसी बला में वह बरसों गिरफ्तार और मुब्तला रहेंगे और फिर कोई जीत गया और कोई हार गया । अंजाम यह कि लड़ाई-झगड़े और मुक़दमें बाज़ी के बाद आपस के एक-दूसरे से ताल्लुकात भी खत्म और इसी हाल में इस दुनियाए बेवफा से उनका भी कूच होगा ।

१७. और फ़िर वह बहुत जल्द पेट के धन्धे में लग जायेंगे और अपनी दुनिया में मन्शग़ूल हो जाऐंगे और वह तुझे भूले से भी तन्हाई और ज़ाहिर में याद नहीं करेंगे ।

१८. अरे ग़ाफ़िल जो कि धोखे में पड़ा हुआ है उनकी दोस्ती से धोखा न खा । सबसे अच्छा दोस्त और साथी तेरा नेक अमल है ।

१९. दिन गुज़र रहे हैं । हरेक मुंह फाड़े हुए है । मौत सिर पर चील और बाज़ की तरह चक्कर लगा रही है । इज़राइल रूह कब्ज़ करने के लिए ताक़ में है । हालात बदल रहे हैं । हालनाक़ वाकयात पेशआने को हैं । तग, तल्ख़, और दुश्वार घटियाँ गुज़ारने को है । लेकिन तेरी ग़फलत और बेपरवाही का यह आलम है कि तुझे कुछ ख़बर ही नहीं कि कल क्या होने वाला है । माल और दौलत जमा करने की फ़िक्र में है । कहीं चार यारों से दिल्लगी कर रहा है और कहकहे लगाकर हंस रहा है । कहीं ठगी, चोरबाज़ारी और बदमाशी व अय्याशी कर रहा है । तू ऐसे बेधड़क चल रहा है । अरे यह क्या गज़ब कर रहा है । क्यों तू मालो-दौलत और जवानी व सेहत, ताक़त व तवानाई के नशे में चूर है । आख़िर यह गफलत क्यों है ? यह सुस्ती और लापरवाही और बेजारी कब तक रहेगी ?

२०. ऐसे घर पर क्या रोना और फ़रयाद करना जो खाली हो गया और जिसके निशान मिट गए। इन यादगारों और खंडहरों पर नौहा व बुक़ा और वावेला कैसा ?

२१. जब बचपन का दौर गुज़र चुका तो फ़िर यह बचपना कैसा ? ग़ज़ल बोई व अफ़साना बाजी का वक्त बीत गया तो फ़िर वह शेरो शायरी कैसी ?

२२. पचास की उम्र हो चुकी तो फिर खेल-कूद का क्या मतलब ? सिर सफेद हो चुका तो फिर इस खेल तमाशे के क्या मायने

२३. लैला मज़नू के विसाल, उनके हिजऐ फ़िरक और इश्को मोहब्बत तरक़ीको को अब जाने दो।

२४. यह दोस्ताने बेवफ़ा ख्वाह कितना ही खुलसों मोहब्बत जताएँ, कितना ही तुझ पर परवाना वार, निसार हो। खुदा की कसम यह किसी तरह से भी खोट से खाली नहीं।

२५. याद रख हसीनों नाजनीनों की मोहब्बत सरासर बदनसीबी और नजामत है। तेरा यह हर रोज सुबह-शाम का बनना, संवरना नाच-गाना

और हम नशीनों के साथ दिन-राम खाना-पीना ऐशो-इशरत की रंग-रलियों मनाना शराबो कबाब के नशे, में बदमस्त और मदहोश रहने का अंजाम सिवाय आख़िरत की जिल्लत और रूसवाई के और क्या है ?

२६. अब भी वक्त है मेरा कहना मान जा कि हर महबूब की मोहब्बत से बेजार और दस्त-बरदार होकर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सलअल्लाह अलैह व सल्लम से रिश्ता मोहब्बत और उलफ़त का जोड़ ले और दिलो जान से हर काम में उनकी पूरी-२ फरमाबरदारी और इतातगुज़ारी कर और इसी पर अपनी निज़ात का भरोसा व उम्मीद रख ।

२७. ज़नाब रसूल अल्लाह, सल अल्लाह अलैह वसल्लम की मोहब्बत और ताबेदारी का होना इज्ज़त और कामयाबी और अलामत ईमान है । लिहाजा इसकी तकमील कर क्योंकि आप की मोहब्बत वह मज़बूत हल्का और रिश्ता है जो कभी टूट नहीं सकता ।

२८. हुज़ूर नबी करीम सल अल्लाह अलैह वसल्लम की मोहब्बत इंसान के लिए दीनो-दुनिया में

इज्ज़त क़ब्र में सामाने असियत और आख़िरत का बेहतरीन जरिया और तोशा है ।

२९. इस मौलायेक़रीम और ख्वेरहीम का अहसान समझ और शुक्र अदा कर कि जिसने तुझे उनका उम्मती बनाया और उनके जरिये से तुझे ईमान बख्शा ।

३०. जनाब रसूल अल्लाह सलअल्लाह अलैह वसल्लम का यह अहसान समझो कि जिसने फ़ामाया, आदमी उसी के साथ होगा जिससे उसको मोहब्बत होगी । यह सच्चा वायदा है जिसमें कोई शको-सुबह नहीं ।

३१. इलाही मुझे रसूल अल्लाह सलउल्लाह अलैह वसल्लम की सच्ची मोहब्बत और उनकी सच्ची फ़रमाबरदारी नसीब फ़रमा उनके नक्शे, क़दम पर चला, उनकी शिफ़ाजत नसीब फ़रमा । मैं उनकी शिफ़ाअत का उम्मीदरवार हूं । क्योंकि मुहीब को अपने महबूब से पूरी उम्मीद होती है । ऐ अल्लाह रसूल उल्लाह अलैह वसल्लम पर अपनी रहमत व दुरुद व सलाम नाज़िल फ़रमा और मुझे भी दिन-रात हुज़ूरे पुरनूर पर दुरुद भेजने की तोफ़ीक अदा

फ़रमा और मेरे इस शुगल में बरकत अता फ़रमा ।

इनसान का अंजामः–

१. हाय मेरे गफ़लत व कोताही कि मैं सारी उम्र अल्लाह व रसूल के अहक़ाम से पहलू तिही करता रहा । उसकी बात मानने से जी चुराता रहा । मैंने हमेशा अपनी दुनिया और दुनियावालों, रिश्तेदारों और दोस्त यारों को मुकद्द्म जाना और दीन को जो खुदा और रसूल का हुक्म था क़मतर जाना, पीठ पीछे डाले रखा । हाय मैंने यह क्या किया ? कि इस नाफ़रमानी की हालत में दुनिया से जाने और रुख़सत होने का वक्त सिर पर आ पहुंचा कि मेरा सफ़र अनदेखे रास्तों का है । मेरे सफ़र का सामान मंज़िल तक पहुंचने के लिए काफ़ी नहीं है । मेरे में न अब ताक़त न कूव्वत और मौत हर दिन मेरी तलाश में है ।

२. मेरे सिर इतने गुनाहों का अम्बार है कि जिनकी मुझे खुद भी खबर और इल्म नहीं मग़र अल्लाह ताला उनके खुले छिपे से खूब वाक़िफ़ है । मेरे छोटे-बड़े गुनाह सब खुदा ताला के पास दर्ज़ है ।

३. अल्लाह ताला इस कदर रहीम है कि मेरे इस गुनाहों और स्याह कारियों के बावजूद मुझे मोहलत दे रहा है और मैं ऐसा जालिम हूं कि फ़िर भी अपनी ज़ान पर ज़ुल्म, किए जा रहा हूं। और लगातार गुनाहों में मुबतला हूं। वह फ़िर भी मेरी पर्दापोशी फ़रमा रहा है। सदहैफ़ है मुझ पर।

४. आह ! मैं वही हूं कि गुनाह करते हुए मकान के दरवाज़े अच्छी तरह बन्द कर लेता हूं। हालांकि अल्लाह पाक की आंख मुझे तब भी देख रही होती है। अफ़सोस मैंने ज़मीन वालों से पर्दा किया और आसमान वालों से शर्म न की। इलाही मेरे हाल पर रहम फ़रमा।

५. आह ! कितनी लग़ज़िशे ग़फ़लत में सरजद होकर दास्ताने माजी और क़िस्साए पारीना बन गई और कितनी हसरतें दिल में अटककर मेरे लिए आतिशें सोज़ा बन गई।

६. मुझे छोड़ दो कि मैं अपने नफ़ज पर नोहा करूं और बक़ाया ज़िन्दगी फ़िक्रो ग़म में बसर करूं।

७. अब वह दिन आने को है वह मंज़र और वक्त

मेरी आंखों के सामने है कि मैं एक दिन बिस्तरे मर्ग पर अपने अहलो अयाल के दरमियान बेज़ान पड़ा हुआ होगा और उनके हाथ मुझे करवटें देते होंगे ।

८. आह ! वो मंज़र भी क्या होगा जब मेरे गि़र्द नौहाग़रों और रोनेवालों की भीड़ होगी । मेरी मौत का ऐलान हो रहा होगा । मुझे मर गया और मय्यत कहकर पुकारा जा रहा होगा ।

९. मेरे इलाज मुआलिज़ा के लिए हक़ीम और डॉक्टर को लाया जाएगा लेकिन उसकी चाराग़री मेरे किसी काम न आएगी ।

१०. निज़ा के वक्त मेरी रूह निकल जाएगी और ख़रख़रा के वक्त मुंह का थूक भी तल्ख़ हो जाएगा ।

११. लीजिए रुह निकाल ली गई और मेरा ज़िस्म अहलो-अयाल, घरवालों के दरमियान बेहिसो हरक़त पड़ा है और उनके हाथ मुझे उलट-पलट रहे हैं और उनकी आंखें आंसू बहा रही है ।

१२. जो शख़्स मुझे सबसे ज्यादा महबूब था वह बड़ी जल्दी से गुसल देने वाले को बुलाकर लाया

ताकि वह मुझे आकर गुसल दे ।

१३. घर के लोगों ने मेरी आंखें बंद कर दी और जबड़ों पर कपड़ा बांध दिया और अफ़सोस के बाद जाकर फ़ौरन कफ़न खरीदने लगे और किसी को मेरी कब्र खोदने के लिए भेज दिया गया ।

१४. मुझे तख्तएयय्यत पर लिटाकर कुछ लोग मुझे गुसल देने लगे ।

१५. मेरे ऊपर पानी डाला गया । तीन बार गुसल दिया । और लोगों को आवाज़ दी कि भई क़फ़न लाओ ।

१६. मुझे बग़ैर आस्तीनों के चन्द कपड़े पहना दिए और काफ़ूर लगा दिया । लीजिए बस यही काफ़ूर मेरा तोशए सफ़र हुआ और अब जनाजा उठाओ की आवाज शुरू हुई ।

१७. और अब उन्होंने मुझे दुनिया से निकाल दिया । हाय अफ़सोस ! यह दिन याद न था जिन्दगी में कि सफ़र पर जा रहा हूं । मग़र न कोई साथी है और न वहां का ख़र्च पास है ।

१८. चार आदमियों ने मुझे अपने कन्धों पर

उठाया । बाकि लोग मुझे रूख़सत करने के लिए पीछे हो लिए ।

१९. मुझे जनाज़ागाह में लाए । इमाम को बुलाया गया । जनाज़ा पढ़ाओ । सफ़ें बनाई गई । इमाम ने तक़बीर कही "अल्लाह हो अक़बर" । सब लोगों ने नियत बांधी चार तक़बीर कहने के बाद सलाम फ़ेर दिया गया । जनाज़ा पढ़कर मुझे सबने रूख़सत कर दिया ।

२०. मुझ पर ऐसी नमाज़ पढ़ी कि जिसमें न सजूद है । शायद कि मुझ पर अल्लाह-पाक़ अपना रहमों-करम फ़रमाए ।

२१. मुझे क़ब्रिस्तान ले गए और मेरी क़ब्र पर ले जाकर मुझे लहद में उतार दिया गया । इस आख़िरी दीदार के लिए मेरा मुंह खोल दिया और आंखों से आंसू बहाए । लहद का मुंह बन्द किया और क़ब्र की मिट्टी बराबर कर दी और सब लोग वापस हुए ।

शेर– कहा दोस्तो ने यह दफ़न के वक्त ।
हम क्योंकर यहाँ का हाल जाने ॥
लहद तक तो आपकी ताज़ीम कर दी ।
अब आगे आपके आमाल जाने ॥

२२. अब इस अन्धेरी क़ब्र में न मेरी मां है न मेरा बाप, न भाई न बहन, न बीवी न बच्चे, न कोई रिशतेदार और न कोई दोस्त यार जो मेरा दिल बहलावा करे ।

२३. ये तन्हाई, ये तारीक़ी, ये बेबसी और बेकसी और यह वहशत भी क्या आफ़त से कम थी ? अचानक मेरी आंखों ने एक हौलनाक मंज़र देखा ।

२४. यानि दो फरिश्ते मुनाक़िर व नक़ीर दहशतनाक़ शक्ल में मेरे पास नमूदार हुए । हाय मेरे अल्लाह मैं उनको क्या कहूं । उनकी हौलनाक़ और डरावनी शक्ल ने मेरे होशेहवास गुम कर दिए ।

२५. उन्होंने मुझे बिठाया और सख़्ती से सवालात की जवाबतलबी करने लगे । बार इलाहा तेरे सिवा मेरा कोई नहीं जो मुझे इस इम्तिहान से निज़ात दिलाए । अब कोई नहीं जो यहाँ आकर मेरा हाल देखें कि मुझ पर क्या गुज़र रही है ।

२६. इलाही अपनी रहमत और दरगुज़र के साथ मुझ पर एहसान फ़रमा । इस ग़रीब मुसाफ़िर पर एहसान फ़रमा जो अपने एहलो-अयाल और

वतन सब कुछ पीछे छोड़ आया है ।

२७. घर के लोग वापिस जाकर मीराश बांटने लगे और गुनाहों के बोझ की खराबारी मेरे सिर पर आ पड़ी ।

२८. मेरी बीबी ने नया शौहर कर लिया और घर बार मेरे बेटे को नए शौहर का गुलाम और ख़ादिम बना दिया और मेरे माल पर उसने क़ब्ज़ा कर लिया और माले-मुफ़्त दिल-बेरहम के अंदाज में उसे खर्च किया ।

३०. ऐ ! मेरे भाइयों इस दुनियाएं बेवफा और नापाएदार ज़ेबोजीनत और इसके बनाव सिंगार पर धोखा न खाओ । इसने बीबी बच्चों और वतन के साथ जो कुछ किया है उस नज़र रखो ।

३१. देखो ! जिन लोगों ने दुनिया भर की दौलत समेट रखी थी, वह यहाँ से क़ाफूर और क़फ़न के अलावा भी कुछ ले गए ?

३२. अपनी दुनिया से जोहद और क़नाअतलो और उसी पर राज़ी रहो । ख़्वाह राहतेबदन के सिवा तुम्हें कुछ भी मयस्सर न आए।

३३. ऐ ! मेरे नफ़स न फ़रमानी से बाज़ आ और अल्लाह-ताला का फ़ज़्ले ज़मील हासिल कर । उम्मीद है कि अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाएगा ।

३४. ऐ ! मेरे नफ़स ! तुझे खुदा संवारे तू अपने गुनाहों से तौबा कर और तुझको नेक काम का बदला ज़रूर दिया जाएगा ।

३५. उठ ! और अपने रसूल सलअल्लाह अलैह वसल्लम पर दुरूद भेज़ और अल्लाह-ताला की हमदोसना कर । सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए जो हमारी सुबह-शाम गुज़ारता है । ख़ैर और माफ़ी और भलाई और एहसान और अपनी नेमतो के साथ ।

एक दिन
(नज़्म)

जो यहाँ आया है जाना उसको होगा एक दिन ।
जब फ़नाही ठहरी तो फ़िर क्या सौ बरस क्या एक दिन ॥
क्या पैबम्बर क्या वली, क्या अहले दौलत, क्या फ़कीर ।

सबको है...का सदमा एक दिन ।

शर्क़ से लेकर ग़र्ब तक जिन की अज़्मत का शोर था ।
दमबखुद दो गज़ ज़मीन में उन को देखा एक दिन ॥
हर कमाले रा ज़वाले सच है ग़ाफ़िल होशियार ।
बड़े-बड़े इस खाक में देखेंगे नीचा एक दिन ॥
बोली ख़िलवत में अजल दूल्हा दुल्हन से वक्ते होश ।
है तुम्हें भी क़ब्र के गोशे में सोना एक दिन ॥
कह रही की यूं दुल्हन से बर सरे बालीं अजल ।
ख़ाक कर दूंगी तेरे दूल्हा का सर एक दिन ॥
इक जनाज़े पर मैं पहुंचा और हसरत से यूं कहा ।
मैं भी मिल लेता अगर यह और जीता एक दिन ॥
बोली मायूसी ऐ गाफ़िल जब आ जाती है मौत ।
एक दम भी ज़िन्दगी मुश्किल क्या जीना एक दिन ॥
आ गया जब वक्ते आख़िर ठहर सकता नहीं ।
एक साअत, एक लहज़ा, एक घन्टा, एक दिन ॥
खिलखिला लो, चहचहा लो ऐ गुलो ऐ बुलबुलो ।
फ़िर है रोना, गिल में सोना, ख़ाक होना एक दिन ॥
है यहां मजबूर अकबर, क्या नबी, क्या औलिया ।
जानिब मुल्के अदम है सब को जाना एक दिन ॥

क़ब्र की पहली रात

भाइयों ! अगर हम ग़ौर से सोचें और देखें तो इस दुनियां की बहुत बड़ी शादी में भी मौत की झलक है ।

लफ़्ज़े विदाः-

लफ़्ज़े विदा के मायने हैं रूख़सत करना । दर असल यह लफ़्ज़ ऐसे ही मौक़े पर बोला जाता है जहां पर किसी को रूखसत करना मक़सूद होता है ।

लफ़्ज़े विदा रमज़ान शरीफ़ के मौक़े परः-

रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी जुमे को जुमत उल विदा कहते हैं कि रमज़ान में इस जुमा के बाद कोई जुमा नहीं आता ।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम के हजे मुबारक को इस लिये हज्ज़त अलविदा कहते हैं कि इस के बाद आप मुसल्मानों से रूखसत

हो कर हमेशा के लिये अपने मौला से जा मिले ।

लफ़्ज़े विदा शादी के मौक़े पर:-

इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल खास कर बेटी वाले के यहा होता है चूंकि उस घर से बेटी रूख़सत होकर अपने मजाज़ी पिया के घर जाती है । जिस तरह बेटी वाले यह लफ़्ज़ इस्तेमाल करते हैं उसी तरह से लड़का भी अपने दोस्तों को रूख़सत कर के दुल्हन का हो गया ।

जैसा कि पुराने लोगों का यह क़ौल मशहूर है कि जब किसी का ब्याह हो जाए तो समझो कि अपने दोस्तों से छुट गया और जब उसके औलाद हो जाय तो समझो कि मर गया । गर्ज़ यह तमाम बातें एक हक़ीक़त का मजाज़ है । तो फिर बात जो इस वक्त अर्ज़ करनी है वह हक़ीक़ी विदा है । इस के मायने में अपनी मशहूरी के बाअस बूढ़े, बच्चे और जवान भी शामिल हैं । वह हक़ीक़ी मालिक के घर की रूख़सती है ।

हक़ीक़ी और मजाज़ी की बातें तक़रीबन मिलती जुलती हैं लेकिन असल और नक़ल का फ़र्क है । इन्शा अल्लाह जहां तक हो सकेगा इस मज़मून को कुराने मजीद और हदी से पाक से साबित करने की

कोशिश की जाएगी। ज़रा गौर से सुनिये और फ़िर अमल भी कीजिये।

दोस्तो !

दुनिया में आप को बाज़ लड़के और लड़कियां ऐसे भी मिलेंगे जिन का आज तक निकाह ही नहीं हुआ और अब शादी होने की उम्मीद भी नहीं है। और उन की उम्रें पूरी हो चुकीं। लेकिन बर अक्ल इस के हक़ीक़ी पिया के घर जाने से कोई बच न सकेगा। तमाम लोगों को जाना होगा और एक दिन जरूर जाना होगा। ख़्वाह वह किसी मुल्क, किसी क़ौम या किसी मज़हब के हों। सब के लिये यह फ़रमान बराबर है। सच्चे मालिके हक़ीक़ी का पैग़ाम सुनिये–

कुरबान जाइये। कितने प्यारे अल्फ़ाज़ में अपने मुश्ताकों को खुशख़बरी दी है। यह एक रूक्क़ा है जो हमारे नाम आया है जिस का मक़सद और मतलब यह है कि शादी की तैयारी करते रहो। कहीं ऐसा न हो कि बारात आजाय और तुम्हारे पास सामाने जहेज़ तैयार न हो। हिन्दी में किसी ने क्या ख़ूब कहा है :–

रंगा ले चुन्दरया, गुंधा ले यह सीस ।
तू क्या क्या करेगी अरी दिन के दिन ॥
न जाने बुलाये पिया किस घड़ी ।
खड़ी मुंह तकेगी, अरी दिन के दिन ॥

रूक्क़ा कैसा ?:-

बस यूं समझ लो कि अब मगंनी हो चुकी । न मालूम किस वक्त और कब शादी का पयाम आ जाय ।

दुल्हन का माइयूं बैठना:-

बेटी वाले सात आठ दिन पहले लड़की को माइयूं बिठाते हैं । उबटना मलकर उसे नहलाते हैं । मक़सद यह होता है कि दुल्हन को झुकने की आदत पड़ जाय और सहेलियों से मोहब्बत कम हो जाय । अपने पिया का तसब्बुर बांध जाय और मैल कुचैल से पाक हो जाये । ताकि दूल्हा खुश हो और समझे कि मेरी दुल्हन निहयत खूब सूरत है ।

हक़ीक़ी विदा:-

हक़ीक़ी विदा में भी यही बात मौजूद है कि मौत से पहले बीमारी आती है जिस का मतलब यह होता

और दुनिया वालों की मोहब्बत कम कर के अपने हक़ीक़ी मालिक से जी लगाये और यह यक़ीन करे कि हक़ीक़ी विदा याने दुनिया से रूख़सत होने और मरने के दिन बिल्कुल करीब़ है। हकीक़त और मजाज़ में इतना ही फ़र्क है कि वह मैके (पीके) आने की इजाज़त है और यहां इजाज़त नहीं बल्कि ससुराल ही ससुराल है। वहां उबटने और खली ने ज़ाहिरी मैल साफ़ कर दिया था तो बीमारी न बन्दे को बातिनी आलाइश (यानी गुनाहों) से पाको साफ़ कर दिया।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया।

यानि बुख़ार को मत बुरा कहो कि वो नबी आदम के गुनाहो को इस तरह दूर कर देता है जिस तरह से लोहे की मैल-कुचैल को आग दूरकर देती है।

दुल्हन का बनाव सिंगार:-

दुल्हन वाले बेटी को नहला-धुला कर सुर्ख़ जोड़ा पहनाते हैं, खुश्बू लगाते हैं, तिल गुचते हैं और

मांग निकालते हैं । आंखों में सुरमा, दांतों में मिस्सी और हाथों मं मेहंदी लगाई जाती है। जेवरात से जारास्ता किया जाता है । कानों में बालिया, पत्ते, हाथों में पहुंचियां, चूड़े, करान, गले में चम्पाकली गुलबंद, हार, पाव में झांझर, तोड़े और पाज़ेब वगैरह पहनाई जाती है ।

इन बातों की आरास्तगी और सज़ावट क्यों की जाती है ? इसलिए कि मज़ाजी पिया को यह बाते भांती और अच्छी लगती हैं । इसको वही मांग वाला सिर और बालियों वाले कान अच्छे लगते हैं । उसकी मेहंदी, लगे हुए हाथ और पांव भले लगते हैं । इस गरज़ से यह तमाम काम पूरे किए जाते हैं कि किसी तरह दुल्हन, दूल्हा को पसंद आ जाए ।

सच्चे दूल्हा:–

वह ख़ुद भी निराले और उनका बनाव सिंगार भी निराला है । दुल्हन को नहलाया गया । खुश्बू की ज़गह क़ाफ़ूर छिड़का गया । और माथे पर इतर लगाया । सूर्ख़ जोड़े की जगह सफ़ेद क़फ़नी पहनाई गई । अल्लाह अल्ला । मुबारक़ और ख़ुशनसीब है वह दुल्हनें जो अपने सच्चे पिया की दिलदादा और तालिब हैं । मालिके हक़ीक़ी को वह सिर पसंद नहीं

जिसमें मांग निकाली गई हो, वह पेशानी पसंद नहीं जिसको खूब चमकाया गया हो बल्कि उसको वह सिर और पेशानी पसन्द और महबूब है जो उसके अलावा किसी दूसरे के आगे कभी न झुकाई गई हो। हमेशा उसी के आगे सिज़्दे में झुकती रहती हो। उसे बाली पत्तों वाले कान पसंद नहीं बल्कि उसे वह कान प्यारे है। जो ग़ीबत और झूठ, राग, माज़े, नाच गाने और फ़हाबातों के सुनने से पास हो। उसे सुलई आंखें पसन्द नहीं बल्कि उसे वह खोफ़ज़दा आंखें पसन्द हैं जो उससे डरकर रोती है। उसको मिस्सी लगे होंठ, दांत और ज़बान पसन्द नहीं बल्कि उसको वह होंठ, दांत और ज़बान पसंद और महबूब है जो हर वक्त जिक्रे इलाही में हिलते रहते हैं। उसे कंगन, पहुंचियों वाले हाथ और बाज़ू पसंद नहीं बल्कि उसे वह हाथ और बाज़ू पसंद हैं जो ज़रूरत के वक्त किसी दूसरे के आगे न फैलाए जाएँ और हर वक्त बारगाहे इलाही में बंधे और उठते रहें। मालिके हक़ीक़ी को तोड़े पाजेब और झांझर वाले पांव पसंद नहीं बल्कि उसे वहीं पांव पसंद और महबूब हैं जो अल्लाह ताला के रास्ते में ग़र्द, आलूद हो जो हर नेक काम के लिए उस रास्ते पर चलकर जाएं, जो उनके सामने पिछली

रात को खड़े रहे । और क़दम ज़न होकर आएं । ख़ुदाबंदे आलम को स्याह बालों वाली दुल्हन खुश नहीं कर सकती । हाँ, उसको वह दुल्हन खुश और राज़ी कर सकती है जिसने ज़िन्दगी में खुदा और उसके रसूल की फ़रमाबरदारी की हालत में रहकर अपने बाल सफ़दे किएं हों । उस पर वाकई ख़ुदा बंदे क़रीम को रहम आता है । हक़ीक़ी दूल्हा को काले और गौरे में कोई इम्तियाज नहीं । उसको तो वह दिल महबूब है जो गुनाहों से पाको-साफ़ जो खुदा-ताला की सच्ची मोहब्बत और तौहीद से भरपूर और लबरेज़ हो । क्या खूब कहा है कि–

न काली को चाहे, न गोरी को चाहे
पिया जिसको चाहें सुहागन वही है ।

क्या ही खुशनसीब और नेकबख़्त वह दुल्हन है जो इन ज़ेवरात से आरास्ता होकर अपने प्यारे पिया के घर रवाना हो ।

दुल्हन का डोला:–

दुल्हन का पालक़ी या डोली मं बिठलाया गया इसी भारा, भरी बीवी ने जाली का दुपट्टा जिसमें सच्चे मोती लगे हुए थे, पालकी या डोली में डाल दिया । चार कहारों ने डोली उठाई । सब भाई बहन

रोने लगे, अपनी जी-जान खोने लगे और मुँह अपना आँसुओं से धोने लगे। विदा करके सब जुदा होने लगे। बेटी के बाप ने सिर पर हाथ रखकर ख़ुदाए पाक़ के सुपुर्द किया और एक ठंडा सांस लिया और मां ने भी चलते वक्त नसीहतें की कि ए मेरी बेटी हमेशा अपने ख़ाविंद की ताबेदारी करना। अब वही घर है और वही दर है। अगर तू अपने ख़ाविंद की रजामंदी से आए तो आइयों वरना तू उसे नाराज़ करके आई तो याद रख़ तेरा इस घर में गुज़ारा नहीं। और ख़ासक़र आज की रात बिल्कुल न भूलना। नीची निग़ाह रखना और जहां तक हो सके आंखे न ख़ोलना। अग़र आज रात कोई भी बात तुम्हारी ख़ाविन्द को पसन्द आ गई तो हमेशा आदाम राहत और सुख से रहोगी और अग़र ख़ुदा न ख़ास्ता आज की रात ही दिल न मिले तो फ़िर तमाम उम्र मुसीबत का सामना रहेगा। यह सब कुछ हो रहा है। लेकिन दुल्हन अपने जी ही जी में कह रही है कि मां ने सब कुछ बनाव-सिंगार कर दिया है। अब अल्लाह-ताला उनके दिल को खुश कर दे। दुल्हन के बाप ने आगे बढ़कर दूल्हा को सलामी के रुपए दिए। और रोती हुई डबडबाती हुई आंखों से कहा कि आप को लड़की दी है, सभी कुछ दे दिया है। चौदह-पन्द्रह

बरस तक तिनका भी नहीं तोड़ा, फली तोड़नी कैसी ? और अपनी ग़रीबी के बावजूद इसका दिल कभी मैला नहीं किया । अब आपको अख़्तियार है । हम तो बहुत ही नादार हैं और गरीब आदमी हैं । आपके लायक़ तो है नहीं लेकिन फ़िर भी जो कुछ हो सका और जो कुछ इसके मुक़द्दर में था, वह आपको हाजिर कर दिया । यह कहते हुए बेचारे रोते हुए एक तरफ़ को हो गए । अब दूसरी तरफ़ भी सुनिये–

इधर भी यही हाल है ।

मरते वक्त कुछ लोग कलमा पढ़ रहे थे कि मरने वाले की ज़बान पर कलमा जारी हो जाय । नहलाने, कफ़नाने के बाद एक चारपाई पर जनाज़ा रखा गया और ऊपर से चार डाल दी गई । जिस पर चारखाना बना हुआ था जो दूर से देखने वाले को जाली का दुपट्टा मालूम होता था । चार आदमियों ने चारपाई उठाई और कलमा शरीफ़ पढ़ते हुए चले । इस दुल्हन के साथ उसके नेक आमाल का जहेज़ है । जनाजे की नमाज हुई । जो अल्फ़ाज वहां बेटी के बाप ने कहे थे यहां वह सब ने मिल कर कहें ।

पूरी दुआए् जनाज़ा पढ़ी गई । इस से फ़ारिग़ होकर दुल्हन को सच्चे पिया के हवाले कर दिया गया । सब चश्मे नम से रोते हुये एक तरफ़ को चल दिये ।

दुल्हन की पहली रातः–

इधर मां बाप यह दुआ कर रहे हैं कि इलाही ! आज की रात हमारी इ़ज़्ज़त तेरे हाथ है दुल्हन अपने दूल्हा के दिल में उतर जाए ।

उधर दूल्हा ने देखा कि दुल्हन अच्छी है और पसन्द आ गई । खुश होकर मुहं दिखाई में मुंह में कोई चीज़ चढ़ाई और दुल्हन से कहा कि तुम आज से तमाम बातों की मालिक हो । जो तुम्हारा जी चाहे वह करो । तुम्हें हर तरह से अख़्तियार है । आज मेरी दुआ क़बूल हुई । मैं भी अपने रब से यही चाहता था कि कोई अच्छी औरत मिल जाय जो खूबसूरत हो और खूबसीरत भी । खुदा का शुक्र है तुम मेरी मरज़ी के मुवाफ़िक मिलीं । अब तुम जो कहोगी मैं वही करूंगा ।

और अगर कहीं ख़ुदा न ख़्वास्ता उस रात दुल्हन पसन्द न आई तो उसी रात से ही लड़ाई शुरू हो गई। कभी मियां तलाक़ देने को तय्यार होते हैं, कभी बुरा भला कहते हैं। कभी कहते हैं कि सड़ा सड़ा कर मारूंगा। जिस तरह से यह मेरे साथ चाल चली है। वैसा ही मैं भी अब बदला लूंगा।

ग़रज़ तमाम उम्र बेचारी अज़ाब और सख़्तियों में मुब्तला और गिरफ़्तार रही। तरह तरह की तकलीफ़े मिलती हैं कोई हटाने वाला नहीं, कोई दुःख दर्द सुनने वाला और अज़ाब से बचाने वाला नहीं। कुछ बनाए बनता नहीं। कोई फ़रयाद सुनता नहीं। दिन रात बुरे नसीब को रोती है और अब जी जान खोती है। मगर फिर अर्ज़ कहां कबूल होती है। कोई आंसू पोछने वाला नहीं। इस से बढ़ कर क्या अज़ाब होगा कि पिया नाराज़ है।

मय्यत की पहली रात:–

आह ! इक दिन मरना हमको है जरूर ।
सबको है जाना मौला के हुजूर ॥

इधर भी यही बात है कि अगर बंदा क़ब्र में पहली रात ही अपने आक़ा और मौला को पसंद

आ गया तो इरशाद होता है—

गरज़ कि बंदा फ़िर हर क़िस्म की नेमतों से मालामाल होगा। मजाज़ी दुल्हन को वह मज़ेदार नींद कहां मयस्सर और नसीब जो बदए मोमिन को नीची नींद अपनी क़ब्र में आती है।

इस प्यारी आवाज़ को सोने वाले क़यामत तक करवट न बदलेंगे।

शेर— मिला सोने वालो को आराम वोह।
कि उठने का लेने नहीं नाम वोह॥

लिहाज़ा जब उनको पिया ही ज़गाएगा तो उसकी आवाज़ सुनकर उठेंगे। कितनी प्यारी और मुबारक़ है वह दुल्हन जिससे उसका पिया खुश हो जाए। और अग़र खुदा न करे। पिया ख़फ़ा हो जाए और कोई भी अदा उस परदेसी मुसाफ़िर की उसको पसन्द न आई और उन्होंने कह दिया कि सब कुछ सही लेक़िन सूरत-शक्ल तो किसी काम की नहीं यानि तेरा दिल यानि जो मेरा जलवागाह था। वही

स्याह है तो बस फ़िर हैफ़ सदैफ़ । दूल्हा ने ख़फ़ा होकर मुंह फेर लिया और फ़िर झिड़ककर सख़्ती के लहजे में फ़रमाया ।

इस हालनाक़ आवाज़ का जो असर उस बदसूरत दुल्हन पर होगा कि इलाही तौबा । अब देखना यह है कि कौन सी दुल्हन अपने पिया के पास जाने को अपना बनाव सिंगार करती है । हक़ीक़ी पिया दुनिया का बनाव सिंगार और माल व दौलत नहीं चाहते बल्कि वह अपने बंदो से अपनी रज़ा और फ़र्माबरदारी चाहते हैं । इसलिए इस क़िताब के पढ़ने वाले भाई–बहनों की ख़िदमत में अर्ज़ है कि वह अपनी बक़ाया उम्र और वक्त को ग़नीमत समझें । अपने इस क़ीमती वक्त की क़द्र करें । अपनी जवानी सेहत और ज़िन्दगी को अनमोल जानें । मौक़ा हाथ से न जाने दे वरना फ़िर वक्त गुज़र जाने के बाद पछताना पड़ेगा । और उस वक्त का पछताना बेक़ार और बेसूद होगा–

शेर– सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं ।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ॥

लिहाजा ऐ मेरे भाइयों और दोस्तों ! याद रखो

कि जिस पर मालिक़ की नज़र पड़ती है । उसको संवारो । इस ज़ाहिरी बनाव सिंगार और शानो-शौक़त को जाने दो । अब बहुत हो गई जो रही-सही ज़िंदगी है उसको संभाल लो और ज़ाहिरी टीप-टाप को छोड़ दो वरना । पछताओगे-

शेर- कुछ तो कर लो बनाव चलते वक्त ।
जावे सूरत उसे दिखानी है ॥

बस !

यही आपकी ब्याह और शादियाँ है । मगर इन्हीं पर ग़ौर किया जाए तो बहुत कुछ इबरत और नसीहत हासिल हो । सिर्फ़ आपकी खैर-ख़्वारी और समझाने की गरज़ से आपकी शादी ही की मिसाल देकर (जो कि आजकल ख़ास रंगरलियों से की जाती है । समझाया गया है) अल्लाह-पाक़ से दुआ है कि वह मुझे और आपको समझने और अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मेरे लिए और मेरे घर वालों के लिए इसको ज़रिया-ए-निज़ात बनाए और मौत की तलख़ी, निज़ा की तक़लीफ़ और अज़ोब-क़ब्र से बचाए ।

आमीन !

हक़ीर मोहम्मद इस्माईल नबम्बर, १९७७ ईस्वी मुक़ाम निज़्द मरक़दे मुबारक़ मौलाना मुफ़्ती अब्दुलग़नी साहब और अपने भाई और वाल्दएन के पास बैठकर लिखी गई। क़ब्रिस्ताने तक़िया नातूशाह बिज़्द रेलवे लाइन, मालियर, कोटला।

मौत को याद करने का हुक्म

हुज़र नबी क़रीम स़लअल्लाह अली वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम क़ब्रिस्तान जाया करो क्योंकि क़ब्रिस्तान मौत की याद दिलाता है। इससे इबरत हासिल होती है। मैंने, अपने रब से अपनी वालिदा की क़ब्र पर जाने की इजा़ज़त मांगी थी।

मुझे इसकी इजा़ज़त मिल गई। लिहाज़ा तुम भी क़ब्रिस्तान जाया करो। इससे दुनिया से बेख़बती पैदा होती है और आख़िरत याद आती है। हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ी अल्लाह इनाह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ने मुझसे इरशाद फ़रमाया कि ऐ अबूज़र क़ब्रिस्तान जाया करो इससे तुमको आख़िरत याद आएगी। मुर्दों को गुशल दिया करो कि यह नेकि़यों से ख़ाली बदन का इलाज है। और इससे बड़ी नसीहत हासिल होती है। जनाज़े की नमाज़ में शरीक़ हुआ करो। शायद इससे कुछ रजो-ग़म तुममें पैदा हो जाए। कि ग़मग़ीन आदमी जिसको आख़िरत का ग़म

हो अल्लाह–ताला के साए में रहता है। और ग़ैर का तालिब रहता है। एक और अदीस में है कि आप ने फ़रमाया कि तुम बिमारियों की अयादत (यानि बीमार पुरसी) किया करो। जनाज़े के साथ जाया करो कि वह आख़िरत यादि दिलाता है। एक हक़ीम किसी जनाज़े के साथ जा रहे थे। रास्ते में लोग उस मय्यत पर अफ़सोस और ग़म कर रहे थे।

हक़ीम साहब लोगों को फ़रमाने लगे कि तुम अपने ऊपर अफ़सोसो–ग़म किया करो। यह तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है। इसलिए कि यह तो चला गया और इन आफ़तो और मुसीबतों से निज़ात पा गया।

(१) पहले यह अब कभी उसकी मालिकउल मौत को देखने का ख़ौफ़ नहीं रहा।

(२) मौत की सख़्ती की मुसीबत अब उसको नहीं आएगी।

(३) बुरे ख़ात्मे का ख़ौफ़ उसको ख़त्म हो गया।

लिहाज़ा अब तुम अपनी फ़िक्र करो कि यह तीनों सख़्त मंज़िले तुम पर आने को बाकि हैं।

हदीसे शरीफ़ में है कि एक नौज़वान मजालिस में खड़े हुए और अर्ज़ किया कि ए अल्लाह के रसूल मोमिनीन में सबसे ज़्यादा समझदार कौन है ? तो आपने इरशाद फ़रमाया कि मौत का कसरत से ज़िक्र करने वाला और उसके आने से पहले ही उसके लिए बेहतरीन तैय्यारी करने वाला किसी ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह ! इस्लाम का नूर सीने में दाख़िल होने की क्या अलामत है तो आपने इरशाद फ़रमाया कि इस धोखे के घर (यानि दुनिया-ए-फ़ानी) से दूरी होना, हमेशा रहने वाले घर (आख़िरता) की तरफ़ जाने और मौत से पहले उसकी तैय्यारी करना। हज़रत इब्ने उमर रज़ी अल्लाह इनह फ़रमाते हैं कि हम इस आदमी जिनमें एक मैं भी या जबाव रसूल अल्लाह सलअल्लाह अलैह वसल्ल की ख़िदमत में हाज़िर हुए ।

एक अंसारी ने हुज़ूरे की ख़िदमत में यह सवाल पेश किया कि या रसूल अल्लाह ! सब से समझदार और मोहतात आदमी कौन है ? आपने इरशाद फ़रमाया कि जो लोग मौत को सब से ज़्यादा याद करने वाले हों। यही लोग हैं जो दुनिया की शराफत (बुज़ुर्गी) और आख़िरत का एज़ाज व मरवबा ले उड़े ।

(ख्वाह इब्ने आले उद दुनिया व तबरानी)

हदीस शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने फ़रमाया कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाला चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो ।

ग़रज़ यह है कि मौत को याद रखने से इन्सान की उम्मीदें कम और नफ़्स भी कम हो जाता है । मौत की तैय्यारी रखने की वजह से इस दुनियाए फ़ानी और नापायदार से बे रग़बती और दूरी होने लगती है । मौत की याद और तैय्यारी आदमी को माल की ज़्यादती-ए-तमा व जमा, बहुत हिर्स और लालच से रोकने वाली है कि आदमी धोखे और फ़रेब, जुल्मो सितम, कम तोल और झूठ बोल कर और तरह तरह की मक्कारियां और होशियारियां कर के अपनी जान पर गुनाहों के अंबार और रादूड़ घर के और माल के ख़ज़ाने जमा कर के बिला किसी खर्च और खाने पीने को छोड़ कर वारिसों के हवाले कर के चला जाता है बल्कि पिछलों के मुंह में ग़लत लुकमा दे कर जाता है जो बाद में वबाले जान बन जाता है लेकिन अगर आदमी को मौत याद रहे और अपने मरने के दिन की तैय्यारी करता रहे तो वह इन सब

नाजायज़ और बुरे कामों से बच जाता है बल्कि उस का माल भी फ़िर आख़िरत में ज़ख़ीरा और मददगार बन जाता है। मौत की याद आदमी को तोबा करने पर आमादा करती है। दूसरों पर जुल्मोसीतम और उनका नाजायज़ माल खाने और उन के हुकूवा की तल्फ़ी करने से बाज़ रखती है।

ग़रज़ मौत को याद रखने से आदमी बहुत गुनाहों और रूहानी बीमारियों से बच जाता है।

शेर– *याद रखना मौत का इक्सीर है।*
ग़म से बचने की यही तदबीर है॥
मौत इन्सान को अगर दुनियां में याद रहे।
तो हर रंजो ग़म से हर वक्त आज़ाद रहे॥

मौत की सख़्ती:–

हज़रत इमाम ग़िज़ाली फरमाते हैं कि अगर आदमी पर कोई आफ़त या मुसीबत, कोई हादिसा, कोई रंजोगम, कोई तकलीफ़ कोई मशक़्क़त या कोई डर खौफ़ ज़िन्दगी में कभी न आए।

तब भी मौत की सख़्ती, निज़ा की तल्ख़ी और अन्देशा ऐसी चीज है जो उस की तमाम लज़्ज़तों और शहतों को मुकद्दर और ख़त्म कर देने के लिए काफ़ी है। उस की तमाम खुशियों पर पानी फेर देने वाली

है। उस की ग़फ़लत को ख़त्म कर देने के लिए इसी का फ़िक्र काफी है। मौत इतनी खख़्त मुसीबत की चीज़ है कि आदमी को हर वक़्त इस की फ़िक्र और तैय्यारी में मशगूल रहना चाहिए। फिर यह कि इस का वक़्त मालूम नहीं कि कब आ कर पकड़ ले।

इन्सान दुनिया और दुनिया को साज़ोसामान अपनी ग़फ़लत और रंग रलियों में मशगूल है। दिन रात दौलत इकट्ठी करने और दुनिया बनाने बसाने की फ़िक्र में लगा हुआ है और आस्मानों पर उस की गिरफ़्तारी के वारंट जारी हो चुके हैं।

उस की मौत का हुक्म जारी हो चुका है जिस में न किसी की सिफ़ारिश चल सकती है और न ही अपील की जा सकती है। और न ही कोई मिनट दर मिनट की उस को मोहलत मिल सकती है। जब भी किसी पर मौत का वक़्त आया तो उस को कुछ कहने सुनने की भी मोहलत नहीं मिल सकी।

कलाम क्या ज़बान तक मुहं में न हिल सकी।
पलक झपकने की मोहलत भी उनको न मिल सकी॥

आह ! फिर भी यह इन्सान किस क़वर धोखे में पड़ा हुआ दुनिया की इस चिकनी दलदल में फंसा हुआ है कि महल व मकान बना रहा है। कहीं ज़मीन

जायदाद ख़रीद रहा है, कहीं बाग़ात लगा रहा है, कहीं दुकानें बनवा रहा है, कहीं कारखाने लगाने के चक्कर और फ़िक्र में डूबा हुआ है, कहीं मकान की ज़ाहिरी टीप टाप और उस के फ़र्श की आराइश में लगा हुआ है। ग़रजे कि मौत और मरने के दिन को कभी भूले से भी याद नहीं करता हालांकि उस का नाम ज़िन्दों की फ़हरिस्त से कट कर मुर्दों की फ़हरिस्त में आ चुका है। हत्ता कि कफ़न तक बाज़ार में बज़ाज़ की दुकान में आ चुका है–

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का है पल की खबर नहीं॥

कितने तआजुब की बात है कि मौत जब ऐसी चीज़ है कि जिस का कोई हाल और वक्त मालूम नहीं कि न जाने कब आ पकड़े। फिर भी दिन रात आदमी दुनिया की लज़्ज़तों और ग़फ़लतों में पड़ा है। कितने अफ़सोस की बात है कि अगर उसे यह पता चल जाए कि कोई सिपाही या पुलिस उस की तलाश में है जो उस के जुर्म की वजह से उसको सज़ा देगा तो सब लज़्ज़तों आराम ख़ाक में मिल जायगा। या उस को इतना ही पता चल जाए कि आज उसकी गिरफ्तारी के वारन्ट जारी होंगे तो बस

इतना सुनते ही होश उड़ जायेंगे और नींदे तक हराम हो जायगी। लज़्ज़तों आराम कैसा ?

तो इसी तरह जब उसे पता है कि मालिक उल मौत उस की ताक में है और मौत की सख्तियां जो बड़ी से बड़ी सज़ा से बढ़ कर हैं वह उस को मिलने वाली हैं फिर भी उस से ग़ाफ़िल रहे बल्कि कभी उस का जिक्रो फ़िक्र ही न करे। क्या इस हिमाक़त, जहालत और ग़फ़लतो बे परवाई की कोई हद भी है ?

हक़ीक़त यह है कि इन बातों पर यक़ीन ही नहीं कि हाँ वाकई कल ऐसा ही होने वाला है। इसीलिये यह न डरता है और न याद ही करता है हालांकि यह वक्त एक दिन ज़रूर सिर पर आने वाला है। इस से बच कर कोई कहीं नहीं जा सकता—

जो ज़िन्दा है वह मौत की ईज़ाए सहेगा।
जब अहमदे मुरसल न रहे तो और कौन रहेगा ॥

रूह का तन से जुदा होना

(निज़ा की तल्ख़त्री और वक्ते आख़िर)

अज़ीजों अहबान दम के हैं, सब छूट जाते हैं ।
जहां यह तार टूटा सब रिश्ते टूट जाते हैं ॥

मौत की सख़्ती का हाल वही जाने जिस पर गुज़रती है या गुज़र चुकी है । दूसरे को उस के हाल की कुछ ख़बर नहीं । जब तक इस से वास्ता न पड़े वह तो सिर्फ अन्दाज़ा और क़यास ही लगा सकता है । बदन के जिस हिस्से में रूह नहीं होती उस को काटने से तकलीफ़ नहीं होती । जिस तरह से बदन की जो खाल मुर्दा हो जाती है उस को काटने से कोई तकलीफ़ नहीं होती लेकिन जिस हिस्से में जान होती है उस में ज़रा सी सूई चिभोने या उस में कुछ लगने से तकलीफ़ होती है । यह इस वजह से है कि रूह को बदन के उस हिस्से से ताल्लुक है । इस वजह से उस को तकलीफ पहुंचती है । चूंकि रूह सारे बदन में सिर से पांव तक आदमी के जोड़ जोड़ में

मौजूद है इसलिए जब उस को सारे बदन से खींच कर निकाला जायगा तो साफ़ ज़ाहिर है कि मौत के वक्त कितनी लकलीफ़ होगी।

अग़र किसी ज़िंदा आदमी का कोई हिस्सा काटा जाए तो कितनी तकलीफ़ होगी। इससे अंदाज़ा कर लीज़िए और अग़र वह हिस्सा मुर्दा हो उसमें रूह न हो तो उसके काटने से ज़रा भी तक़लीफ़ नहीं होती तो जब सारी रूह को बदन की रग-२ से खींचा जाएगा तो ग़ैर कीजिए कि क्या हाल होगा लेकिन बदन का अगर एक हिस्सा काटा जाता है तो रूह का बाकी हिस्सा तमाम बदन में मौजूद होता है। वह इस वक्त मज़बूत होता है। इस वज़ह से आदमी चिल्लाता और तड़पता है। मग़र जब पूरी ही रूह खींची जाए तो उसमें क़मज़ोरी आ जाने की वज़ह से इतनी ताक़त नहीं रहती कि वह तड़पे या आराम पा सके। हां अग़र बदन मज़बूत होता है तो सांस उखड़ते वक्त बदन में आवाज़ पैदा होती है जो दूसरो को सुनाई देती है। बदन के जिस हिस्से से रूह निकलती जाती है। वह हिस्सा आहिस्ता-२ ठंडा होना शुरू हो जाता है। सबसे पहले उसके पांव ठंडे होते हैं इसलिए कि रूह सबसे पहले पांव की तरफ से निकाली जाती है और वहां से निकलकर मंह से बाहर

जाती है । फिर पिंडलियां ठंडी होती हैं फिर रानें । इसी तरह से हर हिस्सा ठंडा होता रहता है और हर हिस्से को उतनी ही तक़लीफ होती है जितनी कि उसके काटने से होती है । यहां तक कि जब रूह हलक़ तक पहुंचती है । तो आंखों से नूर जाता रहता है । जिस वक्त, मालिक़ उल मौत दिल की रग को छूते हैं उस वक्त आदमी का लोगों को पहचानना ख़त्म हो जाता है और ज़बान बंद हो जाता है और दुनिया की सब चीज़ों को भूल जाता है । अग़र उस वक्त आदमी पर मौत का नक़्शा सवार न हो तो तकलीफ़ की सख़्ती की वज़ह से अपने पास वालों पर तलवार चलाने लगे । कुछ खायतों में आया है कि जिस वक्त सांस हलक़ में जाता है तो शैतान उसके गुमराह करने को बेहद कोशिश करता है ।

हुज़ूर नबी क़रीम सलअल्लाह अलैह वसल्लम की दुआओं में यह दुआ भी है कि या अल्लाह मुझ पर मौत और निज़ा की सख़्ती आसान फ़रमा । मग़र एक हम हैं कि इन वाक़यात से बिलकुल ही नावाक़िफ़ और बेख़बर हैं । हम तो उस आने वाले वक्त को याद ही नहीं करते, दुआ मांगना कैसा ? और अग़र कभी भूले बिसरे दुआ मांग भी ली तो वोह भी सरसरी तौर पर मांग ली । बस काफ़ी

है । इम्बिया अलैह अससलाम जो गुनाहों से बिलकुल मासूम और पाक़ थे और औलिया जो खुदा के दोस्त हैं वोह तो मौत से इतना डरते थे कि बेहद डरज़ते और कांपते रहते थे । हज़रत ईसा अलैह अस्सलाम अपने हवारियों से कहते थे । मेरे लिए दुआ करो कि निज़ा के वक्त की तक़लीफ़ मुझ पर आसान हो जाए । मौत के डरने मुझे मौत के क़रीब पहुंचा दिया ।

हिक़ायतः-

नबी इसराइल के चंद इबारत करने वालों की एक ज़मात, एक क़ब्रिस्तान में पहुंची । उन्होंने आपस में मशविरा किया कि अल्लाह पाक़ से दुआ की जाए कि उनमें से कोई मुर्दा क़ब्र से उठे ताकि हम उससे कुछ मौत का हाल पूछें कि उस पर क्या गुज़री ?

उन्होंने अल्लाह-ताला के हुज़ूर में दुआ की । दुआ कबूल हो गई । और एक शेख़्स क़ब्र से निकला जिसकी पेशानी पर क़सरत से सिज़दा करने का निशान पड़ा हुआ था । उसने कहा कि तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो ? मुझे मरे हुए आज पचास साल हो गए लेकिन मौत के वक़्त की तक़लीफ़ आज़ तक मेरे ज़िस्म से नहीं गई ।

हज़रत हसन रज़ी अल्लाह-ताला इनह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सलअल्लाह वसल्लम ने एक मरतबा मौत की सख़्ती का ज़िक्र फ़रमाया और यूं इरशाद फ़रमाया कि इतनी तक़लीफ़ होती है कि जितनी तीन सौ जग़ह तलवार की क़ाट से होती है। हदीस शरीफ़ में है कि आपने इरशाद फ़रमाया कि या अल्लाह तू रुह को पुट्ठों से, हड्डियों से और उंगलियों से निकालता है। मुझ पर मौत की सख़्ती आसान कर दो। एक और जग़ह फ़रमाया कि क़सम है उस जाति की कि ज़िसके कंधो में मेरी जान है कि हज़ार ज़ग़ह तलवार की काट से मौत की तक़लीफ़ ज्यादा सख़्त है।

एक बुज़र्ग औजाई रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि हमें यह बात पहुंची है कि मुर्दों के क़यामत में उठने तक मौत की तक़लीफ़ का असर महसूस होता रहता है। हज़रत शद्दाद बिन ओस कहते हैं कि मौत दुनिया और आख़िरत की सब तक़लीफ़ों से ज़्यादा है। वह आरा चलाने से ज़्यादा सख़्त है। वह कैंचियों से क़तर देने से ज़्यादा सख़्त है वह देग़ में पक़ा देने से ज़्यादा सख़्त है। अग़र मुर्दे क़ब्र से उठकर मरने की तक़लीफ़ बताए तो कोई शख़्स दुनिया में लज़्ज़तों आराम से वक्त नहीं गुज़ार सकता और मीठी नींद नहीं सो सकता।

हज़रत मूसा अलैह अस्सलाम का वाक़ेया

कहते हैं हज़रत मूसा आसलाम की जब वफ़ात हुई तो उनसे अल्लाह-ताला ने पूछा कि ए मूसा मौत को कैसा पाया ? उन्होंने अर्द की कि बारे इलाहा ! मैं अपनी जान को ऐसा देख रहा था, जैसे ज़िन्दा चिड़िया को आग पर इस तरह भूना जा रहा हो कि न उसकी जान निकलती हो, और न कोई उड़ने की सूरत हो। एक दूसरी रवायत में यह अलफ़ाज है कि ऐसी हालत थी जैसे ज़िंदा वक़री की ख़ाल उतारी जा रही हो। हज़रत आएशा रज़ी अल्लाह इनह से रवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सलअल्लाह अलैह वसल्लम पर निज़ा का वक़्त आया तो एक पानी का भरा हुआ प्याला हूज़ूर के पास रखा था। हुज़ूर अपना दस्ते मुबारक़ बार-बार प्याले में डालते और अपने मुंह में डालते और फ़रमाते इलाही। निज़ा की सख़्ती में मेरी मदद फरमा। हज़रत उमर रज़ी अल्लाह इनह ने हज़रते क़ाब से फ़रमाया कि मौत की कैफ़ियत बयान करो। उन्होंने अर्ज़ किया कि या अमीरुल मोमिनीन। जिस तरह एक कांटेदार टहनी को आदमी के अंदर दाख़िर कर दिया जाए। फ़िर एक दम उसको खींच लिया जाए, उस तरह से जान खींची जाती

है ।

ऐ ! अल्लाह मौत की सख्तियों के इस मौका में मेरी मदद फ़रमा ।

अमीन या रब्बुल आलिमीन

मलिकुल मौत (इज़राईल)

मौत की सख़्ती और निज़ा की तल्खी के अलावा मलिकुल मौत और उसके मददगार फ़रिश्तों की हैबतनाम सूरतों का ख़ौफ एक अलग कड़ी मंजिल है कि जिस सूरत में वह गुनाहगारों की जान निकालते हैं । उन की ऐसी डरावनी सूरत होती है कि बड़े से बड़ा ताक़तवर आदमी भी उन के देखने की ताब नहीं ला सकता । किसी में भी उन को देखने की ताब नहीं जिन से अन क़रीब आदमी को वास्ता पड़ने वाला है मगर आदमी है कि उससे ग़ाफिल है । अपने लज़्ज़तों आराम में मशग़ूल है । कभी सरसरी तौर पर या किसी दूसरे की जान निकलती देखकर भी उसे को कभी ख़्याल नहीं आता ।

हज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम का वाकेया:—

एक दिन हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैह अस्सलाम ने मलिकुल मौत से फ़रमाया कि जिस सूरत में तुम नाफ़रमान और फ़ाजिर लोगों की जान निकालते हो वह मुझे दिखाओ। मलिकुल मौत ने अर्ज़ किया हज़रत आप उस को देखने की ताब और सहार न ला सकेंगे।

हज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम ने फ़रमाया नहीं मैं देखने की सहार रख सकूंगा।

इस पर हज़रत इज़राईल ने अर्ज़ किया कि अच्छा आप दूसरी तरफ़ मुंह फेर लीजिये।

इज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम ने दूसरी तरफ़ मुंह फेर लिया। उस के बाद हज़रत इज़राईल ने अर्ज़ किया कि या हज़रत अब देख लीजिए।

हज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम ने जब उधर देखा तो एक बड़ा काला आदमी, देव शक्ल जिसके बाल बहुत बड़े-बड़े और निहायत बदबू दार कपड़े और उस के मुंह और नाक से आग की लपटें निकल रही थीं। हज़रत इब्राहीम को यह देख कर

ग़श आ गया ।....बहुत देर के बाद होश आया तो मलिकुल मौत अपनी पहली सूरत में थे ।

हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया कि अगर फ़ाजिर व नाफ़रमान शख़्स के लिए कोई दूसरी आफ़त और मुसीबत न होती तब भी यह सूरत ही उस की आफ़त और मुसीबत के लिए काफी थी ।

यह फ़ासिक़ो, फ़ाजिरों, गुनाहगारों और नाफ़रमानों का हाल है ।

अब अल्लाह के नेक बन्दों और फरमांबरदारों का हाल सुनिये । अल्लाह तआला के नेक और फरमोबरदार बन्दों की रूह क़ब्ज़ करने के वक्त वह बहुत ही अच्छी और बेहतरीन सूरत में हाज़िर होते हैं ।

हज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम से ही यह नक़ल किया गया है कि उन्होंने फिर मलिकुल मौत से फ़रमाया कि जिस हाल में तुम नेक बन्दों की जान निकालते हो वह हाल भी दिखाओ ।.........तो उन्होंने देखा कि एक खूबसूरत जवान बेहतरीन लिबास पहने हुए और खुशबू में बसा हुआ सामने मौजूद है । हज़रत इब्राहीम अलैह अस्सलाम ने फ़रमाया कि मोमिन और फ़रमां बरदार के लिए अकसर मरते वक्त इस सूरत

के अलावा कोई भी फ़रहव व ख़ुशी की चीज़ न हो तो यही काफ़ी है ।

नेकों की मौत:-

हदीस शरीफ़ में आया है कि जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह-ताला जब किसी बंदे से खुश होता है तो वह मलिकुल मौत से फ़रमाता है कि ऐ ! मलिकुल मौत फ़लाबंदे की रूह को ले आओ। ताकि मैं उसको राहत और आराम पहुँचाऊँ, इसका इम्तिहान हो चुका है। मैं जैसा चाहता था, वह वैसा ही क़ामयाब निकला कि उसने मेरे सब अहक़ाम को पूरा कर दिखाया। इस हुक्म के बाद मलिकुल मौत उस नेक़ बंदे के पास आते हैं और पाँच सौ फ़रिश्ते उनके साथ होते हैं। हरेक फ़रिश्ता उस बंदे को ऐसी खुशख़बरी देता है, जो इससे पहले क़िसी दूसरे ने नहीं दी। उनके पास खुश्बूदार रेहान की टहनियाँ ओर ज़ाफ़रान की जड़ें होती हैं, और वह सब फ़रिश्ते दो कतारों में लाइन लगाकर उसके पास खड़े हो जाते हैं।

इब्लीस का रोना:-

उस नेक़ बंदे के साथ अल्लाह-ताला की मेहरबानी और फ़ज़लो-करम देखकर इब्लीस अपना

सिर पकड़कर रोना शुरू कर देता है। उसकी आवाज़ सुनकर उसके ख़ादिम व नौकर शीतोंगड़े दौड़कर आते और आकर पूछने लगते हैं कि ऐ ! हमारे आका क्या हो गया ? वह कहता है क़मबख़्तो ! देखते नहीं यह क्या हो रहा है । तुम कहाँ पर गए थे ? वोह कहते हैं ऐ हमारे सरदार ! हमने इसे गुमराह करने के लिए बहुतेरी कोशिश की । मग़र यह गुनाहों से महफ़ूज़ ही रहा और हमारे दाव-पेंच में न अया ।

एक दूसरी खायत में है कि इज़रत तैय्यबदारी रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि अल्लाह ताला मलिकुल मौत से फ़रमाते हैं कि तुम मेरे कलावली के पास जाओ और उसकी रुह ले आओ। मैंने उसका खुशी और ग़म दोनों में इम्तिहान ले लिया है । वह वैसा ही निकला जैसा मैं चाहता था । जाओ उसको ले आओ ताकि दुनिया की तक़लीफों से उसको राहत मिल जाए। मलिकुल मौत पाँच सौ फरिश्तों की ज़मात के साथ उसके पास आते हैं। उन सबके पास ज़न्नत के क़फ़न होते हैं। उनके हाथों में रिहान के गुलदस्ते होते हैं हर एक में बीस रंग होते हैं । और हर रंग में नई खुश्बू होती है । और एक सफ़ेद रेशमी रुमाल में महक़ता हुआ मुश्क़ होता है। मलिकुल-मौत उसके सिरहाने बैठते हैं और फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से

घेर लेते हैं और उसके ज़िस्म के हर हिस्से में अपना हाथ रख़ते हैं, और मुश्क़ वाला रुमाल उसकी ठोड़ी के नीचे रख़ते हैं, और ज़न्नत का दरवाज़ा उसकी नज़र के सामने खोल दिया जाता है। उसके दिल को नई-२ चीज़ों से बहलाया जाता है। जिस तरह कि बच्चे के रोन पर उसके घरवाले तरह-२ की चीज़ों से उसका दिल बहलाते हैं। कभी हूरें उसके सामने कर दी जाती हैं कभी वहां के फ़ल और क़भी वहाँ के. बेहतरीन लिबास। गर्ज़े की तरह-२ की चीजें उसके सामने कर दी जाती हैं। उसकी हूरें (बीवियों) खुशी में आक़र कूदने लगती हैं। यह सब नज़्जारे देखक़र उसकी रूह बदन में फ़ड़क़ने लगती है जैसे जानवर पिंज़रे से बाहर निकलने को फ़ड़कता है।

मलिकुल मौत की गुफ्तगु:-

मलिकुल मौत उससे कहता है कि ऐ मुबारक रूह ! चल ऐसी बोरियों की तरफ़ जिनमें कांटा नहीं, और ऐसे केलों की तरफ़ जो नौ बनो लगे हुए हैं, और ऐसे साए की तरफ़ जो बहुत ग़हरा और वसीय है, और पानी बह रहा है। मलिकुल मौत ऐसी नम्री से बात करता है जैसे माँ अपने बच्चे से करती है। इस वज़ह से कि उसको मालूम है कि यह रूह

अल्लाह ताला के यहाँ मुक़र्रब है। और अल्लाह ताला इस रूह से खुश हैं। इसलिए वह इस रूह के साथ निहायत लुत्फ़ों मोहब्बत के साथ पेश आता है ताकि अल्लाह पाक़ इस बंदे से भी खुश हो। लिहाज़ा वह रूह बदन से ऐसी आसानी के साथ निकलती जैसा कि आटे में से बाल निकल जाता है।

रूह *निकलने के बाद:-*

जब रूह निकल जाती है तो सब फरिश्ते उसको सलाम करते हैं और उसको जन्नत में दाख़िल होने की खुशख़बरी देते हैं। पर जिस वक्त रूह बदन से जुदा होती है तो वोह बदन से कहती है कि अल्लाह ताला तुझे जज़ाए खैर दे। तू अल्लाह पाक़ के हुक़्मों को पूरा करने और उसकी इबादत और हिताजत में जल्दी करने वाला था और उसकी नाफ़रमानी में सुस्ती करने वाला था। लिहाज़ा आज का दिन तुझे मुबारक़ हो कि तूने खुद भी अज़ाब से निज़ात पाई और मुझे भी उससे निज़ात दी। इसी तरह बदन रुख़सत के वक़्त रुह से कहता है कि इस जुदाई पर ज़मीन के वोह हिस्से रोते हैं जिन पर वह इबादत किया करता था और आसमान के दरवाज़े रोते हैं जिनसे उसके आमाल ऊपर जाया करते थे। और जिनसे उसका

रिज़्क़ इतराता था ।

बाद मरने के:–

रुह के निकलने के बाद पाँच सौ फ़रिश्ते मय्यत के पास ज़मा हो जाते हैं और जब नहलाने वाले मय्यत को करवट देने लगते हैं और जब वह क़फ़न पहनाते हैं तो इससे पहले वह अपना लाया हुआ क़फ़न पहना देते हैं। जब वह खुश्बू मलते हैं तो वोह, फ़रिश्ते अपनी लाई हुई खुश्बू मल देते हैं इसके बाद वोह उसके दरवाज़े से क़बर तक़ दोनों तरफ़ लाईन लगाकर खड़े हो जाते हैं और उसके जनाज़े का दुआ और इस्तग़फ़ार से इस्तक़बाल करते हैं ।

शैतान का रोना:–

यह सब मंज़र देख़कर शैतान इस क़द्र ज़ोर से रोता है कि उसकी हड्डियाँ टूटने लगती हैं और अपने लश्क़र से कहता है कि आह ! तुम्हारी नास हो जाए, यह तुमसे कैसे छूट गया ? वह कहते हैं कि हमारे बादशाह ! यह मासूम और बेगुनाह था ।

तम्बीह:–

यह सब वाक़यात और हालात हमको इस दुनिया में निज़ा और मौत के वक्त से दिखाई नहीं

देते । हम इन बातों को पढ़–सुनकर और मरने वाले की हालत देखकर सिर्फ़ सरसरी तौर पर ख़्याल करे, फौरन भुला देते हैं और अपने दिल से दूर कर देते हैं, कि बस इसी मरने वाले को मरना था । हमको कौन सा मरना है ? हमें तो इसी दुनिया में रहना और मज़े उड़ाना है । थोड़ी देर और वक़्ती तौर पर अफ़सोस होता है और बस–

राम–राम सत्य है, मुर्दा खुदा दे हथ है । उस दिन पता चलेगा जिस दिन इन वाक़यात से दो–चार होना पड़ेगा । उसके बाद जब हज़रत मलिकुल मौत उसकी रुह लेकर ऊपर जाते हैं तो हज़रत जिबराईल अलैह असल्लाम सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के साथ उसका इस्तक़बाल करते हैं । यह फ़रिश्ते अल्लाह–ताला की तरफ से खुश्ख़बरी देते हैं । इसके बाद जब मलिकुल मौत उसको अर्श तक ले जाते हैं तो वहां पहुंचकर रुह सिज़दे में गिर जाती है । कि मेरे बंदे की रुह

को मेह ले जाओ

क़बर में नेक आमाल की हमदर्दी:–

जब बंदे की लाश को क़ब्र में रखा जाता है

तो उसकी नमाज़ उसके दायी तरफ़ खड़ी हो जाती है, रोज़ा बांयी तरफ़ खड़ा हो जाता है। कुरान मज़ीद की तलावत और अल्लाह-ताला का ज़िक्र सिर की तरफ़ खड़ा हो जाता है और ज़मात के साथ नमाज़ पढ़ने को दो कदम चलते हैं, वह पांव की तरफ़ खड़े हो जाते हैं।

इसके बाद अज़ान उस क़ब्र में अपनी ग़रदन निक़ालता है और मुर्दे तक पहुँचना चाहता है। अग़र वह दांयी तरफ़ से आता है तो उसको नमाज़ कहती है परे हट ! खुदा की क़सम यह दुनिया में बहुत मुसीबत उठाता रहा। अभी ज़रा आराम से सोया है। फ़िर अजाब बोई तरफ से आना चाहता है। तो रोज़ा इसी तरह उसको हटा देता है। फ़िर वोह सिर की तरफ़ से आता है। तो तलावते कुराने मज़ीद और ज़िक्र इलाही उसको रोक़ देते हैं कि इधर तेरा रास्ता नहीं है। ग़रज यह कि वह जिस तरफ़ से भी आना चाहता है, उसको रास्ता नहीं मिलता। यह इस वास्ते कि अल्लाह-ताला के इस दोस्त को इबादतों ने जो उसने अपनी जिंदग़ी में दुनिया में रहक़र की थीं, घेर रखा है। लिहाज़ा हज़ाब आजिज़ होक़र वापस चला जाता है। उसके बाद सब्र जो एक कोने में खड़ा होता है वोह इन इबादतों से कहता है कि मैं तो इस इंतज़ार

में था कि अगर किसी तरफ़ की इबादत में कुछ क़मजोरी हो तो मैं उस तरफ़ से हमदर्दी करूं, मगर अलहम्द लिल्लाह तुमने ही मिलकर इसको दफ़ा कर दिया, लिहाज़ा अब मैं, आमाल तुलने के तराज़ू में इसके काम आऊंगा।

एक रवायत में इसी को पंजाबी अशआर में इस तरह नक़ल किया गया है।

जेहड़े पढ़न नमाज़ा मोमिन करव ज़कात अदाई
ओ राहांदी, मैं सिफ़त सुनावो विच हदीस जो आई
जद फ़रिश्ते सिर वल आवन, अगों नमाज़ पुकारे
इस सिर सिजदे बहुते कीते, खौफ़ खुदा दे मारे
कालियां रांता सिजदे कीते विच बारगाहे इलाही
इह सिर लायक़ नहीं अज़ाबा दा लेख किताबा भाई
तां फेर ओह फ़रिश्ते दोवीं सज्जी तरफ़ों आवन
सदका नेड़े आन न देवे, तासिर ओहहट जावन
खब्बी तरफ़ो आवन ता फिर करदा सिजदा मनाही
पैर पियादा तरफ़ नमाज़ा हुन्दा सी इस राही
लाइक एह अज़ाब नहीं तद उस नूं पकड़ जगावन
पाक मोहम्मद नूं की आंखें एह सवाल इस पावन
ओ आंखे ओह नबी खुदा दा अशहद कलमा पढ़दा
नाल आराम सुलावन उस नूं जन्नत खुशियों करदा।

क़ब्र में:—

क़ब्र में दो फ़रिश्ते मुनकिर और नकीर आते हैं जिन की आंखें बिजली की तरह चमकती हैं और आवाज़ गरज की तरह होती है। उन के दान्त गाय के सीगों के तरह बाहर को निकले हुए हैं। उन के मुंह से आग की लपटें निकलती हैं। बाल इतने बड़े कि पावं तक लटके हुए होते हैं। उन के एक मोंढ़े से दूसरे मोढे तक इतना फ़ासला कि कई दिन में चल कर ख़त्म हो।

मेहरबानी और नरमी उनके पास से भी नहीं गुज़री लेकिन सख़्ती का मुआमिला मोमिनों के साथ नहीं करते लेकिन फिर भी ऐसी डरावनी शक्लो सूरत की हैबात ही क्या कम है ?

इन दोनों के हाथ में एक बड़ा भारी लोह का हथौड़ा होता है कि उस को अगर तमाम इन्सान मिल कर उठाना चाहें तो उठाना तो दर किनार वह उस को हिला भी नहीं सकते। वह आकर मुर्दे से कहते हैं बैठ जा मुर्दा एक दम उठकर बैठ जाता है और कफन उसके सर से नीचे सरक जाता है।

सवालाते मुनकिर व नकीर :-

वह सवाल करते हैं (१) तेरा रब कौन है (२) तेरा दीन क्या है (३) तेरा नबी कौन है ? अगर मुर्दा नेक है तो कहता है मेरा रब अल्लाह है जो वहदते लाशरीफ है । मेरा दीन इस्लाम है । मेरे नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सलअल्लाह वसल्लम हैं । यह सुन कर वह दोनों कहते हैं तू ने सच कहां ।

इम्तिहाने क़ब्र के जवाबात:-

हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर रज़ी अल्लाह इनहा से श्वायत है कि हुजूर नबी करीम सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने फ़रमाया कि "लोगों तुम इन कलमात को कसरत से पढ़ा करो क्योंकि इस के बारे में क़ब्र में तुम्हारा इम्तिहान होगा । वह कलमात यह हैं.................

(यानी अल्लाह के सिवा कोई माजूद नहीं है । मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और बेशक अल्लाह हमारा रब है और इस्लाम हमारा दीन है और मोहम्मद हमारे नबी हैं ।)

अगर बन्दा सही सही जवाब देता है तो फ़रिश्ते कहते हैं "तूने सच और सही कहा ? तो उस की क़ब्र की दीवारों को सब तरफ से हटा दिया जाता है। जिस से वह चारों तरफ़ से बहुत ज्यादा वसी हो जाती है।

इसके बाद फ़रिश्ते कहते हैं कि "अल्लाह के दोस्त ! वह जगह तुम्हारे रहने की है। इस लिये कि तुम न अल्लाह की इबादत व फ़रमाबरदारी की है। सर ऊपर उठाओ।" मुर्दा जब ऊपर सर उठाता है तो उसे ज़न्नत का दरवाज़ा नज़र आता है।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि क़सम है उस जाते पाक़ की जिस के कब्ज़े में मेरी जान है कि उस को इस वक्त ऐसी खुशी होती है जो कभी ख़त्म न होगी।

उस के बाद वह फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पांव की तरफ़ देखो। जब वह देखता है तो उसे दोज़ख़ का दरवाज़ा नज़र आता है। वह फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ वली अल्लाह ! तूने इस दरवाजे से निज़ात पाई। इस वक्त भी मुर्दे को ऐसी खुशी होती है जो कभी ख़त्म न होगी। इस के बाद उस की कब्र में सत्तर (७०) दरवाज़े ज़न्नत के खुल जाते हैं जिन

में से वहां की ठण्डी ठण्डी हवाऐं और खुश्बूऐं आती रहती हैं और वह क़यामत तक इन्हीं बहारों में रहेगा। कैसा खुशनसीब होगी वह रूह जिस के साथ अल्लाह तआला अपनी मेहरबानी और रहमो करम का सलूक व मामला फ़रमाएगा।

अल्लाहतआला की नाफ़रमानी करने वालों की मौतः–

जब अल्लाह तआला के नाफ़रमान बन्दे की मौत का वक्त आता है तो अल्लाह तआला मलिकुल मौत से फ़रमाते हैं कि मेरे दुश्मन के पास जाओ और उस की जान निकाल लाओ। मैंने इस पर हर क़िस्म की फरीख़ी की। अपनी नैमतें दुनिया में चारों तरफ से उस पर बरसाई मगर वह मेरी नाफ़रमानी से फिर भी बाज न आया। लिहाज़ा आज उस को लाओ ताकि मैं उस को सज़ा दूं और इस नाफ़रमानी का मज़ा उसे चखाऊं।

मलिकुल मौत बहुत बुरी सूरत में उस के पास आते हैं। इस सूरत में कि उन के बारह आंखें होती हैं। उनके पास एक गुर्ज़ (लोहे का मोटा सा डण्डा)

जो जहन्नुम की आग का बना हुआ होता है, जिसमें कांटे होते हैं। उस के साथ पांच सौ फ़रिश्ते जिन के साथ तांबे का एक टुकड़ा होता है और हाथों में जहन्नुम की आग के बड़े बड़े अंगारे और आग के कोड़े होते हैं जो दहक्ते होते हैं। मलिकुल मौत आते ही वह गुर्ज़ उस पर मारते हैं जिस को कांटे उस के हर रग रेशे में घुस जाते हैं। फिर वह उस को खींचते हैं और वाकी फ़रिश्ते उन कोड़ों से उस के मुंह और मुंह के नीचे मारना शुरू कर देते हैं जिससे वह मुर्दा ग़श खाने लगता है। वह उस की रूह को पांव की अंगुलियों से निकाल कर एड़ी में रोक लेते हैं। और पिटाई करते हैं। फिर एडी से निकाल कर घुटनों में रोक देते हैं। फिर वहां से निकाल कर जगह जगह इसलिये रोक लेते हैं ताकि उसको देर तक तकलीफ़ पहुंचाई जाए। पेट में रोक लेते हैं फिर वहां से खीचे कर सीने में रोक लेते हैं। फिर फरिश्ते उस तांबे और जहन्नुम के अंगारों को उस की ढोड़ी के नीचे रख देते हैं और फिर मलिकुल मौत उस से कहते हैं—

'ऐ मलऊन रूह निकल और इस जहन्नुम की तरफ़ चल कि जिस के बारे में अल्लाह तआला ने कुराने मजीद में फ़रवाया है कि वह लोग आग और खौलते हुए पानी में और सियाह धुएं में जो न ठण्डा

होगा न फ़रहत बख़्श बल्कि बहुत तकलीफ़ देह होगा रखेंगे। फिर जब रूह उस के बदन से रूख़्सत हो जाती है तो बदन से कहती है कि अल्लाह तआला तुझे बुरा बदला दे क्योंकि तू मुझे अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसकी इताअत में सुस्ती करता था। तू खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यहीं बात बदन रूह से कहता है और ज़मीन के वह हिस्से ज़िन पर वह अल्लाह तआला की नाफ़रमानी किया करता था उस पर लानत भेजते हैं और शैतान के लशकर दौड़े हुए अपने सरदार इब्लीस के पास आकर उस को खुशखबरी सुनाते हैं कि एक आदमी को जहन्नुम पहुंचा दिया।

ना फ़रमान की कब्र में पेशी:–

जब नाफ़रमानी करने वाला कब्र में रखा जाता है तो कब्र उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां दूसरी तरफ़ की पसलियों में घुस जाती हैं। उस पर काले सांप मुसल्लत कर दिए जाते हैं जो उस की नाक और पांव में काटना शुरू कर देते हैं यहां तक कि दरमियान में दोनों तरफ़ के सांप आकर मिल जाते हैं। फिर उस के पास दो फ़रिश्ते

आते हैं मुनकिर और नकीर जिन का बयान ऊपर भी आया है । वह आ कर उसे पूछते हैं–

"तेरा रब कौन है ?

तेरा दीन क्या है ?

तेरा नबी कौन है ?"

वह उन के हर सवाल के जवाब में कहता है हाय हाय मैं कुछ नहीं जानता । उस के इस जवाब पर उस को गुर्ज़ों से इस क़दर जोर से मारते हैं कि गुर्ज़ की चिंगारियां फैल जाती हैं । इस के बाद उससे कहते हैं कि ऊपर देख । वह ऊपर की तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा देखता है । जन्नत की बाग़ों बहार वहां से नज़र आती है । फरिश्ते उस नाफ़रमान से कहते हैं ऐ अल्लाह के दुश्मन ! देख अग़र तू अल्लाह की इताअत व फरमांबरदायी करता तो तेरा यह ठिकाना होता ।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़सम है उस ज़ाते पाक की जिसके कब्ज़े में तेरी जान है कि उस को इस वक्त ऐसी हसरत होती है कि ऐसी हसरत कभी न हुई होगी । फिर दोजख़ का दरवाजा खोला जाता है । वह फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दुश्मन यह तेरा ठिकाना है

इसलिए कि तूने अल्लाह की नाफ़रमानी की। इस के बाद ७७ दरवाजे ज़हन्नुम के उस की क़ब्र में खोल दिए जाते हैं। जिन से क़यामत तक गर्म हवाएं और धुआं उस को आता रहता है।

"ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं तेरी नाराज़गी से और तू मुझ को दोज़ख के अज़ाब से बचाइयों।

ऐ क़ब्र की पहली रात के पढ़ने वालो सुना:-

भाइयों ! यहां तक जो अर्ज़ किया गया है वह सब बन्दे की क़ब्र की पहली रात का बयान है। क़ब्र आख़िरत की पहली मंज़िल है। अगर बन्दा पहली मंजिल में निजात पा गया और पूरा उतर गया तो अख़िरत की मंज़िलें उस के लिए आसान हो जायंगी और अगर पहली मंज़िल ही में फंस गया तो मामला बहुत मुश्किल और कठिन होगा। बिला शुबा यह बात हम सब पर एक ना एक दिन ज़रूर आएगी और इस दुनिया की तमाम ज़िन्दगी का हिसाब होगा। इससे कोई बच या भाग नहीं सकता। सब को यह मंजिल और सफ़र दरपेश है। इसलिए भाइयों

और पढ़ने सुनने वालों से अर्ज़ है कि चन्द रोज़ा इस दुनियां में रह कर वह काम कर जाएं जिनसे आक़ा व मौला खुश हो जाए और आख़िरत की सब मंज़िले उस पर आसान हो जाएं और आख़िरत की सुर्खरूई और क़ामयाबी हासिल हो जाए। अज़ाबे क़ब्र से निज़ात मिल जाए । क्योंकि अज़ावे क़ब्र का मामला बहुत सख़्त है । अल्लाह-ताला उसको हमारे लिए आसान करे । इसी वज़ह से रसूल अल्लाह सलअल्लाह अलैह वसल्लम ने अपनी दुआओं में क़सरत से दुआ मांगी है । ताक़ि लोग भी क़सरत से दुआ मांगे हालांकि हुज़ूर तो मासूम और बेगुनाह हैं वोह वह तो हमको यह सबक़ सिख़ाकर गए है कि अज़ाने क़ब्र सख़्त है । इससे उसे और उस वक़्त को याद रखो और उससे अल्लाह-ताला की पनाह मांगो, इसी वज़ह से आपने फ़रमाया कि तुम ख़ौफ़ की वज़ह से मुर्दों को दफ़नाना छोड़ दोगे । अग़र मुझे यह डर न होता तो मैं अल्लाह ताला से दुआ करता कि तुम्हें अज़ाब क़ब्र सुना दे और दिख़ादे ।

नज़्म (खानग़ी)

त ऐ ! बशर जहाँ से जिस दम खानहोगा ।
कोई न साथ देगा और तू बेसामान होगा ॥
वक़्ते निज़ा सिरहाने आएगें, सब प्यारे ।
सूरत को देख़ तेरी रोएंगे ग़म के मारे ॥
यासीन जब पढ़ेंगे, तू नीमजान होगा ।
तू ऐ ! बशर जहां से जिस दम खान होगा ॥
आऐंगे, जब फ़रिश्ते लेने को जान तेरी ।
करेगी तब किनारा, यह झूठी शान तेरी ॥
उस वक़्त फ़िर हटा, सब यह तान, मान होगा ।
तू ऐं बशर जहां से जिस दम खान होगा ।
नहला के तुझको साथी, कसा के लिए चलेंगे ॥
पढ़कर जनाज़ा कफ़न का टुकडा तेरा निशान होगा ॥
तू ऐ बशर जहां से जिस दम खान होगा ।
होगी क़ब्र अंधेरी घबराएगा वहां तू ॥
आऐंगे जब फ़रिश्ते, डर जाएगा वहां तू ।
किसको पुकारेगा तू जब तेरा बयान होगा ॥
तू ऐ ! बशर जहां से जिस दम खान होगा ।
सरकारे दो जहां की तू ऐ दिल गुलामी करले ॥
दुनिया है, चंद, रोज़ा, नेक़ी से झोली भर ले ।
जन्नत में फ़िर तो बेशक़ तेरा मक़ान होगा ॥
तू ऐ ! बशर जहां से जिस दम खान होगा ।
कोई न साथ देगा और तू बेसामान होगा ॥

मौत का ज़ायक़ाः-

अल्लाह ताला ने फ़रमाया कि हर जानदार को एक न एक दिन ज़रूर मौत का ज़ायक़ा चखना है। फ़िर तुम सबको हमारे पास लौटकर आना है। (और दुनिया में किए हुए अपने आमाल का हिसाब देना है।)

(सूरा-ए-अक़बूत, पारा २१)

दोस्तो ! कभी तुमने तन्हाई में बैठकर यह भी सोचा है कि वोह दोस्त या यार जो पिछले दिनों, माहो साल में तुम्हारे साथ रहते थे, जिनसे तुम्हारी मजलिसें सजती थी, जिनके साथ रंगरलियाँ और ऐशोइशरत मनाई जाती थी, आज वह सब कहाँ गए ? जिस तरह से आज तुम अपने-२ कामों में मसरुफ़ हो जिस तरह से आज तुम्हें अपने काम से किसी वक़्त भी ख़ाना-खाने और दुनिया उक़बा की फ़िक्र करने की फ़ुरसत नहीं मिलती, कल वह भी इसी ताह, इस दुनिया में मशगूल रहते थे। जिस तरह तुम्हें सुबह और दिन और रात यही फ़िक्र है कि मिल जाए वैसा, ख़्वाह हो कैसा। उसी तरह से इन मरनेवालों का हाल था। इनको किसी वक्त भी थोड़ा-बहुत वक्त निकालकर इबादते इलाही करने और अपनी दिल

जमई करने की फ़ुरसत न मिलती थी। नतीजा यह कि अपनी अनमोल ज़िंदगी (जो के सरमाया-ए-आख़िरत थी) दुनिया के जाल और ऐश में फंसकर उसके समेटने और जमा करने पर कुर्बान कर दी। यहां तक कि इस हालत में मौत ने उन्हें आ दबोचा। जब मौत के पंजे में गिरफ़्तार हुए तो सब आरज़ूऐ और दिल के अरमान ख़ाक में मिल गए। इसी हालत में सब कुछ छोड़-छाड़ कर ज़मीन के नीचे जा दबे।

नज़्म दर ज़िक्रे मौत

न कोइ पेश चली न उज़्र न इनकार हुआ
जब बशर मौत के पंजे में गिरफ़्तार हुआ
सांस का कर न भरोसा तू ऐ गाफ़िल
यह तो चलता है समझ, चलने को तैयार हुआ
किस कदर मौत की नींद है मज़े की यारब
कि जो कोई सोया न फ़िर इस नींद से बेदार हुआ
कोई साथी न हुआ मर के बजुज़ ज़ेरे कफ़न
पहली मंज़िल से ही जुदा हर इक यार हुआ
जीते जी बहुत यार थे ''सूफी'' अपने
कब्र में एक भी आकर न मददगार हुआ

अब रोते हैं पछताते हैं। ज़बाने हाल से आहो

वाबेला करते हैं कि—कौन है हमारा ग़म ख़्वार इस दश्तो गुरबत में। कौन है हमारे बीवी बच्चों का कफील उन की तंगी और उसरत में ? कौन है जो हमारा हके सोहबल व दोस्ती अदा करे ?

आह ! कोई नहीं

तुम में से कोई इस का जवाब नहीं देता। तुम मुर्दे को जबरन व क़हरन उठा कर ले जाते हो। जाकर उसे क़ब्र में अकेले रखकर मनों मिट्टी डाल कर दबा देते हो। हाय यह कितनी मुसीबत और इबरत का मुकाम है क्या यह जानते नही कि मलिकुल मौत हर रोज़ हमारे इन्तज़ार और जुस्तजू में है। क्या यह नहीं सुना कि हम सब मौत का प्याला पीने वाले हैं और मौत की सवारी पर सवार होने वाले हैं। क्या यह कभी नहीं सुना कि अज़ाबे कब्र निहायत सख़्त और दर्दनाक है। और पुले सिरात की राह जाल से ज़्यादा बारीक़ और तलवार से ज़्यादा तेज़ है। क्या तुम्हारे सामने मौत ने किसी कमज़ोर, किसी ग़रीब, किसी बीमार व लाचार पर रहम किया और उसे छोड़ दिया या किसी बड़े माल दौलत वाले, हाकिम व बादशाह, राज ताज और दबदबे वाले या किसी ज़ालिमों जाबिर उन के बड़े होने के सबब से उन को मोहलत दी या

किसी शादी या ग़मी के मौके पर मौत ने कभी तरस और रहम खाया ? हरगिज़ नहीं । मौत किसी को नहीं छोड़ती बल्कि हर दम दम निकालने को तैयार है । यह किसी वक़्त हाथ नहीं मोड़ती ।

मौत किसी का लिहाज़ पास नहीं करती :–

भाइयों ! यह दुनिया जाए आज़माइश है । मुक़ामे ऐशो आशाइश है । चार दिन की ज़िन्दगी है । खुदा की इबादत की तो ख़ैर वर्ना सरासर शरमिन्दगी है कोई नबी हो या बली, बूढ़ा हो या जवान, शाह हो या वज़ीर, काफ़िर हो या मोमिन, नेक हो या बद, अमीर हो या फ़कीर, सग़ीर हो या कबीर, आलिम हो या जाहिल–गरज़ कोई कैसा ही क्यों न हो मौत किसी का लिहाज़ नहीं करती सब के लिए बराबर है ।

रहना नहीं किसी को चलना है सब को आख़िर
दो चार दिन की ख़ातिर या घर हुआ तो क्या हुआ

जो महलों और कोठियों में बड़े आराम से रहते हैं । लम्बी तान कर सोते हैं वह मरने में बजाय दूध के खूने ज़िगर पीते हैं और ज़ारो क़तार रोते हैं । अंगूठे हसरत के चाट रहे हैं और अंगूलियां अफ़सोस की काट रहे हैं ।

आह ! जो अभी यारो आश्ना के साथ हंस रहे थे, आंख फ़ेरी तो क्या देख कि गोर में पड़े हैं। सांप और बिच्छू उन को डस रहे थे। अल्लाह की शान है कि ज़मान की हालत अजब करिश्मा दिखा रही है कि एक ही शहर है, एक ही जगह है कि

कहीं गुलाब के फूल हैं और कहीं कांटे हैं।
कहीं शादी का वलीमा, कहीं मय्यत के फूल ॥

कहीं कोई निहायत शौक़ से नई दुल्हन को पाल्की में बाजा बजवाता अपने घर ले जा रहा है और कहीं कोई अपनी नवजवान, खूबसूरत एक रात की ब्याही हुई दुल्हन का जनाज़ा लिये जा रहा है। इत्तिफ़ाक़ से बाज़ार के बीच में मय्यत की बारात और शादी की बारात का मेल हुआ।

वाह ! मौला तेरी शान कि एक तरफ़ खुशी, एक तरफ़ ग़म, एक तरफ़ खाना, आबादी, दूसरी तरफ़ ख़ाना बरबादी। एक तरफ़ डोली में उस की छोटी बहनें और सहेलियां पान खाती और खुशियां मनाती हैं और दूसरी तरफ़ चारपाई के साथ छोटे-छोटे भाई बहन जनाज़े का पाया हाथों से पकड़े रोते चले जा रहे हैं।

कोई अपने बेटे की खुशी में अक़ीका के लिए

बकरा लिये चला जाता है । कोई अपने चांद से फ़रज़न्द का जनाज़ा लिये चला जाता है । अक़ीक़ा वाला गोश्त अपने रिश्तेदारों को खिलायेगा और दूसरा अपने कलेजे के टुकड़े को क़ब्र की ख़ाक पर लिटा कर उस के गोरे बदन का गोश्त क़ब्र के कीड़ों को खिलाएगा ।

कोई अपने दामाद के लिये दुशाला खरीदने चला जाता है और कोई अपने बहनोई के लिए बाज़ार से कफ़न का कपड़ा लिए चला जाता है । किसी को चौकी पर बिठा कर बदन पर शादी का उबटना मला जाता है और किसी के बदन को गुसल के तख्ते पर लिटा कर पसलियों को लेप छुड़ाया जाता है । किसी के इतरे सुहाग लगाया जाता है और किसी के गुस्ल के पानी में काफूर मिलाया जाता है । कोई मख़मली बिछौनों पर सोता है, कोई क़ब्र की ख़ाक में पड़ा रोता है । किसी के महल सरा में हजारों शमऐं जलाई जाती हैं, कहीं क़ब्र पर कोई दिया टिमटिमाता है ।

हज़्रत फ़ातिमा का जनाज़ा:–

हज़रत फ़ातिमा रज़ी उल्ला इनह की वफ़ात के बाद जब रात को आप का जनाज़ा क़ब्र में आया

तो अबूज़र ग़फ्फारी ने जोशे ग़म में क़ब्र से ख़िताब करते हुए फरमाया कि ऐ क़ब्र ! तुझे कुछ ख़बर भी है कि हम किस का जनाज़ा ले आए हैं। यह बेटी है हज़रत रसूल अल्लाह की, यह बीवी है हज़रत अली मुर्तज़ा की, यह वालिदा है हज़रत इमाम हसन हुसैन की। यह फ़ातिमा है जन्नत की बीवियों की सरदार।

क़ब्र से आवाज़ आई ऐ अबुज़र ! क़ब्र हस्ब न सब बयान करने की जगह नहीं। यहां तो सिर्फ़ आमाले सालिहा का ज़िक्र है। यहां तो वही आरामो राहत पायेगा जिस के आमाल अच्छे होंगे, जो सच्चे दिल से अल्लाह और उस के रसूल को फ़रमाबरदार होंगे।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा से फ़रमाया कि ऐ मेरी प्यारी बेटी ! तू खुद नेक अमल कर। कभी इस ख़्याल में न रहना कि मैं मोहम्मद की बेटी हूं और बख़्शी जाऊंगी।

जब फ़ातिमा के हक में यूं फरमाये नबी अकरम तो मेरे भाइयों ग़ौर करने का मुक़ाम है कि जो लोग यह कह कर जान छुड़ा लेते हैं कि हम फलां पीर

साहब या फलां मौल्वी साहब का पल्ला पकड़ कर जन्नत में चले जाएंगे वह अपने आप को किस कदर धोखा दे रहे हैं और अपने नफ़स और शैतान के कहने में आकर अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर रहे हैं। जब हुज़ूर ने अपनी बेटी के हक में यूं फ़रमाया तो औरों का क्या ठिकाना ? लिहाज़ा ऐ दोस्तो ! दुनिया के चक्कर में पड़ कर खुदा की याद से ग़ाफ़िल न हो और हालत अपनी अब भी दुरूस्त कर लो कि अब भी वक्त है।

मौत का आना ज़रूरी है :-

दोस्तो ! कभी आप ने तन्हाई में बैठकर सोचा कि हम जैसे कितने ही इस दुनिया-ए-फ़ानी में आए और चले गए और इसी तरह इस फ़ानी दुनिया का यह सिलसिला कब तक चलता रहेगा ? और इसी तरह न जाने कब हमारा भी पत्ता कट जाए और क़ब्र में ठिकाना हो जाए। अग़र खुदाए पाक़ को हुक़्म अभी बैठे बैठे आ जाए तो हमें इसी वक्त चलना पड़ेगा तो फिर इन्सान हज़ार कोशिश करे मौत किसी की नहीं सुनती और यह बात भी है कि मौत बुलाने से कभी नहीं आती। यह बिन बुलाए ही आती है और जब आती है तो फिर आदमी को साथ लिए बग़ैर

वापस नहीं जाती न ही टाले से टलती है।

आह ! यह इन्सान किस क़दर कमज़ोर है ? ज़िन्दगी और मौत में उलझा हुआ और एक लम्हा भी अपनी ज़िन्दगी का भरोसा न रखने वाला यह इंसान है, मगर बावजूद इस हालत और कमज़ोरी के हाल यह है कि सामान बरसों के हो रहे हैं। दुनिया के कामों में इस क़दर मसरुफ़ है कि अपने पैदा करने वाले ख़ालिक़ और मालिक़ और मौतो क़ब्र को कभी भूलकर भी याद नहीं करता और हिर्सो तमन्ना का यह हाल है कि अगर क़ारूं का खज़ाना भी मिल जाए तो उस पर भी सब्र नहीं बल्कि और भी ज़्यादा मालो-दौलत ज़मा करने की हवस बढ़ती है। और ज़्यों-ज़्यों यह क़ब्र में जाने के नज़दीक़ होता है। हिर्सो तमा उसकी ज़वान होती है–

यही है सबब़ नफ़्ज़ का ।
मेरी आज हाज़ित खा न हुई ॥

इतना भी सोचने के लिए तैयार नहीं कि हम इस चन्द रोज़ा ज़िन्दगी के लिए इतनी जान मारकर और तरह-तरह के हेर-फेर झूठ बोल, कम तोल, मक़रो फ़रेब और अपनी जान पर ज़ुल्मो सितम करके मालो-दौलत इकट्ठा कर रहे हैं। यह हमारे किस

काम आएगा। क्या यह हमारे साथ जाएगा? जिसके पीछे हमने दीन को खोया और अपनी आख़िरत को बिगाड़ा। तो ऐसी दुनिया और माल से क्या हासिल? इससे बेहतर तो यह है कि हम इस चंद रोज़ा ज़िन्दगी में अपने पैदा, करने वाले आक़ा और मौला को याद करें और इतनी भाग-दौड़ अपनी आख़िरत और क़ब्र के लिए करें। उसे कभी न भूले और जो दौलत ज़मा कर रखी है। उससे ग़रीबों के लिए मदद करे और उसे नेक कामों के लिए ख़र्च करें ताकि आक़िबत बख़ैर हो और वहां हमारे काम आए। हमारे इस ज़श्न को जिसे हलाले-हराम खिलाकर खूब मोटा ताज़ा कर रहे हैं। क़ब्र के कीड़े-मकोड़े खा जाऐंगे। इसलिए मेरे दोस्तों बेहतर यह है कि तुम ऐसे काम कर जाओ कि कल तुम्हारे काम आ सके और मरने के बाद भी सब तुम्हें याद करे वरना याद रखो तुम्हारे यह मालो-दौलत रिश्तेदार और दोस्त-यार, मां-बाप, बहन-भाइयों, बेटा-बेटी, पोता-पोती गरज़ जितने भी इस दुनिया के जिंदगानी के साथी हैं, मरने के बाद आखिरत में किसी काम न आ सकेंगे। इरशादे-खुदा-बंदी है कि जिस दिन न माल काम आएगा और न बेटे। जो शख़्स खुदा ताला के पास पाक़ दिल लेकर आएगा, यह अम्न

और सुकून पा सकेगा—

खेत, मकान ते बाग़ बहारा ।
छड जाएगा, सुन्दर नारा ॥
ख़ालिस उमला, बाहजो कोई ।
यार न मददगारी ॥

सिर्फ़ वही तुम्हारे नेक़ आमाल जो तुमने दुनिया की इस ज़िंदगानी में किए होंगे। वहीं, तुम्हारे काम आएंगे।

किसी के साथ जाता नहीं है, मालो-जर ।
और काम आते नहीं है, पिसरो, पिंदर ॥
आख़िर को एक दिन यह सब मर जाएंगे ।
मर कर इस दुनिया में फ़िर नहीं आएंगे ॥
मालो-औलाद के प्यार के छोड़े जाएेंगे ।
रिश्तेदारों की उलफ़त को तोड़ जाएंगे ॥
अक़ेले को क़ब्र में दबाकर सब आजाएंगे ।
ख़ेशो क़बीला मलमल के हाथ सब रह जाएंगे ॥
अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएंगे ।
मर कर भी चैन न पाया, तो किधर जाएंगे ॥

याद रखो !

अग़र तुम्हारे पास मालो दौलत, ज़मीनो-ज़यादाद और मक़ानो-दुकान नहीं भी है तो तुम इस पर भी

खुदा का शुक्र अदा करो कि कल कयामत के रोज़ तुम्हें हिसाब देने में आसानी रहेगी। वहां ज़र्रे ज़र्रे का हिसाब देना होगा। वहां नेक आमाल के सिवा कोई साथी न होगा। सब को अपनी-२ पड़ी होगी कि ऐसी मुसीबत की घड़ी होगी। अल्लाह तआला उस दिन हम सब पर रहम फ़रमाए आमीन!

लिहाज़ा ग़ाफ़िलों ग़फ़लज से होशियार हो जाओ। दुनिया की ज़िन्दगी और बहार चार दिन की है। सफरे आख़िरत क़रीब है। वहां का सरमाया और खर्च ज़मा कर लो। अल्लाह और उस के रसूल के हुक्मों की ताबेदारी करो। अपने बुरे आमाल से तौबा किया करो। मौजूदा जिन्दगी को ग़नीमत जानो वरना जाने के बाद इस से भी हाथ मलते रहे जाओगे।

इन्सान की जिन्दगी है ही क्या ?

ऐसी मिसाल है कि यह दरख़्त का एक पत्ता है। न जाने कब तेज़ हवा और आंधी आ जाए और इसे उड़ा कर ले जाए।

बस यही मौत का पैग़ाम है जो हमें यूं उड़ा कर ले जाएगा कि सब देखते रह जायेंगे। और फिर वहां.........खुदा तआला के फ़ज़्लो करम के सिवा और किसी का सहारा न होगा।

ज़िन्दगी क्या है ?:–

दुनिया में ऐ दुनिया वालो क्या फूले फूले फिरते हो
पहनोगे इक रोज़ कफ़न, बदलोगे फिर हस्ती का चोला

क्या भरोसा है ज़िन्दगानी का
आदमी बुलबुला है पानी का

दोस्तो !

इस ज़िन्दगी का कुछ भरोसा और ऐतबार नहीं। अभी एक शख़्स है और थोड़ी देर में पता लगा कि वह नहीं है। यह पत्ते की नोक पर रूका हुआ पानी का एक क़तरा है जिस का कोई ठिकाना नहीं। इस इन्सान इसे पायदार न समझे इस का कोई एतबार नहीं कि कब उस का दुनिया से चलने का बुलावा आ जाए और उसे ख़बर भी न हो।

ज़रा ख़्वाबे ग़फलत से हो शियार रहो।
न ग़ाफ़िल हो इतना, होशियार रहो॥

लिहाज़ा ऐ भाई अब भी वक्त है। मैं तुझ से बार बार कहता और नसीहत करता हूं यह जो कुछ लिखा जा रहा है और सरदर्दी की जा रही है वह सब तेरी ही ख़ैर ख़्वाही, हमदर्दी, कब्री मौत की सख़्ती, निज़ा की तल्खी, क़ब्र की तंगी व तारीकी, पुले सिरात

पर से आसानी, अज़ाबे जहन्नुम से निजातो ख़लासी, दाखिला ए जन्नत जो हमेशा-२ के लिए आराम व राहत और अल्लाह तआला की रज़ा का मुक़ाम है और इसके लिए अल्लाह तआला को राज़ी और खुश करने के लिए कहा जा रहा है । यह इसलिए नहीं कहा और लिखा जा रहा है और न इस किताब के लिखने का यह मन्शा और मकसद है कि इस दुनिया से और दुनिया का माल व दौलत कमा या और इकट्ठा किया जावेगा इससे कोई तारीफ़ या नामवरी मकसूद हो । अल्लाह तआला ऐसी नियत और रियाकारी और दुनिया की हमदर्दी से महफूज़ रखे और इस की मक्कारियों, दिल-फ़रेबियों और इस के फ़ितनों से बचाए ।

खुदारा मेरी इस नसीहत को पढ़ने सुनने के बाद तू अपने आप को और अपने आमाल को दुरूस्त करे । जो कुछ तुझे करना है बस अभी कर ले । इस में तेरी बेहतरी है । अभी तुझे मोहलत है, अभी तू तनदुरूस्त है, अभी तुझे फुरसत है, अभी तू जवान है, अभी तू जिन्दा है । अभी तेरा दिल दिमाग, हाथ पांव ओर सब आज़ाए बदन सही व सालिम हैं, उन की क़ब्बत ख़त्म होते वक्त गुज़रने और बुढ़ापा आ जाने के बाद तुझ से कुछ न होगा । जो कुछ भी

होगा अभी जवानी में और सेहत में होगा। फ़िर सिवाए वावेला और हसरत के कुछ हासिल न होगा। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया है कि दुनिया आख़िरत की खेती है। जैसा कोई यहां इस दुनिया में बोएगा वैसा आख़िरत में काटेगा।

याद रख ! बुढ़ापा अनक़रीब तुझ पर आने को है। उस वक्त तुझ को चलना फिरना भी दूभर हो जाएगा और फिर घर वाले भी तुझ से नफ़रत करेंगे। तेरा यह जिस्म हार जाएगा, तेरी सब ताकत और हुस्न रूख़सत हो जायेंगे। जजव़ तेरी कोई वुक़त न रहेगी—

तुझे पहले बचपन न बरसौ खिलाया
जवानी ने फिर तुझ को मजनूं बनाना
बुढ़ापे ने फिर आके तुझ को सताया
अजल तेरा कर देगी बिल्कुल सफ़ाया

अरे क्या तू देखता नहीं कि जब गधा बूढ़ा हो जाता है और बोझ उठाने के क़ाबिल नहीं रहता तो उसे घर से बाहर जंगल की तरफ़ निकाल दिया जाता है फिर उस की कोई कद्रो क़ीमत नहीं रहती।

लिहाजा यही हश्र तेरा भी अनक़रीब होने वाला है। तेरा यह हाल घर वाले, बेटे पोते ही करेंगे जिन

के पीछे तूने अपनी तमाम ज़िन्दगी खोई। गुनाहों की गठरियां सर पर लादीं, जिन को अपने खून पसीने की कमाई ख़र्च करके बी० ए., एम० ए० की डिग्रियां हासिल कराई और दीन सिखाना तेरे लिए शर्मो हया का मुक़ाम और वक़्त बरबाद करना था। ख़ुदा के नाम पर देने के लिए तेरे पास एक पैसा न था लेकिन फ़रजन्दे अर्ज़मन्द को डिग्रियां दिलाने के लिए और उस की शादी में नाच गाना और लानत की रस्मों के लिए तो ने पैसा पैसा तो क्या सभी कुछ ख़र्च कर दिया। अरे दीने मोहम्मदी को खोने और हक़ीर समझने वाले क़ब्र तो कब्र, तू इस दुनिया ही में भुगत कर मरेगा। आख़िरत तो आख़िरत तुझे मरते और क़ब्र में पहुंचते ही पता चल जाएगा कि तूने ज़िन्दगी में क्या कमाया और क्या खोया। वस ऐ ग़फ़लत भरे इंसान ख़बरदार हो जा। उठ जाग और खुदा से दिल लगा। उस की इबादत कर, उस के हुक्मों पर चल। शरीयते मोहम्मदी का दिलोजान से पाबन्द होजा। वहां की बिना यहां छोड़। दीन बना, दुनिया की छोड़। अपने माल और ज़िन्दगी की पूंजी से आख़िरत का सामान खरीद कि जो कल वहां तेरे मरने के बाद काम आ सके और तुझे क़ब्रो हश्र में सुख चैन नसीब हो और अल्लाह तुझ से राज़ी हो जाए।

नज़्म

बन्दगी हक की करो दिन रात नफए ज़िन्दगी ।
बन्दगी है बन्दगी है बन्दगी है बन्दगी ॥
आज कुछ कर लो इबादत वरना कल रोज़े क़याम ।
सामने हक़ के तुम्हें होगी ख़िजालत ला कलाम ॥
पुरसिशे आमाल ख़ालिक जिस घड़ी फ़रमायेंगे ।
मुल्को दौलत जाहो हशमत कुछ नहीं काम आयेगें ॥
बाप, भाई, मां, बहिन, फ़रजन्दोज़न और यारे ग़ार ।
आशिक़ो, माशूक़, नौकर, बन्दा व ख़िदमत गुज़ार ॥
काम आएगा नहीं, हर इक जुदा हो जाएगा ।
बल्कि इक इक उज़्व दुशमने जां हो जायगा ॥
तौबा गुनाहों से करो हर वक्त मौत से पहले ।
वरना पेश आवे ख़राबी सख़्त पीछे मौत के ॥
मंजिले मक़सूद पर किस तरह हम पहुंचेगें आह ।
हद से ज़्यादा अपने सर पर हो गया बारे गुनाह ॥
और हज़ारो साल की राह पुले सिरात पुर ख़तर ।
बाल से बारीक है तलवार से है तेज़तर ॥
हो सकें तो काम अच्छे आज कर लो मोमिनीन ।
कल निकलना गोर हाथों का मुमकिन नहीं ॥
तनदुरूस्ती है बड़ी शै, इस को नेमत जानिए ।
ज़िन्दगी बहरे इबादत है ग़नीमत जानिए ॥
कर जवानी में इबादत, काहिली अच्छी नहीं ।

जब बुढ़ापा आ गया बात कुछ बनती नहीं ॥
हाथ पांव में फ़िर यह ज़ोर और कुव्वत कहां ।
है बुढ़ापा भी ग़नीमत गर जवानी हो चुकी ॥
यह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दिन आ गई ।
जो गया मुल्के अदम को, यां नहीं आएगा फिर ॥
पंज रोजा ज़िन्दगी, कोई नहीं पाएगा फिर ॥
है यहां तकब्बुर से दिमाग़ जिन का अफ़लाक पर ।
क़ब्र में सोना पड़ेगा उन को फरशे ख़ाक पर ॥
तोबा इस्तग़फ़ार गुनाहों से करो, डरते रहो ।
अहकामे इलाही हक्के तआला को अदा करते रहो ॥

मौत हर जगह हर हाल में आती है:-

इस से बच कर कोई कहीं भाग नहीं सकता । मौत को आने से लोहे का सख़्त से सख़्त दरवाजा भी नहीं रोक सकता या मजबूत से मज़बूत किला भी उसे बचा नहीं सकता बड़े से बड़ा लशकर भी उसे अपनी पनाह में नही रख सकता । न मालो दौलत, अहलो अयाल, न दोस्त रिश्तेदार ही उसे कुछ नफ़ा पहुंचा सकते हैं न डाक्टरों और हकीमों के इलाज ही कोई काम आ सकते हैं । बल्कि अल्लाह तआला का यह अटल फैसला है । वह फरमाते हैं तुम जहां चाहो रहो । मौत तुम को वहीं आ पकड़ेगी । ख़्वाह कैसे ही मजबूत क़िलो और बलन्द बुरजों में जा रहो

वहां भी मौत ज़रूर आएगी ॥"

(सूरा-ए-निसा पारा ५-तर्जुमा)

दूसरी जगह फ़रमाते हैं–

"अगर फ़रमा दीजिए ऐ नबी लोगों को कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागोगे तो यह भागना तुम को हरगिज़ फ़ायदा न देगा ।"

(सूरा-ए-अहज़ाब पारा २१ रूबा १८-तर्जुमा)

तीसारी जगह फ़रमाया–

"आप फ़रमा दीजिए कि मौत जिस से तुम गुरेज़ (नफ़रत) करते और बचते हो वह तुम्हारे सामने आ कर रहेगी । फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले खुदाए पाक की तरफ़ वापस लौटाए जाओगे । फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुम को बतलाया जाएगा ।

(सूरा-ए-जुमा पारा २८-तर्जुमा)

मौत को याद रखना:–

ऊपर की आयात के तर्जुमे से जाहिर हो गया कि मौत ज़रूर आ कर रहेगी । इसे टाला नहीं जा सकता । तो आदमी को चाहिये कि ज़िन्दगी में हमेशा उसे याद रखे और उस के लिए तैय्यारी करता रहे

क्योंकि उस का ज़िक्र करना और उस को याद रखना भी लज़्ज़तों में कमी पैदा करता है । इसीलिए हुज़ूर सल अल्लाह अलैह व सल्लम का इरशाद है कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (मौत) को कसरत से याद किया करो यानी यूं फ़रमाया कि इस के ज़िक्र से अपनी लज़्ज़तों में कमी किया करो ताकि तुम अल्लाह तआला की तरफ़ रूजू कर सको ।

एक हदीस में है कि आप ने फरमाया अगर जानवरों को मौत के बारे में इतना मालूम हो जाए जितना कि तुम लोगों को मालूम है तो कभी कोई मोटा जानवर तुम्हें खाने को न मिले । (यानी मौत के डर से सब दुबले हो जायें)

हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह इनहा से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स दिन रात में बीस मर्तबा मौत को याद करें तो क़यामत के दिन शहीदों के साथ उठेगा ।

दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स दिन में २५ मर्तबा

रोज़ाना पढ़ लिया करे वह शहीदों के साथ होगा ।

ग़रज़ इन सब नसीहतों का मतलब यही है कि मौत को कसरत से याद करना इस धोके और ग़रूर के घर से ज़ारी और वे रग़बती पैदा करता है और उस से दिल न लगाने और आखिरत के लिए तैय्यार रहने पर आमाघ करता है ।

मौत से ग़फ़लत करना........दुनिया की शहवतों और लज़्ज़तों में इज़ाफ़ा और तरक़्की पैदा करता है ।

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम का एक दफ़ा एक मज्लिस पर गुज़र हुआ जहां से लोगों के ज़ोर ज़ोर से हंसने की आवाज़ आ रही थी । इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि अपनी मज्लिसों में लज़्ज़तों को तोड़ने ओर ख़त्म कर देने वाली चीज़ का तज़किरा शामिल कर लिया करो ।

सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह ! लज़्ज़तों को तोड़ने वाली क्या चीज़ है ? आप ने फ़रमाया कि मौत ।

एक और हदीस में है कि मौत को कसरत से याद किया करो । यह गुनाहों को ज़ायाल करती है और दुनिया से बे रग़बती पैदा करती है ।

एक और हदीस में आप ने फ़रमाया कि अगर तुम को यह मालूम हो जाए कि मरने के बाद तुम पर क्या गुज़रेगी तो तुम कभी रग़बत से खाना न खाओ और कभी लज़्ज़त से पानी न पिओ। जो शख़्स मौत का कसरते से ज़िक्र करता है उस का दिन ज़िन्दा हो जाता है और मौत उस पर आसान हो जाती है।

एक सहाबी ने अर्ज़ किया रसूल अल्लाह मुझे मौत से मोहब्बत नहीं है (बल्कि नफ़रत है) क्या इलाज करूं? आपने फ़रमाया कि आप के पास माल है? सहाबी ने अर्ज़ किया कि हां या रसूल अल्लाह! हुज़ूर ने फ़रमाया इस की (अपने लिए) आगे चलता कर दो (यानी इस को अल्लाह की राह में ख़र्च कर के, इसको अपने लिए आख़िरत में भेज दो) आदमी का दिल माल में फंसा रहता है। जब वह इसे आगे भेज देता है तो खुद भी उस के पास जाने को दिल चाहता है और जब उसे पीछे छोड़ जाता है तो खुद भी उस के पास रहने को दिल करता है।

लिहाज़ा दोस्तो! मौत आने से और उस दिन के आने से पहले पहले कि जिस दिन ज़बान खोलने से, आंखें देखने से, कान सुनने से, हाथ पकड़ने और

पांव चलने से बेकार हो जाएंगे, चाहिए कि अपनी गल्तियों और सियाह कारियों की खुदा से माफ़ी मांगे क्योंकि इस उम्रे बेवफ़ा का कुछ ऐतबार नहीं। इसलिये हमारे लिए आज ही मौक़ा है कि अल्लाह तआला के सामने अपने बद अफ़आल पर शरमाएं और गिड़गिड़ाएं। उस के सामने आजिज़ी और इन्कसारी करें और अपने गुनाहों के लिए तोबा व इस्तग़फ़ार करे।

क्योंकि कल फ़िर बोलने की ताक़त नहीं होगी। जब तक उस मालिक का इन आज़ाए बदन को हुक्म है उस वक्त तक यह तमाम तेरे ख़ादिम और ख़िदमत गुज़ार है। ज़बान बोलती है, आंखें देखती हैं, कान सुनते हैं, हाथ पकड़ते और पांव-चलते हैं। ख़्वाह इन को ग़लत चलाएं या सही, यह इन्कार नहीं करते। और यह तेरे साथ खुदा तआला की सी. आई. डी. भी हैं कि कल क़यामत के दिन तेरी सब करतूत तुझ पर ज़ाहिर करेंगे।

नेकी बदी तोले वहां, नमाए अमल खोले वहां
जब हाथ पांव बोले वहां, जाता रहे सारा भरम

लिहाज़ा तुझे लाज़िम है कि आज यह सब तेरे फरमां वरदार हैं तो इन से रज़ाए इलाही वाले काम

ले और उन को बुरे नामो से बचा ताकि कल तेरे लिए बाइसे नदामत और शरमिन्दगी न हों ।

नज़्म

आरजू दुनिया व दीं की दिल ही में ले जाएगा
बात करने की भी फुरसत फिर नहीं तू पायगा
आंख से तू देख पढ़ ले हो सके जितना कुरान
हो न जा अन्धा कहीं, हुक्मे खुदासे मेहरबान
कान से सुन ले तू, जितना हो सके कुराने किताब
हो न जाए यक बारगी ऐ यार तू बहरा शिताब
कर ज़बांसे रोज़ोशब तू ज़िक्रे मौला ऐ मियां
हो न जाए गूंगा कहीं यकबारगी ऐ मेहरबां
चल सके पांव से जितना, जा खुदा की राह में
न फ़्ल पढ़ ले, हो न जाए दर्द तेरे पांव में
जो कि देना है किसी को देले अपने हाथ से
हाथ से देना बड़ी नेमत है इस को जान ले
कर जवानी में इबादत हके तआला की मदाम
हार जाएगा बुढ़ापे में बदन तेरा तमाम

पस ऐं पढ़ने सुनने वाले इस किताब के अब भी बेदार होजा ।

अफ़सोस है इस बात पर, नहीं गोर का तुझ को फिकर
उठ जाग जल्दी होश कर, दोस्त श्रा जाते रहे

आना न होगा फिर कभी, आए नहीं हज़रत नबी
कर पेशवा की पैरवी, जो कुछ बता जाते रहे
ऐ यार कुछ सामान कर, आज कल तैय्यारी है सफ़र
रहना तेरा होगा किस, कदर जब मुस्तफ़ा जाते रहे

अल्लाह तआला की बारगाह में रो रो कर अपने ऐबों और नाफ़र मानियों को माफ़ करा ले और अपनी क़ीमती जिन्दगी को यूं ही इस दुनिया के बेकार धन्धों में बरबाद न कर अपने वक़्त को, सेहत को, फुरसत को, फ़शग़त को, दौलत को, जवानी को और बक़ाया रही सही ज़िन्दगी को ग़नीमत जान और आख़िरत में काम आने और साथ जाने वाला ख़र्च जमा कर ले वरना फिर यह मौक़ा हाथ न आएगा। हमेशा बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को छोड़ कर फ़ानी चीज़ (दुनिया) को हासिल करने में अपनी क़ीमती उम्र बरबाद न कर। याद रख जिस क़दर लोग दुनिया के हासिल करने में लगे रहते हैं और दीन से ग़फ़लत बरतते हैं इस के बदल क़यामत के दिन उतनी ही ज़िल्लत उठाएंगे।

वाक़ियात:-

हज़रत शफीक़ बलख़ी फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला का इरशाद है कि लोग चार बातों में मेरी

मुखालिफ़त करने हैं और अमल उसके ख़िलाफ़ करते हैं। अव्वल कहते हैं कि उन उबैदुल्लाह यानी हम अल्लाह के गुलाम (बन्दे) हैं और आसूंओं का अमल करते हैं।

दोम कहते हैं अल्लाह तआला हमारे रिज़्क का कफ़ील है मानी जिम्मेदार है मगर दुनिया की चीज़ों के बग़ैर उनकी तसल्ली नहीं होती।

सोम कहते हैं कि दुनिया से अख़िरत बेहतर है लेकिन दुनिया के लिए माल व दौलत जमा करते हैं और आख़िरत के लिये गुनाह जमा करते

चहारूम कहते कि हम ज़रूर एक दिन मरने वाले हैं लेकिन वह ऐसे अमल करते हैं जैसे मरना ही नहीं।

हज़रत ईसा उलैह अस्सलाम जिस वक्त मौत को याद करते तो उन के बदन से लहूके क़तरे टपकते।

हज़रत कॉब फ़रमाते थे कि जो शख़्स मौत को पहचान ले उस पर दुनिया की सारी मुसीबतें आसान हो जाती हैं। हज़रत दाऊद अलैह अस्सलाम जब मौत का ज़िक्र करते हैं तो आपके बदन में बंद-बंद शिक़िस्ता हो जाते और जब रहमते-इलाही का ज़िक्र

करते तो अज़सरेनौ आपके ज़िस्म में जान आ जाती ।

हदीस में है कि जब दो तिहाई रात गुज़र जाती तो हुज़ूर नबी क़रीम सल अल्लाह अलैह वसल्लम फ़रमाते कि ऐ ! लोगों ! अल्लाह को याद कर लो, अल्लाह को याद कर लो । अनक़रीब क़यामत का ज़लज़ला और फ़िरसूर फूंकने का वक्त आ रहा है और (हर शख़्स की) मौत अपनी सारी सख़्तियों समेत आ रही है । हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रोज़ाना रात को उलेमा के मज़मे को बुलाते जो मौत का क़यामत का और अख़िरत का ज़िक्र करते और आप ऐसा रोते जैस कि जनाज़ा सामने रखा हुआ हो । इब्राहिम तैय्यमी कहते हैं, दो चीज़ों ने मुझसे दुनिया की हर लज़्ज़त को मुनक़ता कर दिया । एक मौत ने दूसरे क़यामत ने अल्लाह ताला के सामने खड़ा होने की फ़िक्र ने । अश-अश करते हैं कि जब भी हम हज़रत हसन भरी के पास हाज़िर होते तो जहन्नूम और अख़िरत का ज़िक्र होता । एक बुजुर्ग थे उन्होंने अपने घर में एक कब्र खोदी हुई थी, हर रोज़ कई बार उसमें सोते और कहते कि एक घड़ी भी मौत को भुला दूं तो मेरा दिल स्याह हो जाए । उलमाए फ़राम फ़रमाते हैं कि जब दिल सख़्त हो जाए तो

तुम अपने ऊपर चार चीज़ों को लाज़िम कर लो। अव्वल हक़ परस्त और नेक़ आलिबों की सोहबत।

दोम मुक़तासिर मुशाहैदा। सोम क़ब्रों की ज़ियारत। चाहरूंम मौत की याद। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह इनहा से खाएत है कि हुज़ूर नबी क़रीम सल अल्लाह अलैह वसल्लम ने मेरे कंधों को पकड़कर फ़रमाया कि तू दुनिया में इस तरह से रह कि जिस तरह से मुसाफ़िर रहता है कि राह चलता हुआ मुसाफ़िर सफ़र में ज़्यादा बखेड़ा नहीं करता और हरदम अपने वतन की याद करके सफ़र के ख़र्च की फ़िक्र में रहता है। (तर्जुमा) (बुख़ारी व मुसलिम शरीफ़)

वस इसी तरह से मोमिन को चाहिये कि दुनिया को सराये फ़ानी जान कर और बेहूदा हिर्सो हवा की मार कर अपने वतन से कभी ग़ाफ़िल न हो, हर दम वहां का सामान करता रहे और अपने आप को क़ब्र के मुर्दों में गिन रखे यानी मौत को भूलना दुनिया की बहुत बड़ी परेशानी और मुसीबत का सबब है। जिस को मौत याद हो उस को फ़िर कोई फ़िक्र नहीं रहती। इस से आदमी को चाहिये कि जब सुबह

हो तो शाम का मुन्तज़िर न हो और जब शाम हो तो सुबह की तवक़्क़ो न रखे और सेहत की हालात में, बीमारी से पहले और जवानी की हालत में, बुढ़ापे से पहले और फरसत में, मश गूलिवत के वक्त से पहले जो अमल करना हो सो कर ले।

तन्दुरूस्ती को गनीमत जान कि फिर बीमारी में तुझ से कुछ न होगा। अपनी ज़िन्दगी में मौत का सामान मुहय्या कर ले और आने वाले वक्त के लिए तोशा-ए-आख़िरत जमा कर लें।

मौत का याद करने का तरीक़ाः-

मौत को याद करने का तरीक़ा यह है कि अपने हमसरों और साथियों से जो पहले मर चुके हैं उन की मौत से इब्रत और नसीहत हासिल करे। उन को याद करके सोचें कि अब मिट्टी ने उन के हुस्नो जमाल को कैसे ख़ाक में मिला दिया। उन के आज़ा कब्र में जुदा-२ हो गये होंगे। कैसी बेकसी की हालत में अपनी बीवियों और बच्चों को यमीत छोड़ गए। उन का मालो अस्बाब जाता रहा। उन का नामोनिशान तक न रहा। उन का सब करोफ़र ख़त्म हो गया।

हाय ! अब क़ब्र का अन्धेरा और फ़कत मिट्टी

है। ग़रज़ इसी तरह से एक-२ शख़्स को जुदा जुदा याद कर के सोचे कि यही हाल एक दिन मेरा भी होगा। उन की शक्लो सूरत का तसुव्वुर कर लें उन की खुशी, उन की लज़्ज़तो आराम, शानो शौकत, उनके ठाट बाट, उन की ऐशो इशरत, उन की रंगरलियां, उन का बनाव सिंगार और माल कमाने और खाने के लिए दिन रात भाग दौड़ करना, हर वक्त पैसा जमा करने की फ़िक्र में रहना और मौत को हर वक्त भूले रहने को याद करे और यह ख़याल करे कि वह कैसे चलते फिरते थे उब उन के हाथ पांव और बदन के तमाम जोड़ टूट गए होंगे। वह कैसे बोलते और कैसे-२ हंसते थे, कैसे पान खाते, कैसे सिगरट पीते और कैसे रंग रलियों करते थे। अब कीड़ों ने उन की ज़बान और ख़ाक ने उनके मोतियों जैसे दांत चाट लिए होंगे। हाय वो अपने लिए ऐसी-ऐसी तदबीरें निकाला करते थे कि सौ वर्ष तक भी उनकी जरूरत न पड़े हालांकि उनके मरने में बहुत ही कम अरसा था। हाथ उनको यह खबर न थी कि हमें करा क्या पेश आने वाला है। मौत ऐसे वक्त में आई कि उनको यह गुमान भी न था कि हमारी यह आरजूयें और दिल के अरमान पूरे न होंगे।

ग़रज़ जब यह सब कुछ ख्याल कर चुके तो फिर अपने नफस पर गौर करे और सोंचे कि आख़िर एक दिन मेरा भी यहीं अन्जाम होने वाला है। लिहाज़ा इस तरह से मौत को याद करते रहना और कब्रिस्तान जाते रहना और बीमारों को देखना और जनाज़ों के साथ जाना मौत को दिल में ताजा करना गुनाहों से बचना है।

मौत इंसा को अगर दुनियां में याद रहे।
हर रंजो ग़म से हर वक्त वो आजाद रहे॥

हज़रत अबु हरीश फरमाते हैं कि तीन किसम के आदमियों के हाल पर मुझे बहुत हेरत होती है।

अव्वल वह जो दुनियां की मोहब्बत में दिन रात दीवाना बना रहता है और दीन के सब कामों को भूल जाता है। बाबजूद इस बात के कि वह यह अच्छी तरह जानता है कि मुझको एक दिन जरूर मरना है। एक रोज मौत जरूर आयेगी और यह सब कुछ खत्म हो जायेगा।

दो यम-वह जो इतना ग़ाफ़िल हो गया है कि वह कुछ सोचता ही नहीं। जो उसके जी में आता है करता है और जहाँ चाहे जाता है और हर तरह की बेहूदगी के काम करता है बावजूद इसके कि

वह जानता है कि वो फरिश्ते करना कातिबैन दोनों कन्धों पर बैठे हुये नेकी और बदी के हर काम को लिखते रहते हैं। और हर रोज का आमाल नामा वारगाहे इलाही में पेश करते हैं।

सोयम–वह जो हमेशा बेग़म और वेफ़िक्र रहता है। न उसे दुनिया की फ़िक्र और न आख़िरत की हैवानी की तरह से दिन रात खाता पीता रहता है। ऐसे शख़्स से अल्लाह तलाआ बहुत बेज़ार है जो जानवरों की तरह जिन्दगी गुजारता है –

ऐ बेख़बर हयात का क्या एतबार है
हर वक्त मौत बशर के सर पर सवार है

यह या बिन मआज़ रज़ी अल्लाह इनहा फ़रमाते हैं कि अक़्ल मंद वह शख़्स है जो यह तीन काम करे–

अव्वल–दुनिया से दस्त बरदार हो जाय
कब्ल इस के कि दुनिया खुद उस से दस्त बरदार हो।
दोयम– कब्र की आबादी का इन्तज़ाम करे
क़ब्ल इसके कि क़ब्र में जाने का दिन आए।
सोयम–अल्लाह तआला को ख़ुश करे
क़ब्ल इसके कि उस के दीदार से मुशर्रफ़ हो।

लिहाजा ऐ दुनिया के राहरौ! आह! किस क़दर

मौत से ग़ाफ़िल है तू ! सुन और याद रख ! ज़रूर एक न एक दिन तू मौत के मुंह में जायगा। इसलिये तू आज अपनी ज़िन्दगी में अपना ग़म खा। यानी मौत आने से पहले क़ब्र और आख़िरत में काम आने वाला सामान मुहय्या कर ले क्योंकि तेरे मरने के बाद तेरे ख़्वेशो अक़ारिब, दोस्त और रिश्तेदार तेरा कुछ ग़म न खायेंगे। अपनी तमा और लालच और हिर्सो हवस की वजह से तेरे ही माल में से तेरे लिए ख़ैरात तक न करेंगे और तुझे ईसाले सवाब और फ़ातिहा दुरूद तक न पहुंचायेगें। अगर तुझे अब तो इस का यकीन नहीं तो मैं तुझे खुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि ऐसा ही होगा और ज़रूर ऐसा हो कर रहेगा लिहाज़ा तू अब भी समझ जा और अपनी जिन्दगी में कुछ कर कमा ले।

अब ज़िन्दगी का राज है कर ले जो करना आज है।
जब मर गया मोहताज है फिर तू नहीं मुख़्तार है॥
इक दिन हर्थी कर दफ़न प्यारे आप घेर मुड़ आवन।
अपने कम्मां ख़ातिर रोवन तै नूं याद न लियावन॥
पिच्छों माल तेरे दे उत्ते वारिस कब्ज़ा पा सन।
कदी न क़ब्र तेरी ते जाकर फ़ातिहा हथ उठासन॥
आ बन बन्दा, न हो गंदा न बन्ह गठरी भारी।
नेक ब्योपार लयों कि प्यारे बन के नेक ब्योपारी॥

तो ऐ भाइ ! अब तेरे हाथ में दौलत व नेमत है । लिहाज़ा तू इसे दिल खोल कर खुदा की राह में दे । इस को नेक कामों में लगा क्योंकि आज यह मालो दौलत तेरे कब्ज़े में है । तेरे मरने के बाद यह तेरे ताब ए फरमान न होगा । उधर तेरा दम निकलेगा इधर तेरा माल दूसरों का हो जायगा और फिर तुझे किसी किस्म की मदद या मोहलत न मिल सकेगी । लिहाज़ा उस दिन को याद कर के आज रो ले ।

अव वक्त खेती बोन का मौसम है पैदा होन का
फ़िर वक्त आए रोन का जब मर मरा जाते रहे

याद रखो

इस दुनिया से वही शख़्स बामुराद होकर जाता है जो अपने जीते जी नेक आमाल कर के अपनी क़ब्र और आख़िरत के वास्ते अपने साथ आमाले सालिहा का तोशा ले जाता है । बिला इस के वहां कोई आराम, चैन और सुख नसीब न होगा

पस ऐ भाइयो !

मेरी गुज़ारिश है कि इस दुनियाए बेवफ़ा की मोहब्बत छोड़ कर अपने दिल को इस की तरफ़ से मोड़ कर अल्लाह और रसूल की मोहब्बत दिल में

पैदा करो। और हर घड़ी उस के हुक्मों पर चलो। फ़िक्र इस बात की करो कि जिस तरह हो सके अल्लाह तआला राज़ी और खुश हो जाए। दिल पाक और ज़िन्दा हो जाय। बदन को आरास्ता करने, सजाने और बनाने और ज़ाहिर को संवारने के कुछ फ़ायदा हासिल न होगा। जिस तरह से साहिबे क़ब्र यानी मुर्दे को उस की क़ब्र पर नक़्शो निगाह बनाने का कुछ फायदा हासिल न होगा उसी तरह से ज़ाहिर के बनाने और संवारने से कुछ न मिलेगा।

बड़े शर्म की बात है कि लोगों की नज़र के सबब उन को दिखलाने के लिए तू अपने ज़ाहिर को साफ़ सुथरा और सजाया बनाया जाए लेकिन बातिन को जो ख़ास नज़र गाहे खुदा वन्दी और उस की जलवा गाह है उसे नापाक रखा जाए। इस से ज़ाहिर है कि आप मख़लनक़ को ख़ालिक़ से बड़ा मानते हैं। याद रखिये क़यामत के दिन वही दिल निजात और अमन की जगह पाएगा जो क़ल्बे सलीम यानी खुदा तआला का पूरा फ़रमा ब्ररदार होगा, दुनिया की मोहब्बत, बुग्जो हसद, शिर्क और बिद्दत से ख़ाली होगा और सुन्नतें रसूल का पाबन्द होगा।

इन्सान की आख़िरी आरामगाह बज़ाहिर एक मिट्टी का ढेर लेकिन इबरत का मुक़ाम

आप का कभी न कभी क़बरिस्तान जाना हो ही जाता है । अगर अपनी मौत की याद करने और अपने बुजुर्गों के लिए दुआए मग़फ़िरत और फ़ातिहा के लिए भी जाना होता तो जिस दिन कोई बड़ा आदमी मर जाता है उस दिन तो आप के लिए ज़रूरी है जाना और बराय नाम शक्ल दिखाना । वहां आप अल्लाह के लिए और सवाब के लिए नहीं जाते बल्कि दुनियादारी और रियाकारी की वजह से जाते हैं कि अगर उस के न गए तो फिर यह हमारे नहीं आएंगे । बहरहाल यहां यह बात अर्ज़ नहीं करनी । बल्कि यहां यह बात अर्ज़ करना है जिस का इस किताब से जोड़ है । वह यह है कि आप न क़बरिस्तान जाकर थोड़े-२ फ़ासले पर मिट्टी के ढेर देखे ही हैं (जिन को अपनी ज़बान में क़बरे कहा जाता है) । यह मिट्टी के ढेर नहीं हैं बल्कि हमारे और आप

जैसे इंसानों और हमारे ही भाइयों की क़बर हैं जो हम से पहले इस दुनिया से रूख़सत हो चुके हैं !

यह आराम गाहें सारी की सारी बज़ाहिर मिट्टी के ढेर हैं लेकिन अन्दर से उन का एक जैसा हाल नहीं है। जिस तरह से गोश्त पोस्त तो सब आदमियों का मुशतरक होता है लेकिन गोश्त पोस्त के इन ढांचों में कितने ग़मगीन होते और कितने खुश, कई बीमार और कई तन्दुरूस्त। इसी तरह से यह कबरे बज़ाहिरा मिट्टी के ढेर मालूम होती हैं लेकिन याद रखो ! उन के अन्दर हसरत ही हसरत और अज़ाब ही अज़ाब है-और कोई इन में जन्नत का बाग़ होती है और कोई जहन्नुम का गढ़ा। उन के ऊपर पत्थरों पर तरह-२ की गुलकारियां हैं मगर अन्दर बलाएं हैं और आग के शोले हैं। क़बरो पर बज़ाहिर सुकून नज़र आता है लेकिन अन्दर बड़े-२ फ़ितने है।

साबित बिनाई का वाकिया:-

साबित बिनाई रहमत अल्लाह उलैह एक मर्तबा किसी क़बरिस्तान से गुज़रे। पीछे से आवाज आई कि ऐ साबित बिनाई ! क़ब्रों के ज़ाहिरी सुकून को देख कर कहीं धोखे में न आ जाना क्योंकि इन के अन्दर बहुत लोग मग़मूम और रंजीदा हैं। उन्होंने पीछे

मुड़कर देखा तो किसी को न पाया ।

गरज़ क़ब्र ऐसी नसीहत करती है कि किसी वाइज़ के वाज़ और तक़रीर की जरूरत बाक़ी नहीं रहती । क़ब्र हर पास से गुज़रने वाले को पुकार कर कहती है–

ऐ ज़मीन पर चलने वाले ।

अपने ज़माने के इन लोगों को ज़रा देख जो गुज़र गए हैं । उनकी शक्लो सूरत का ख़याल कर कि वह दुनिया में किस शानो शौकत से रहा करते थे । अब सोच कि क़ब्र में उन की क्या हालत हो गई होगी । उन के आज़ा, एक दूसरे से जुदा हो कर गल सड़ गए होंगे । गोश्त पोस्त, आंख, कान और ज़बान में कीड़े पड़ गये होंगे और उन्होंने खा चाट कर सब बराबर कर दिया होगा । अपने जी में ज़रा तो सोच कि तू भी इन्हीं जैसा है और तेरी गफ़लत न हिमाक़त भी इन्हीं जैसी है । नेक बख़्त तो वह है कि जो दूसरों का हाल देख कर इबरतो नसीहत हासिल करे ।

ऐ ग़ाफ़िल !

ऐ वह शख़्स जो भूल कर भी ख़ुदा को याद नही करता.......एक रोज़ जल्द या बदेर तेरा नाम भी ज़िन्दों की फहरिस्त से निकाल कर मुर्दों की फहरिस्त

में दर्ज कर दिया जायगा। यही तेरे घर वाले और दोस्त अक़रिबा तुझे ले यारो मददगार इसी तंगो तारीफ क़ब्र में अकेले को बन्द कर के ऊपर से मिट्टी डाल, छोड़कर खुद घर को चले जायेंगे। किसी को मुतलक ख़याल न होगा कि तुम इस अन्धेरी क़ब्र में घबरा जाओंगे। या तुम्हारे नीचे नर्म बिस्तर या तकिया नहीं है। उन को बिल्कुल तुम्हारी मुसीबत व परेशानी की कोई परवाह न होगी और न तुम्हें किसी तरफ़ से वहां हवा लगेगी और न वहां तुम्हारा कोई मुनिसो मददगार होगा जो तुम्हारा दिल ही बहला सके और न वहां के अज़ाब से बचाने वाला तुम्हारा कोई हिमायती होगा।

गरज़ वह मकान चारों तरफ़ से बन्द और पुरख़तर है। थोड़े दिन तुम्हारा मातम करने और रोने धोने के बाद तुम्हारे मां बाप, बीवी बच्चे, बहिन भाई, रिश्तेदार और दोस्त यार हमेशा-२ के लिए तुम्हें भूल जायेगें जैसे तुम्हारा उन से कोई ताल्लुक ही न था।

इसलिए भाइयों !

आप से मुख़लिसाना अर्ज है कि वहां के लिए आज ही से फ़िक्र और तैय्यारी करो। इंसान, दुनिया

के घर बनाने और संवारने में दिन रात क्या सारी उम्र ख़र्च करता है। यह घर आज नहीं तो कल एक न एक दिन ज़रूर उजड़ेगा। इंसान के आबाद करने से यह आबाद नहीं रह सकता। लेकिन इस घर का कभी भूले से भी ज़िक्र नहीं करता जिसमें उस को हमेशा रहना है और जिस की तरफ़ इंसान तेज़ी से भागता चला जा रहा है। इंसान इस घर को बनाने में सारी उम्र सर्फ़ कर देता है जिस का नफ़ा ग़ैरों को पहुंचता है......लेकिन अफ़सोस उस घर की तरफ कभी ध्यान ही नहीं देता जिस में उस को मौत के बाद हमेशा रहना है। उस को चाहिये था कि

दरकार है न क़स्र न जागीर चाहिये
इबरत सराए गोर की तामीर चाहिये

दुनिया राह है-और उक़्बा मंजिल और क़ब्र उक़्बा का पहला दरवाजा है जो कोई आमाले सालेह की पूंजी लेकर इस दरवाज़े से दाख़िल होगा अल्लाह तआला के फ़रिश्ते गर्म जोशी से उस का इस्तक़बाल करेगें और वह क़ब्र में हश्र तक आराम से सोया रहेगा।

फिर हश्र के दिन उसे दोबारा उठाया जायगा इस हालत में कि वह अल्लाह तआला से राजी होगा और अल्लाह तआला उससे राज़ी। और यही सब

से बड़ी कामयाबी है। जैसा कि अल्लाह ताला का इरशाद है–

कितने खुशनसीब हैं वह लोग जो नेकियों को पूंजी लेकर उस मंज़िल (यानी क़ब्र में दाखिल होते हैं) जो लोग बदआमालियों का ज़खीरा जमा कर के ले जाते हैं उन के लिए क़ब्र जहन्नुम का गढ़ा बन जाती है। फिर वह वहां का अज़ाब देख कर पहुंचाते हैं लेकिन वहां का पछताना किस काम का ?

हासिल यह कि क़ब्र दुनिया की खेताक़ा खलियान है और मुक़ामे इबरत् है।

लिहाजा ऐ दोस्त ! ऐ इस किताब के पढ़ने सुनने वाले अब भी ख़बरदार हो जा पहले इसके कि मौत के बाद तुझे बेदार किया जायगा।

आह एक दिन मरना हम को है ज़रूर
सब को जाना है मौला के हुज़ूर

वाक़ियात

मुज़ाहिद कहते हैं कि

जब आदमी मरने के क़रीब होता है तो उस वक़्त उसके हम मजलिसो, हम नशीनों की सूरतें उस के सामने आ जाती हैं। अगर उस का उठना बैठना नेक

आदमियों के पास होता है तो उस के यारों, दिलदारों का यह मजमा जिन में वह दिन रहता और दोस्ती रखता था उसके सामने आ जाता है। अगर उस का ताल्लुक फ़ासिको फ़ाजिर लोगों से होता है तो वह लोग उस वक्त उस के सामने लाये जाते हैं।

हज़रत यज़ीद शजराए सहाब्री से भी यही बात नक़ल की गई।..........तो ऐ दोस्त अभी से अपना उठना बैठना नेक लोगों के पास कर ले और नेकों जैसी अपनी शक्लो सूरत बना ले ताकि तेरा अंजाम ब ख़ैर हो। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ अता फरमाए आमीन !

हिकायत:–

रबी बिन बर्रा– एक इबादत गुज़ार बसरा में रहते थे। वह फ़रमाते हैं कि एक शख़्स। लोग उस को "ला इलाहालिलाह" की तल्क़ीन कर रहे थे और उस की ज़बान से यह निकल रहा था कि शराब का गि़लास तू भी पी और मुझे भी पिला। यही कहते हुए मर गया।

अहवाज़ (एक जगह का नाम) में एक शख़्स

का इन्तकाल हो रहा था । लोग उस को "लाइलाहलिल्लाह" कहने की तल्क़ीन कर रहे थे मगर वह अपनी ही धुन में मस्त कुछ और बक रहा था ।

दाना और अक्लमन्द रसूल अल्लाह की नज़र में:-

जनाब रसूल अल्लाह सल अल्लाह अलैह व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि दाना (अक्लमन्द) वह आदमी है जो अपने नफस को काबू में रखे और मौत के बाद वाली ज़िन्दगी के लिये अमल करे । और नादान (बे अक्ल) वह है जो अपने नफ़स की ख्वाहिशात की ताबेदारी करे और अल्लाह तआला से बे बुनियाद उम्मीदें रखे ।

इस हदीसे पाक से मालूम हुआ कि दाना वह नहीं है जो अपने आप को अक्लमन्द समझे । या दुनिया वाले उसे दाता और समझदार समझते हों ।

बल्कि

दाना वह है जो खुदा और रसूल की नज़र में दाना और अक़्लमन्द हो और जो अपने नफ़स पर क़ाबू रखे, उस को बुराई और बुरी ख़्वाहिशात से रोके

रखे और हर वक्त भी उस की निगरानी से ग़ाफिल न हो कि वह अपनी मनमानी और मनचाही करने लगे और खुदा की बताई हुई हदों को तोड़ कर, आज़ाद हो जाय और वह शख़्स हर वक्त आख़िरत की जिन्दगी को सामने रख कर मौत के बाद वाली ज़िन्दगी की फ़िक्र रख कर उसे संवारने और बनाने और वहां की कामयाबी की तैय्यारी करता रहता है। और खुदा और रसूल की नज़र में नादान और बेवकूफ़ वह शख़्स है जो अपनी ज़िन्दगी की बाग डोर अपने नफ़स के हाथ में दे दे और दिन रात अपने नफ़स ही की ख़्वाहिशात पूरी करने में लगा रहे और फिर खुदा के फ़ज़लों करम की बे-बुनियाद उम्मीदें रखे। यानी पूरी ज़िन्दगी तो नाफ़रमानियों और मन मानियों में गुजार दे और सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च करें और उसकी बुनियाद पर आरज़ूए जन्नत का तालिब रहे। यकीनन ऐसे टोटें और ख़सारे में रहने वाला है।

हज़रत हबीब अजमी का वाक़िया:-

हज़रत हबीब अजमी (जो मशहूर अकाबिर सूफ़िया में से हैं) इन्तकाल के वक्त बहुत घबरा रहे थे। किसी ने अर्ज़ किया कि आप जैसे बुज़ुर्ग और

ऐसी घबराहट ! इससे पहले तो ऐसा आपका हाल कभी न होता था। फ़रमाने लगे कि सफ़र बहुत लम्बा है तोशा-ए-ख़र्च पास नहीं है कभी इससे पहले यह रास्ता नहीं देखा। आक़ा और सरदार की ज़ियारत करनी है। कभी इससे पहले ज़ियारत नहीं की। ऐसे ख़ौफ़नाक मंज़र देखने हैं जो इससे पहले कभी देखे नहीं। मिट्टी के नीचे अकेले को क़यामत तक रहना पड़ेगा। कोई मनिस पास नहीं और कोई साथी साथ नहीं। इसके बाद अल्लाह की जनाम में खड़ा होना है। मुझे यह डर है कि अगर वहां यह सवाल हो गया कि हबीब ! साठ बरस में एक तस्बीह भी ऐसी पेश कर दे जिसमें शैतान का कोई दख़ल न हो तो इसका क्या जवाब दूंगा ? और यह हाल इस पर था कि साठ बरस की ज़िंदगी में उनका दुनिया से ज़रा भी लगाव न था.......एक हम हैं जो किसी वक्त भी दुनिया तो दरकिनार गुनाहों से भी, ख़ाली नहीं होते और दिन रात शैतान ही की खुशामद में लगे रहते हैं। अपने नफ़ज़ को इतना सिर चढ़ा रखा है कि वह किसी वक्त भी खुदा की तरफ़ आने और मौत और क़ब्र की सोचने को तैयार ही नहीं। तो आप खुद ही सोच लीजिए और इन सब वाक़ेयात के बाद फैसला कीजिए कि हमारा क्या हाल

होगा ? हमको अपने मरने और क़ब्र में जाने और खुदा-ताला के हुज़ूर में खड़ा होने का फ़िक्र ही नहीं। वक्ते-आख़िर दुनिया से रूखसत होने की बेबसी और बेकसी, मौत की सख़्ती और निज़ा की तलरवी, क़ब्र की तंगी और तारिखी, मुनकिर और नकीर की वहशत, पुल-सिरातरजो बाल से बारीक़ और तलवार से तेज़ है से गुजरने की आज़माईश, क़यामत की खौफ़नाक़ बड़ी और दोज़ख़ के अज़ाब से बचने का हमको कोई फ़िक्र नहीं। यह सब मंज़िलें निहायत तलव और सख़्त हैं जो अनक़रीब हमको पेश आने वाली हैं। बाबजूद इसके हमारी यह हालत और ग़फ़लत की हद हो गई कि हमें कोई रंज़ों मलाल नहीं कोई सदमा और ग़म नहीं कि हमारे साथ कल (मरने के बाद क़ब्रों और हश्र में) क्या होने वाला है ?

दरवेश सबके वास्ते यह मंज़िल अज़ीब है।
उमीदें बड़ी-२ अजल अनक़रीब हैं॥

आख़िर कलाम और दुआ अल्लाह तआला के हुज़ूर में

ए अल्लाह मैं खाती हूं, खताकार हूं। मेरी ख़ताओं को माफ़ फ़रमा। इलाही ! मैं सियाहकार हूं। मेरी सियाह कारियों को माफ़ फ़रमा। ऐ मौला ! मैं मुजरिम हूं, गुनाहगार हूं। मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ आक़ा। मुझसे तेरा हक़्क़े इबादत अदा न हो सका। तमाम उम्र मैं ग़फ़लत में पड़ा रहा और अपनी मनमानी और मनचाही करता रहा। तेरी नाफ़रमानी करता रहा। इलाही ! मेरे इस जुर्मे अज़ीम और कसूर को माफ फ़रमा।

ऐ करीम ! मैं अपने गुनाहों और क़सूरों पर नादिम हूं, शर्मसार हूं। ते मेरी इस शर्मसारी को क़बूल फ़रमा।

इलाही ! मैं ज़ाहिर में लोगों को नसीहत करता रहा और बातिन में अपने नफ़स के साथ खोटापन

करता रहा ।

ऐ मौला ! मैंने अपने नफ़स के साथ जो खोट और ख़राबियां की हैं उन को इस के बदले में कि मैं तेरी मख़लूक़ और बन्दों को नसीहत करता रहा, माफ फरमा दो ।

इलाही ! तू ग़फ़्कार है । गुनाहों को माफ़ करने वाला है । मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा मेरे ऐबों की परदापोशी फ़रमा । दुनिया और आख़िरत की ज़िल्लत से बचा । इलाही ! जो मुझ से जानबूझ कर या भूल चूक से जो ग़ल्तियां और नाफ़रमानियां हुई अपने फ़ज़्लो करम से तू उन्हें माफ़ फ़रमा ।

है मेरे हाल की तुझको ख़बर ऐ मेरे मालिक ! मुझे रूस्वा न कर

ऐ अल्लाह ! तू हम सबको ग़लत रास्ते से बचा कर सिराते मुस्तक़ीम, सीधे रास्ते पर चला । हमारा जीना और मरना ख़ालिस तेरे लिये हो ।

हमारे सब काम ओर इशदे तेरी ही मरज़ी और रज़ा के ताबे हों ।

ऐ मालिके हक़ीकी !

हममें इख़लास पैदा फ़रमा कि हम जो भी काम करें वह ख़ालिस तेरे लिए ही करें। इसमें दुनिया का कोई दिखावा न हो बल्कि तेरे हबीब। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सलअल्लाह अलैह वसल्लम कि सुन्नत अदा करना, उनकी फ़रमाबरदारी करना और उनकी खुशनूदी हासिल करना। हमारा मक़सद हो। हमें उस रास्ते पर चला जिस पर तू राजी और खुश हो। इलाही इस्लाम को ग़लबा और मुसलमानों को इज़्ज़त और सरबुलन्दी अता फ़रमा। दुनिया की बलाओं और मुसीबतों से निज़ात दे। ऐ अल्लाह ! हम सच्चे दिल से यह इक़रार करते हैं। हमारा यक़ीन और ईमान है कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। तू ही हमारा मुश्किल कुशा है। तू ही हमारा हाज़ित खा हैं। ऐ आक़ा ! तू ही दुनिया और आख़िरत में हमारी उम्मीदों को पूरा करने वाला है। हमारी सब मुरादों को पूरा कर। और मुश्किलों को आसान फ़रमा। इलाही हमें बक्श दे। हमी गल्तियाँ माफ़ फ़रमा दे। तुझ जैसा और कोई नहीं। हम तुझ से तेरी बख़्शीश और रहमत के तालिब हैं। तू हमें माफ़ फ़रमा और अपने नेक बंदो में शामिल कर। हमारा ख़ात्मा इस्लाम पर हो। अपनी रज़ा और खुशनूदी नसीब फ़रमा। हमें अज़ाबे क़ब्र से बचा। इलाही

ऐ अल्लाह! मेरे मां बाप भाइयों, रिश्तेदारों, शागिर्दों, दोस्तों और घर वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा। इलाही जहां-जहां भी शहरों या गांवों में, हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में मेरे से मुहब्बत रखने वाले लोग आबाद हैं, उन सब को मुआफ़ फ़रमा, उनके अच्छे मक़्सद पूरे फ़रमा। उनकी जायज़ ज़रूरतें पूरी फ़रमा। उनके कारोबार में बरकत व कामयाबी अता फ़रमा। उनके दर्जे ऊँचे कर दे। उनको दीन की समझ-बूझ अता फ़रमा।

इलाही! जो लोग अक़ीदतमन्द और मुहब्बत रखने वाले मुझे दुआओं के लिए कहते रहते हैं, उन सब की नाम-बनाम, दर्जा बदर्जा दुआएं क़बूल फ़रमा। उनकी परेशानियां दूर फ़रमा। उनकी नेक इच्छायें पूरी फ़रमा।

इलाही! हम सबको गुमराही से बचा कर हिदायत नसीब फ़रमा। *आमीन०*

ऐ मौला! हमारी औलादों को नेक और सालेह बना दे। उनको हमारे लिए सदक़ा-जारिया (सदा रहने वाला दान) बना दे। उनको हिदायत की राह पर लगा दे। *आमीन०*

ऐ मेरे अल्लाह! तमाम तारीफ तेरे ही लिए है। तू सारे जहानों का रब है। मैंने अपना सब काम तेरे सपुर्द कर दिया है और तू अपने बन्दों को देख रहा है।

अल्लाहुम्मह्दिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम० व अस्अलुकल् युसर वल् मुआफाति फ़िद्दुनिया वल् आख़िरह०

अल्ला हुम्माफु अन्नी फ़इन्नक अफ़ुव्वुन् करीम०

आमीन० या रब्बल् आलमीन०

फ़क़त वस्सलाम व ख़त्मल् कलाम०

ख़्वाह वोह बेक़सद हो या क़सद से
सब यारब बख़्श दे या करदे माफ़
कुल गुनाहों से मुझे कर पाको-साफ़
आख़िरत मेरी जो है, असली मकां
एक दिन आख़िर को जाना है जहाँ
ठीक रख उन सबको रब्बुल आलमीन
मेरी दुनिया, मेरा रुतबा मेरा दीन
और मेरी ज़िन्दगी को ए ख़ुदा
नेकियों के बढ़ने का बाइस बना
मौत हो मेरी सबब आराम का
से मुझे हर इक़ बुराई से बचा
फ़ित नए नारो, अज़ाबे-नार से
और दोज़ख़ के हर इक़ अज़ाब से
फ़ितनए क़ब्रो-अज़ाब क़ब्र से
और ज़बरदस्तो के कैहरो ज़ब्र से
बाद मरने के मुझे राहत मिले
और तेरे दीदार की लज़्ज़त मिले
अच्छा जीना अच्छा मरना कर नसीब
हक़ पे साबित रख हमेशा ऐ मुजीब
जब हो मेरी उम्र का वक्ते अख़ीर
दस्तगीरी करना मेरे दस्तगीर,
तंग दस्ती से बुढ़ापे की बचा

दे मुझे रोज़ी ज़्यादा ऐ ख़ुदा
मेरी अच्छी उम्र हो उम्रे अख़ीर
फ़ज़्लो रहमत से तेरी ऐ दस्तगीर
सब से अच्छे हों मेरे पिछले अमल
सबसे अच्छा वक्त हो वक़्ते अजल
जब तक जीता रहूं मैं ऐ ख़ुदा
मुझ को गुमराही के फ़ितने से बचा
या इलाही मेरे ऐबों को छिपा
खौफ़ से दिल मेरा तू कर दे रिहा
हश्र के दिन करियो न मुझपे अज़ाब
हश्र के दुःख से बचा रोज़े हिसाब
जीना मरना और मेरा सब करोबार
हैं तेरा ही वास्ते ऐ कर दिग़ार
मेरे साथ आसानी और एहसान कर
मेरी हर मुश्किल को तू आसान कर
ऐश तो यारब है ऐशे आख़िरत
दे मुझे ऐश वोह और मग़फ़िरत
या इलाही अपनी सारी हाजितें
पेश करता हूं तेरी बारगाह में
क़ब्र के फ़ितबों से यारब तू बचा
हर जगह तू मुझ को कर राहत अता
और जब मर जाऊं मुझ पर रहम कर

और मेरी मग़फ़िरत कर सर बसर
ख़ात्मा भी हो मेरा इस्लाम पर
कर मुझे यारब फ़िदा इस्लाम पर
मेरे मौला तू बख़्श दे मेरे गुनाह
दे मुझे अपने अज़ाबों से पनाह
मग़फ़िरत मेरे गुनाहों की तू कर,
ठीक कर दे काम मेरे सरबसर
क़ब्र की वहशत को मुझ से दूर कर
इस अन्धेरे घर को तू पुरनूर कर
पेशवा मेरा हो क़ुराने अज़ीम
इसके बाइ… मुझ पर रहम कर ऐ रहीम
तूने जिन कामों के करने को कहा
मैं उन्हीं कामों से बस ग़ाफ़िल रहा
और रोका तूने जिन आमाल से
रात दिन मुझ से वही होते रहे
अब तो जो होना था मुझ से हो चुका
कांटे अपनी राह में मैं बो चुका
कर चुका ख़ुद ज़ुल्म अपनी जान पर
अपने हाथों लुट चुका मैं सर बसर
रहम फ़रमा अब तू मेरे हाल पर
और दोज़ख़ से बचा दे सरबसर
मैं हूं जिस रंजो बला में मुबलता

दे रिहाई मुझ को उससे ऐ खुदा
कर हर इक हालत में ते मेरी मदद
हो मेरे हर काम में तेरी मदद
मेरे दुश्मन और मुख़ालिफ़ जितने हैं
सबको करता हूं हवाले तेरे मैं
दिन अच्छे हों मेरे, अच्छा हो मआल
और अच्छे हों, मेरे सब आमाल
और अच्छी हो मेरी औलाद भी
जिससे खुश और ठण्डी हों आंखें मेरी
जितने दुश्मन और हासिद हैं मेरे
मुझ पे हंसने का उन्हें मौका न दे
मौत की सख़्ती में और सुकरात में
जब लगा रहता है शैतां शात में
हो इलाही तू मददगारो मुईन
मुझ पे ग़ालिब हो न जाए केहलईन
मरते दम यारब मेरी इमदाद कर,
और जहन्नुम से मुझे आजाद कर
सब गुनाहों से तो कर दे दर गुज़र
और मुझ पे रहम ऐ रहमान कर

मराक़बा-ए-मौत

तू बराए बन्दगी है याद रख बहरे बहरे सरअफ़ गदंगी है याद रख
वरना फिर शरमिन्दगी है याद रख चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है याद रख

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

तूने मनसब भी कोई पाया तो क्या गजो सीमा ज़र भी हाथ आया तो क्या
क़स्रे आलीशान भी बन गया तो क्या दबदबा भी अपना दिखलाया तो क्या

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

क़ैसरो सिकन्दरो जम चल बसे ज़ाल और सोहराबो रूस्तम चल बसे
कैसे कैसे शेरो ज़ैग़म चल बसे सब दिखा कर अपना दमख़म चल बसे

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

कैसे कैसे घर उजाड़े मौत ने सर्व्क़द वुःबो में गाड़े मौत ने
खेल किं तनों के बिगाड़े मौत ने पहलवां क्या क्या पछाड़े मौत ने

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

कोई हाय बे ख़बर होने को है हाय यह ग़फ़लत सहर होने को है
बांध ले तोशा, सफ़ होने को है ख़त्म बस अब हर बशर होने को है

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

नफ़सो शैतां है ख़ंजर दर बगल वार होने को है ऐ ग़ाफ़िल संभल
आन जाए दीन-ओ-ओईमां में ख़लल बाज़ आ तू बाज़ ऐ बद अमल

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

यक लख़्त आ पहुंचे जो सर पे अजलफिर कहो तू और कहां दारूलअमल
जाएगा यह बेबहा मौक़ा निकल फिर न हाथ आएगी उम्रे बेदल

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

तुझ को ग़ाफ़िल फ़िक्रे उकबा कुछ नहीं खान धोका ऐशे, दुनिया कुछ नहीं
ज़िन्दगी है चन्द रोज़ा कुछ नहीं कुछ नहीं इस का भरोसा, कुछ नहीं

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

है यहां से तुझ को जाना एक दिन क़ब्र में होगा ठिकाना एक दिन
मुंह खुदा हो है दिखाना एक दिन अब न ग़फ़लत में गंवाना एक दिन

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

चन्द रोज़ा है यह दुनिया की बहार दिल लगा न इससे ग़ाफ़िल ख़बरदार
उम्र अपनी यूं न ग़फ़लत में गुज़ार होशियार ऐ ग़फ़लत भरे होशियार

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

है यह लुत्फ़ों ऐशे दुनिया चन्द रोज़दारे है यह दौरे जामो मीना चन्द रोज़
फ़ानी में है रहना चन्द रोज़ अब तो कर ले कारे उकबा चन्द रोज़

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

हो रही है उम्र मिस्ले बरफ़ कम चुपके चुपके रफ़ता रफ़ता दम बंद
सांस है इक रहर वे मुल्के अदम दफ़ अतन इक रोज़ जायेगा थम

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है जरूर
ज़िन्दगी एक दिन गुजरनी है ज़रूर क़ब्र में मैयत उतरनी है ज़रूर

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

आने वाली किस से टाली जायगी जान ठहरी जाने वाली, जायगी
रूह रग रग से निकाली जायगी तुझपे इक दिन ख़ाक डाली जायगी

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

बज़्मे आलम में फ़ना का दौर है जाये इबरत है मुक़ामे गौर है
है ग़ाफ़िल, यह तेरा क्या तौर है बस कोई दिन ज़िन्दगानी और है

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

सरकशी ज़ेरे फलक ज़ेबा नहीं देख जाना है तुझे ज़ेरे ज़मी
जबकि मरना है तुझे हक्कुल यक़ीं छोड़कर फ़िक्रई नो आकर फ़िक्र दी

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

ऐसी ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं
रह गुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं जाए ऐशो इशरतो मस्ती नहीं ।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

ऐश कर ग़ाफ़िल न तू आराम कर माल हासिल कर न नाम पैदा कर
यादे हक दुनिया में सुबहो शाम कर जिस लिये आया है तू वोह काम कर

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

मालो दुनिया का बढ़ाना है अबस ज़ायदअज हाजि तक माना है अबसे
दिल का दुनिया से लगना है अबस रहगुज़र को घर बनाना है अबस

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

ऐशो इशरत के लिये इन्सां नहीं याद रख तो बन्दा है मेहमां नहीं
ग़फ़लतो सुस्ती तुझे शायां नहीं बन्दगी कर तू अगर नादां नहीं

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

वह हसीनों की चटक, यह मटक देख कर रस्ते से हरगिज़ न भटक
साथ इन का छोड़, हाथ अपना झटक भूल कर भी पास उन के न फटक

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

हुस्ने ज़ाहिर पर अगर तू जायगा आलमें फ़ानी से धोका खायगा
यह ज़हरीला सांप है, डस जायगा रह न ग़ाफ़िल याद रख पछतायगा

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

दारे फ़ानी की सजावट पे न जा नेकियों से अपना असली घर बना
फिर वहां बस चैन की बन्सी बजा

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

तू है इस इबरत कदे में भी मगन गो है यह दारूल महन दारूल हुज़न
अक़्ल से ख़ारिज है यह तेरा चलन छोड़ ग़फ़लत आक़िबत अन्देश बन

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

यह तेरी गफ़लत है बे अक़ली बड़ी मुस्कराती है कज़ा सर पर खड़ी
मौत को पेशे नज़र रख हर घड़ी पेश आने को है यह मंज़िल कड़ी

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

मरता है तू दुनिया पे पर वाना वार गो तुझे जीना पड़े अंजाम कार
फिर यह दाना है कि हम हैं होशियार क्या यही है होशियारों का शआर

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

हैफ़ दुनिया का हुआ पर वना तू और उक़बा की करे परवा न तू
किस क़दर है अक़्ल से बेगाना तू इस पे बना है बड़ा फ़रज़ाना तू

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

दफ़न खुद लाखों किए ज़ेरे जमीं फिर भी मरने का नहीं हक्कुल यक़ीं
तुझ से बढ़कर भी कोई ग़ाफ़िल नहीं कुछ तो इबरत पकड़ नफ़से लईं

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

यूं न अपने आप को बेकार रख आख़िरत के वास्ते तैय्यार रख
ग़ैर हक़ से खुद को बेज़ार रख मौत का हर वक्त इन्तज़ार रख

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

तू समझ हरगिज़ न क़ातिल मौत को ज़िन्दगी का जान हासिल मौत को
रखते हैं महबूब आक़िल मौत का याद रख हर वक़्त ग़ाफ़िल मौत का

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

तर्क अब सारी फिज़ूलियात कर यूं न जाया अपनी औक़ात कर
रह न ग़ाफ़िल यादे हक़ दिन रात कर ज़िक्रो फ़िक्रे मौत तू दिन रात कर

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

कर न पीरी में तू ग़फ़लत अख़्तियार ज़िन्दगी का अब नहीं कुछ ऐतबार
हल्क़ पर है मौत के ख़ंजर की धार कर अब अपने आप को मुरदों में शुमार

एक दिन मरना है आख़िर मौत है
कर ले जो करना है आख़िर मौत है

और तेरी मजज़ूब हालत और सुन होश में आ, अब नहीं ग़फ़लत के दिप
अब तू बस मरने के दिन रात गिन कस कमर दरवेश है मंज़िल कठिन

इबरतनामा

है जलवा वोह बजा ज़ाते मुकद्दस किबरिया
जिस की बशर कह कर सना बे इन्हा जाते रह
आदम से अब तक जिस क़दर पैदा हुए पुख़्तो पिसर
जब कर चुके उम्रें बसर होकर फ़ना जाते रहे
आलम सभी मेहमो सरा ठहरा नहीं कोई इस जा
मानी क़ज़ा होकर रज़ा आदमो हव्वा जाते रहे
कर गौर मेरी बात पर कर नज़र अपनी ज़ात पर
कुछ दिन यहां मुलाकात कर सब अंबिया जाते रहे
हज़रत ख़लील अल्लाह नबी कामिल सख़ी आशिकरबी
कोशिश जो रहे हक़ में की काबा बना जाते रहे
थे जो पैबम्बरे ज़िक्रिया सर पे इश्क़ आरा धरा
मन्जूर कर अमरे रज़ा साबिर बुला जाते रहे
अब बात सुन लुकमान की साहिबे इल्मो इरफ़ान की
हिकमत न की अपनी जान की सब को दे शिफ़ा जाते रहे
नमरूद और फ़िर औन का दावा ख़ुदाई का हुआ
असली ख़ुदा बावक़ी ख़ुदा वोह बे हया जाते रहे
नौ शेर वाने आदिल हुआ हातिम सख़ी-ए-कामिल हुआ
रूस्तम बहादर दिल हुआ आई कज़ा जाते रहे
अब हाल सुन शद्दाद का बेदाद बे बुनियाद का
ज़ुलमत कदा जन्नत बना देखे सिवा जाते रहे

कारूं जमा कर मालोज़र आशिक हुआ दौलत ऊपर
हासिल किया दोज़ख़ सफ़र अन्दर सरा जाते रहे
ऐ यार कुछ सामान कर आजकल में तैय्यार है सफ़र
रहना तेरा हो किस कदर जब मुस्तफा जाते रहे
अहले सख़ा वाला गुहर सिद्दीके अकबर जी कदर
उस्माने गनी आदिल उमर शेरे ख़ुदा जाते रहे
आले नबी को याद कर हसने ने मोहसिन याद कर
असहाब सब ख़ैरूल बशर सल अल्लाह जाते रहे
ख़स्ता जिगर हज़रत हसन शब्बीर बे गोरो कफ़न
होकर शहीद खस्ता तन तैसे जफ़ा जाते रहे
लज़्ज़ते जिगर शाहेउमम साहिब शर्म शहिबे करम
जब हुक्म पहुंचा लाजरम ख़ैर उल निसा जाते रहे
जिनको मिला ऐसा हुस्न नाज़ुक बदन खुशगुल चमन
आख़िर पड़ा गुल में कफ़न मुखड़ा छिपा जाते रहे
रफ़्तार ख़ुश गुफ़्तार ख़ुश दस्तार ख़ुश रूख़सार ख़ुश
कर सैर दर बाज़ार ख़ुश मुंह को छिपा जाते रहे
आरामे दिल, राहते बदन गम की दवा प्यारे सजन
शीशीं ज़बां शीरीं सुखन सब सुन सुना जाते रहे
क्या अजब रोशन चन्द थे क्या दोस्त और दिलबन्द थे
लख़्ते ज़िगर फ़रजन्द थे छड बाप मां जाते रहे
ऐसे जो थे साहिबे शर्म घर से न जाते थे एक दम
जब हो चुका अरसा ख़तम वोह दर करबला जाते रहे

जिसने बनाये महलो घर तू रह गया, वोह हैं किधर
तू भी नहीं रहना मगर जब वोह बना जाते रहे
किए यार यारों से जुदा मरते थे तो देखे बिना
कर अलविदा वक़्ते फ़ना वोह दिल रूबा जाते रहे
जिन को मिला ऐसा हुस्न सीमीं, सफ़ा, तन, गुल चमन
गुल में कफ़न पा कर सजन चानन मिटा जाते रहे
क्या शान था शैतान था हाकिम ज़मीन आस्मान का
जब हुक्म से मुनाफिर हुआ सब शान बान जाते रहे
लानत पड़ी सरकार से हासिल मिला इन्कार से
दूरी मिली दरबार से फ़ख़रो हवा जाते रहे
कर याद हक्क़ो सुभानकी गर हिर्स है ईमान की
तरफ़ ख़ुदा रहमान की सब औलिया जाते रहे
क्या माल से फ़ायदा मिले जब ख़र्च से ख़ाली चले
फिर और बारिस हो खुले जब तुम दुनिया से जाते रहे
अफ़सोस है इस बात पर नहीं गोर का तुझ को फिकर
उठ जरा जल्दी होश कर दोस्त भ्रा जाते रहे
आना न होगा फिर कभी आए नहीं हज़रत नबी
कर पेशवा की पैरवी जो कुछ बता जाते रहे
अब देख अपनी ज़ात को मत भूल अस्ली बात को
फिर क्या करेगा रात को जब दिन दिहा जाते
दोस्त याराना छोड़कर चलते बने मुख मोड़ कर

घर को वीराना छोड़कर कई लाख हो जाते रहे
जब उम्र प्यारी हो ख़तम हासिल मिलेगा दर्दों ग़म
पढ़ना पड़ेगा वोह इलम जिस को भुला जाते रहे
फ़ुरसत कभी पाना नहीं गया वक़्त हाथ आना नहीं
अफसोस यह भी जाना नहीं सब खा कमा जाते रहे
सोने वक़्त शामो सहर कुछ होश कर कुछ होशकर
तुझसे पहले मेरे अन्दर हो ख़ाके पा जाते रहे
खाकर खुदा का मालो ज़र सिजदा करें क़बों ऊपर
सब ज़िन्दगी बरबाद कर वोह बे हया जाते रहे
जिस ने हुस्न ऐसा दिया उससे तू बे गाना हुआ
पूछेगा वोह हाज़िर बुला जब तुम भुला जाते रहे
अब छोड़ बद आदात को सुन ग़ौर से मेरी बात को
रोवेगा गुजरी बात को जब ज़हर खा जाते रहे
करता है जो तुझ पर करम उस से नहीं तुझ को शरम
फिर गज़ब है ऐसा जुरम जब बेवफ़ा जाते रहे
दिल से खुदा को प्यार कर जल्दी से इस्तग़फ़ार कर
कई लाख ग़फ़लत कर घर पाने सज़ा जाते रहे
फिरता है जिस से दूर तू जाना है उसके रूबरू
करनी पड़ेगी गुफ़्तगू जो कुछ लिखा जाते रहे
अब वक़्त खेती बोन का मौसम है पैदा होन का
फिर वक़्त आवे रोन का जब मरमरा जाते रहे

कोई दिन सुबह या शाम को लेकर तुम्हारे नाम को
रोदेंगे अपने काम को जब तुम सिधार जाते रहे
इक्को ही था इक्को चला इक्को क़बर में जा पड़ा
पावेगा सब उस की जज़ा जो कर कमा जाते रहे
जा पूछ क़ब्रिस्तान से कर के फ़िक्र दिलोजान से
कई लाख गुल बुस्तान से ख़ुशबू गंवा जाते रहे
हड्डियां जुदा गोश्त जुदा सब ख़ाक में जाकर मिला
मौजो उड़ा ले गई हवा फिर चुप चुपा जाते रहे
कई बाग़ के माली पड़े कई मुल्क के वाली पड़े
सब हाथ से ख़ाली पड़े क़ब्र में समा जाते रहे
मालूम नहीं, जाने ख़ुदा यह कौन था और क्या हुआ
कुछ दिन ज़माना अव्व था महफिल लगा, जाते रहे
सब नैन सोहने गलराए लब दान्त माटी रल गए
सब रूबरू ही चल गए देखो कुजा जाते रहे
सुन बात, कर हाज़िर अजल सब औलिया जाते रहे
ऊंचे महल अटारी बना लेते थे अम्बर की हवा
अब कुछ नहीं हसरत सिवा सब कुछ खड़ा, जाते रहे
तन में वोह ताकत ना रही बाला सियाही न रही
दिल की सियाही ना रही ऐशो मज़ा जाते रहे
अब अजल है नज़दीक तर करती निगाह तेरे पर
रहना तेरा है किस क़दर बे इन्तहा जाते रहे

आ गया जब मौत का पैग़ाम है फिर तुझे क्या आराम है
फिर ज़िन्दगी किस काम है जब मुस्तफ़ा जाते रहे
कुछ दिन, तुम्हारा है हुकुम आजिज़ होकर मरना है तुम
लाखों के हो गए नाम गुम जो कर जफ़ा जाते रहे
जब हो ज़ईफ़ी तुझ ऊपर तुझ को हटा दे दूर कर
जल्दी न आ पूछीं ख़बर आजिज़ बना जाते रहे
तरफ़ से अव्वल हो ग़रीब तरफ़ ख़ुदाए क़ादिर मुजीब
वोह अज्र हो सब को नसीब जो कर जाते रहे
खलकते ख़ुदा को मत सता उस अद्ल से बचना कुजा
गए लाख ज़ालिम वा जफ़ा ख़लक़्त सता जाते रहे
हर वद अमल बदशक्ल कर असवार हो ज़ालिम ऊपर
दोज़ख़ ले जावें ख़्वार कर ख़बारी उठा जाते रहे
कब तक क़लम लेकर लिखूं किस को लिखूं किस को पढूं
किस किस की हालत मैं कहूं बेइन्तहा जाते रहे
लानत करे आस्मानो जमीं जो दिल ख़ुदा दोस्त नहीं
जन्नत न पावे वोह कहीं दोज़ख़ तपा जाते रहे
जिस को नहीं प्यारा नबी बेशक है वोह दुशमने रबी
दौलत जो प्यारी उम्र की ज़ाया लुटा जाते रहे
फ़ाजिर हो या आबिद वली सब का गुज़र एक ही गली
जाना है सब ख़ल्कत चली सब अंबिया जाते रहे
जिस ने तुझ को पैदा किया सर उसी के दर पर झुका

मुनकिर ऊपर कहरे खुदा फ़ितवा जगा जाते रहे
अब कर शर्म अब कर शर्म क्यों न करे दिल को नर्म
बेफ़िक्र है तू दम बदम ख़ौफ़े खुदा जाते रहे
यारब है 'आजिज़' की दुआ दोस्त मिला बख़्शो ख़ता
आशिक जो है, हो कर फ़िदा कलमा सुना जाते रहे
'सूफी' तुझे क्यों है यह ग़म रखता है अपनी चश्म नम
हामी है जब शाहे उमम गो ज़ाहिरा आते जाते रहे

नसीहतुल ग़ाफ़िलीन दर नज़्मे पंजाबी बयादगार वफ़ाते हसरत आयात वालिदैन व भाई रहीमुल्लाह नूरूल्लाह मरक़दहुम

खोल अखवा ख़्वाब तो ग़ाफ़िला गया दूर तेरा उठ क़ाफ़िला
मुड़ कीता फ़िक्र न तुरन दा तेरे साथी साथ लदा गए
एहं दुनिया खाम बाज़ार है सब कूड़ा एहठाठ पसार है
लद गए बनंजारे दूर दे एस नगरी फेरा पा गए
लैनूं मौत ना विच खयाल वे रहन पिच्छे दौलतां मात वे
गए ख़ाली इस जहान तों जेहड़े लख करोड़ कमा गए
नित मौत तेरे सिर चिपकदी पई हर दम क़ब्र उडीकदी
तू फंस गयो विच धन्दे आं कम्म तैनूं मार मुका गए
सुके बाग़ जवानी दा जावसी जद हवा ख़िज़ा दी आवसी
उड जीसी बुल्बुल बोल के जद शाख़ उत्ते फुल कुम्हलागए
पये होकर नित आंवदे बन्ह बिस्तर अगले जावदे
एह दुनिया ख़्वाब सरा है जीवें राही रात लंघा गए
ओह दोस्त महरम हाल दे जो आए तेरे नाल वे

हुण नजर न ओह मूल आउंदे ओह साथों हो जुदा गए
इक वेला ओह भी आवनां चल दुनिया तौं तुसी जावनां
ज्यों यार प्यारे दिलां दे विच मिट्टी दे मुंह छिपा गए
विच क़बरा दे लेटे पये जो कदे सन साडे जेहे जो
असाहोना उन्हां बाग है जीवें ओ अज नाम मिटा गए
जिन्हां महल बुलन्द उसारे छड एथ्थे आप सिधारे
हुण जा वसे विच जंगलां सब दावे छड छडा गए
तेरे वांगों लख्खां आय के गए ज़ोर तुरान दिखाय के
चढ़ हिर्सों हवा दे कोट ते उच्चे वाजे आन वजा गए

नमरूद शद्दाद सी शाह जो फ़िरऔन जैसे बुमराह जो
फड़ कीते मौत फ़ना ओह जो खुद खुदा कहला गए
कई बांग सिकन्दर शाह के आए मालिके मुल्कों सिपाहवे
छड गए खज़ाने माल वे हथ ख़ाली ओह अन्त दिखला गए
कदी खुसरौ नौशेखां शाह सी कदी अकबर शाहजहानसी
अज राज करीन्दे होर नी ओह ख़बर नहीं किस जा गए
सुलेमान नबी सुल्तान वे देख परियां बिच फ़रमान वे
गए तख़्त उड़ा हवा विच ओहवी आके बांग हवा गए
अज मोल न कोई ख़बर है किस जगह ओ नहावी क़ब्र है
जो वारिस आए तख़्त दे गढ़ कोट बुलन्द बना गए
नित जारी पत्तन मौत दा संग लद्दी जान्दा होत दा
सभ चलो चल बुकारदे पुट डेरे राही वेहा गए
तेरे वांगो सोहने सांवले आहे अन्दर जोबन बावले
अज नाजुक बदन ओ नहां दे विच लहद दे कीड़े खा गए
"सूफी" फ़ानी जग जहाव है कुल मुन अलैहा फ़ान है
तै नूं समझ ज़रा नहीं आ उन्दी वेख कित्थे बाप भ्रा गए
तेरे भाई ते बाप पिआरे दुनिया फ़ानी नूं छड सिधारे
लै गए खर जहान तौं जेहड़े चंगे अमल कमा गए
इलाही बख़्शी मां पिओ भाइयो उन्हां जाब रिहाइयो पाइयां

करीं रहम उन्हां ते मालका हुण पास तेरे ओ आ गए
बिच गोर अन्धैरा क़हर दा रंग इक्को रात दो पहर दा
पई करे मनादी मौत एह छड नर्म व छाया सूत देह
चल देख शहज़ादे गुलरूखा छड सेजा खाक समा गए
जेहड़े नाल फुलां सन तुल्दे अज क़बर विच पये रूल्दे
होए ख़ाक सरहाने उन्हां दे जो मख़मल तकिए लागए
कई रूस्तम जैसे जवान सी जिन्हा ऊपर जोर गुमान सी
आई कम्म न कुछ बहादरी सिर मौत अग्गे झुका गए
सब मलूम तैनूं हाल है एह दुनिया ख़्वाबो खयाल है
पया दौड़े पिच्छे हिर्स दे क्यों तैनूं मार सौदा गए
खेत, मकान ते बाग़ बहारां छड जाएगा सुन्दर नारां
बाह जो अमलां कोई कम न आवसी तैनूं क़बरी जह दफ़ना गए
जो तेरे अंग सन प्यारे साथी ओह दुनिया दे सारे
मौत पिच्छे कोई तेरा यार नई अपने पराये सब भुल भुला गए
कर याद वेहड़ा हश्र दा जित्थे लेखा हर एक बश्र दा
हो सी आतिश तेज़ मैदान दा सुन ख़बर नबी घबरा गए
अजकर ले रब्ब नूं याद तूं कर उम्र ना एह बरबाद तू
हथ मलमल के फिर पछतावी जद वेले वक्त वहा गए
जो ना फ़रमान हुज़ूर दे ओ जा सन जरा नूं छोड के
रज वेला है अमल कमान दा सद्द होसी भुखे जान दा
फेर हो सी कुझ ना जतन जद तन विच्चो साल सिधा गए
एस दुनिया विच बजार दे अज कर ले कुझ व्यपार वे
लए तोहफ़े ओ सौदा गरां तेरे साथी नफ़ा उठा गए
एह दुनिया खेती जान तूं उठ मौसम है, वक्त पिछान तूं
जेहा बीजेगा तेहा वड सी एह पाक नबी फ़रमा गए
जे नेक कमाइयों कर गए ओह दोवीं जहानों तर गए
है जन्नत जगह उन्हों दी जे कर के राज़ी ख़ुदा गए
उठ जाग तूं इस्माईल वे तेरा रह गया वक़्त क़लील वे

लंघ गयी उम्र अज़ीज तेरी
हुन वक़्त अख़ीरी आ गए

ग़फ़ुलत व लापरवाई नज़्म दर पंजाबी

ऐ दिल ग़ाफ़िल, सुस्त, कमीने ग़फलत छोड़ कदा ही
हरदम मौत तेरे सिर उत्ते तैं कुझ फिक्र क्यों नाहीं
मौतों पहले कर ले जल्दी जो कुझ अमल कमाना
मौतों आई तो फिर पछता सी जद कीता क़बर ठिकाना
सेहत अन्दर कर ले तोशा, मत बीमारी आव
ते ज्युन्दिया खर्च क़बर दा कर ले, मतवेला जावे
दुआ मरनदी मोल न कर तूं, जीवन नेमत भारी
कर ले अमल, कमा कुझ नेकी, न आवन पूंजी बारी
इक दिन क़बरी कर दफ़न पिआरे आप घरी मुड़ आवन
अपने कम्मां कारण रोवन, न तैनूं याद लिया वन
दुनिया विच्च क़बर क़यामत हर वक्त सुहावे
कर ओह अमल जो विच क़बर दे नाल बन्देआं दे जावे
गैरां हुब्ब दिलों कर बाहर, ऐस विच नफ़ा न जानीं
ते रब्ब दे प्यारेयां नाल मोहब्बत है तेरे कम आनी
रंग महल मनावन अहमक़ चारचन माल रब्बाना
मौत आई सब छोड़ इलाक़ा क़बरी करन ठिकाना
जद तक जान बदन विच तेरी, कर तोबा वक्त एहोई
मौत आई तो फिर पछता सब वेला वक्त गयोई
आदम थीं ता उसदम ताईं जिन्नी खलक़त होई
काटी जो कन्दन सब लंघे पासे गया न कोई
ज़न फ़रजन्द, ख़्वेश, कबीला, दोस्त, भैनां भाई
वेखन खलोते, रोवन खोवन, चले राह न काई
और आपे अपने फायदेआं नू रोवन यार पिआरे
उस दा दर्द किसे न जाना, रोवन लोकी सारे
अल्लाह बाहज न बेली कोई, उठ इकल्ला चलेया
हक्कू आया हक्कू जासी, राह विच ग़फ़लत वलया
नबी केहा न मौत भुलाइयो न एह तुसां भुलावे
इक दिन ख़ाक तुसां सर पवसी क्यों कर समझ न आवे

फ़जर उमीदों शाम न करनी, शामों फ़जर न यारा
हमदम मौत तेरे सर उत्ते मारे कूच नगारा
दोस्त, जानी, दिलबर, लमी साथ तेरे जो आस
शौकत शान ते ऐश बहारां क्यों कर छोड़ सिधाए
हुण विच क़बर गोश्त पोस्त हड्डी कीड़ियां खादा
हड्डियां मिट्टी खादियां हसन ज्यूंकर हुकम खुदा
सोहने भुख नूरानी उत्ते दर्द नबे दिये कलियां
रूख़्सार ते बसां मुअत्तर नाजां अन्दर पलियां
हुण कुझ सर न वापस आव न कोई हाल सुनावे
हाय अफ़्सोस एस दुनियां उत्ते कवीं गरूर विखावे

हर दम मौत खड़ी सरहाने दम दम सद्द पुकारे
कर ले अमल ऐ ग़ाफ़िल जल्दी, फंसियों तू किस कारे
नबी के हया नित याद करो उस मज़े गंबाबन हारी
पल विच वारिस नूं बे वारिस कर दिखावन हारी
सकेयां यार भ्रावां कोलों जुदा करावन हारी
पल विच राज हकूमत शाही तोड़ दिखावन हारी
मैं हो मौत अचानक तैनूं जुदा करावन वाली
वसदेयां हंस देयां घरां विच्चों तोड़े जावन वाली
मैं ओह मौत विछोड़न वाली मां पेओ तीवी फ़रज़न्दां
मैं ओह मौत मुहिब्बा कोलों जुदा करो दिलबन्दा
मैं ओह मौत फ़रज़न्दा तीवी मांवां जुदा करावां
मैं ओह मौ विछोड़ा पल विच सकेयां भैन भ्रावां
मैं ओह मोत यूसुफ़ जेहे जिसने पूर लंघाए
मैं ओह मौत सिद्छीक वलियां जिसने हिज्र दिखाए
मैं ओह मौत ज़ोराकर डांडे जिस कर के ज़ेर लियांदे
फ़िर औन, शद्दाद, नमरूद जेहे जोआए रब्ब कहान्दे
तू आंखीं मैं हर दम रहसां दुनिया दे बाज़ारे
मैं आखं मैं जुदा कर लियां अन्दर इक पलकारे
तू अख चोरावीं मकर बनावीं मौत कुएं विच जावां

आख़िर वक्त पता लग जा सी पेश तेरे जद आवां
ताबेदारी रब नबी दीजे साबित न होई
समझ लवीं फेर ढाढी हो सी हालत बे आबरूई
कर ले तोबा वक़्त वेहान्दा सिर उप्पर आई
फिर पछताया न बन सी जद एह घड़ी आई
नया ऐतबार तेरा ओ भाई मलिक उल मौत ग्रामी
किस वेले ओह सिर पर आ के खोलिए ऐश तमामी
कल विच आख़िर दे घर जा सू जित्थे अमल न कोई
सिर्फ़ हिसाबा कारन कीता ओस नूं पाक इलाही
जिस न क़बर यकीं हो जाना जित्थे यार न कोई
हस्से खुशियां अन्दर फिरदा क्यों इस क़बर भुलाई
कुल मुन अलेहा फ़ान एह मौला फ़रमावे
है अफसोस ऐ बन्दे तैनूं अक़ल ख़याल न आवे
सौ बरसां जिन्दगानी होवें मुड़ गोर ठिकाना
जोर जवानी छोड़ तमामी आखिर नू मर जाना
एह सराय मुसाफिर वाली थोड़े रोज़ बसेरा
तू जिस घर दा मालिक बनया ने तेरा नू मेरा
क़बर अन्दर हुण जावन वाली कर समान तयारी
नई तां इसे गफ़्लत अन्दर तेरे आ जावेगी वारी
मौतों पहला जो कुझ करना कर ले यार पिआरे
मौत आई तां इस दुनिया तौं झाड़ जावी लड़ चारे
मौतों कोई न बचने वाली सूरत तेरी मेरी
न कर बनेआ मेरी मेरी अन्त खाक दी ढेरी
इक दिन तैनूं मैनूं जाना होगा पिआरे
हो सी अन्दर क़बर गुज़ार छड़ जा सी महल चौगारे
दुनिया विच मगरूर न होवी याद करो मर जान
तेरा भी इस ख़ाक दे अन्दर हो सी अन्त ठिकाना
इस्माइला फड़ नेक वसीला छड़ जाना देस रंगीला
चंगे अमल कमा विच दुनिया कम आसी न ख़ेश क़बीला
गुजरी उम्र जवानी सारी हुण अग्गे दा कर हीला

कित्थे बाप भाई तेर अज वेख तूं इस्माइला
नबी, वली होर आलिम फ़ाज़िल गुज़रे चंग चंगेरे
शाह फ़कीर होर बुरे भेड़े कीते कबरी डेर
एह दिन अपना सोच दिला कर इताअते ज़िक्रे इलाही
अब नबी नूं राज़ी कर ले, छोड़ फसाद मना ही
जो कोई बन्दा दुनिया दे विच मौत भुलावे नाहीं
रोज़े क़यामत नाल नबी दे पावे जन्नत जाहीं
आ जा वक्त वगदा जान्दा, सुन नसीहत मेरी
एक दिन ख़ाक अन्दर मिल जासी, एहो शान जो तेरी
कई हजारां कर ऐश बहारा, वस्ते विच मज़ारा
नाल जिन्हां दे ज़मीं जाना, न तूं जाने सारा
नेक आमाल करीं विच दुनिया, ना कर हिर्स व डेरी
पेश अदालत तित्तर आसी सब कमाई तेरी
अखीं वेखें, कन्ना सुनें, हत्थां दफन करें तूं
कद कमां तो बाज़ न आवे, न मरना याद करें तूं
दुनिया धन्दे कारन फन्दे खतम न हरगिज़ होए
छोड़ पसारे मौत निमाई क़बरा अन्दर ढोए
इस्माईला ! दीने मोहम्मदी दुनिया दीन संवारे
बाहजूं दीन मोहम्मदी धक्के हो सन हश्र ख़सारे
बेहद बेहद हम्दे खुदा तो जिस एहसान कमाया
आजिज़ और गुनहगारे कोलों जारी फ़ैज़ कराया
शुक्र खुदा दा अदा न होवे जिस एह राह विखाया
अव्वल आख़िर हम्द उसे नूं जिस एह फ़ज़ल कमाया
लख कर वड़ सलवात सलामां सखर सन दिलदारां
आलेसहाबां मोमिन यारां, दोस्त नेकोकारां
दुनिया फ़ानी, अन्त विरानी, एह बाद निशानी प्यारे
फ़ज़लों नज़र होवे, मन्जूरी साहब दरबारे

ख़त्म शुद